DLIS – 03

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

पुस्तकालय सूचीकरण — प्रायोगिक

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में डिप्लोमा कार्यक्रम
(Diploma in Library and Information Science)

DLIS – 03

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

पुस्तकालय सूचीकरण — प्रायोगिक

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में डिप्लोमा कार्यक्रम
(Diploma in Library and Information Science)

DLIS – 03

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

पुस्तकालय सूचीकरण – प्रायोगिक
(Library Cataloguing – Practical)

:: विषय सूची ::

इकाई संख्या	इकाई का नाम	पृष्ठ संख्या
इकाई – 1	सी सी सी की वर्गीकृत सूची की मुख्य प्रविष्टि एवं सहायक प्रविष्टियों की संरचना	1 – 19
इकाई – 2	एकल व्यक्तिगत लेखकों द्वारा रचित ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण	20 – 45
इकाई – 3	व्यक्तिगत सहलेखक: दो सहलेखकों द्वारा रचित ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण	46 – 65
इकाई – 4	व्यक्तिगत सहलेखक: तीन या तीन से अधिक सहलेखकों द्वारा रचित ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण	66 – 79
इकाई – 5	सहकारक शीर्षक: सहकारक के अन्तर्गत प्रविष्ट होने वाले ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण	80 – 90
इकाई – 6	कृत्रिम नामधारी लेखक	91 – 110
इकाई – 7	समष्टि लेखक: शासन एवं इसका प्रथम श्रेणी का अंग	111 – 130
इकाई – 8	समष्टि लेखक: संस्था एवं इसका प्रथम श्रेणी का अंग	131 – 151
इकाई – 9	समष्टि लेखक: सम्मेलन	152 – 169
इकाई – 10	आख्यान्तर्गत शीर्षक	170 – 187

पाठ्यक्रम अभिकल्पन समिति

प्रो. वी. आर. मेहता (अध्यक्ष)
कुलपति
कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा (राज.)

श्री वी.बी. नंदा, पुस्तकालयाध्यक्ष
जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

डॉ. सी.डी. शर्मा, निदेशक
राजस्थान विश्वविद्यालय पुस्तकालय, जयपुर

प्रो. एस.एस. अग्रवाल, विभागाध्यक्ष
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान अध्ययनशाला
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

श्री सी.एल. शर्मा, संयोजक
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान पाठ्यक्रम
कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा (राज.)

पाठ्यक्रम निर्माण दल

प्रो. एस.एस. अग्रवाल, विभागाध्यक्ष
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान अध्ययनशाला
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

डॉ. एन.के. शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

श्री पी.के. गुप्ता, उप-पुस्तकालयाध्यक्ष
राजस्थान विश्वविद्यालय पुस्तकालय
जयपुर

श्री एस.पी. सूद, असिस्टेंट प्रोफेसर
पुस्तकालय विज्ञान एवं प्रलेखन विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

संपादक

प्रो. एस.एस. अग्रवाल, विभागाध्यक्ष
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान अध्ययनशाला
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

श्री सी. एल. शर्मा, संयोजक
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान पाठ्यक्रम
कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा (राज.)

पाठ्यक्रम संशोधन समिति

प्रो. (डॉ.) अशोक शर्मा (अध्यक्ष)
कुलपति
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

प्रो. एच.बी. नंदवाना, निदेशक
सतत् शिक्षा विद्यापीठ
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा (राज.)

प्रो. दिनेश कुमार गुप्ता, विषय संयोजक
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा (राज.)

डॉ. एस.पी. सूद, सह-आचार्य (सेवानिवृत)
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

डॉ. पी.के गुप्ता, निदेशक (सेवानिवृत)
केन्द्रीय पुस्तकालय
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

संशोधन एवं संपादन

संशोधन

प्रो. दिनेश कुमार गुप्ता
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा (राज.)

डॉ. एस.पी. सूद , सह-आचार्य (सेवानिवृत)
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

संपादन

डॉ. एस.पी. सूद, सह-आचार्य (सेवानिवृत)
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

अकादमिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

प्रो.(डॉ.) अशोक शर्मा
कुलपति
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

डॉ. अरविन्द पारीक
निदेशक
पाठ्य सामग्री उत्पादन एवं वितरण विभाग
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

प्रो. (डॉ.) लीलाराम गुर्जर
निदेशक
अकादमिक
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

पाठ्यक्रम उत्पादन

डॉ. अरविन्द पारीक
निदेशक
पाठ्य सामग्री उत्पादन एवं वितरण विभाग
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

उत्पादन, जुलाई, 2017 (संशोधित संस्करण)

इस सामग्री के किसी भी अंश को व.म.खु.वि., कोटा की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में अथवा मिमियोग्राफी (चक्रमुद्रण) द्वारा या अन्यत्र पुन: प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

व.म.खु.वि., कोटा के लिये कुलसचिव व.म.खु.वि., कोटा (राज.) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

पाठ्यक्रम परिचय

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान डिप्लोमा कार्यक्रम का तृतीय पाठ्यक्रम **"पुस्तकालय सूचीकरण - प्रायोगिक"** है। इस पाठ्यक्रम में कुल 10 इकाइयाँ है, जिनका परिचय निम्न प्रकार है:

इकाई – 1 सी सी सी की वर्गीकृत सूची की मुख्य प्रविष्टि एवं सहायक प्रविष्टियों की संरचना: इस इकाई में सी सी सी के उपयोग द्वारा सूची पत्रक की बनावट के साथ मुख्य प्रविष्टि एवं सहायक प्रविष्टि की संरचना से परिचय करवाया गया है। वर्गीकृत सूची, मुख्य प्रविष्टि एवं सहायक प्रविष्टि की परिभाषाओं तथा सतत पत्रक के नियमों की जानकारी दी गयी है।

इकाई – 2 एकल व्यक्तिगत लेखकों द्वारा रचित ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण: इस इकाई में लेखक एवं व्यक्तिगत लेखक को परिभाषित किया गया है। एकल व्यक्तिगत लेखक से सम्बन्धित सूचीकरण के शीर्षक के वरण एवं उपकल्पन के नियमों से अवगत करवाया गया है तथा यूरोपीय कुलनाम धारी व्यक्तिगत लेखक, भारतीय कुलनामधारी लेखक, भारतीय बिना कुलनामधारी लेखक एवं योजकीय कुलनामधारी लेखक द्वारा रचित ग्रन्थों के क्रियात्मक सूचीकरण से परिचित करवाया गया है।

इकाई – 3 व्यक्तिगत सहलेखक: दो सहलेखकों द्वारा रचित ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण: इस इकाई में दो व्यक्तिगत सहलेखकों द्वारा रचित ग्रन्थों के सूचीकरण के नियमों से अवगत करवाया गया है तथा ऐसे ग्रन्थों की क्रियात्मक सूचीकरण प्रक्रिया को समझाया गया है।

इकाई – 4 व्यक्तिगत सहलेखक: तीन या तीन से अधिक सहलेखकों द्वारा रचित ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण: इस इकाई में तीन व तीन से अधिक सहलेखकों के शीर्षक उपकल्पन के नियमों के बारे में जानकारी दी गयी है तथा तीन या अधिक सहलेखकों द्वारा रचित ग्रन्थों के क्रियात्मक सूचीकरण प्रक्रिया से अवगत करवाया गया है।

इकाई – 5 सहकारक शीर्षक: सहकारक के अन्तर्गत प्रविष्ट होने वाले ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण: इस इकाई में सहकारक की परिभाषा एवं सहकारक के अन्तर्गत प्रविष्ट होने वाली परिस्थितियों से परिचय करवाया गया है। सहकारक के अन्तर्गत प्रविष्ट होने वाली परिस्थितियों की मुख्य समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है तथा ऐसे ग्रन्थों के क्रियात्मक सूचीकरण प्रक्रिया की जानकारी दी गयी है।

इकाई – 6 कृत्रिम नामधारी लेखक: इस इकाई में कृत्रिम नामधारी लेखक की परिभाषा एवं कृत्रिम नामधारी नामधारी लेखक के उपकल्पन के नियमों की जानकारी दी गयी है। दो व्यक्तियों द्वारा रखे गये एक कृत्रिम नाम के ग्रन्थों के सूचीकरण के नियमों पर प्रकाश डाला गया है तथा कृत्रिम नामधारी वास्तविक नाम नामान्तर प्रविष्टि की संरचना को समझाया गया है।

इकाई – 7 समष्टि लेखक: शासन एवं इसका प्रथम श्रेणी का अंग: इस इकाई में समष्टि निकाय, समष्टि लेखक एवं शासन को परिभाषित किया गया है तथा शासन के प्रथम श्रेणी के अंग व अस्थाई अंग के सूचीकरण के नियमों की चर्चा कर प्रायोगिक सूचीकरण की प्रक्रिया की जानकारी दी गई है।

इकाई – 8 समष्टि लेखक: संस्था एवं इसका प्रथम श्रेणी का अंग: इस इकाई में संस्था का परिचय एवं परिभाषित किया गया है। शीर्षक वरण के नियम एवं शीर्षक उपकल्पन के नियमों पर प्रकाश डाला गया है तथा संस्था एवं उसके प्रथम श्रेणी के अंग को सूचीकृत करने के नियमों का वर्णन कर प्रायोगिक सूचीकरण की प्रक्रिया की जानकारी दी गई है।

इकाई – 9 समष्टि लेखक: सम्मेलन: इस इकाई में सम्मेलन को परिभाषित करने के साथ सम्मेलन को सूचीकृत करने के नियमों की व्याख्या कर प्रायोगिक सूचीकरण की प्रक्रिया की जानकारी दी गई है।

इकाई – 10 आख्यान्तर्गत शीर्षक: इस इकाई में आख्यान्तर्गत शीर्षक के अन्तर्गत प्रविष्टि निर्मित करने की परिस्थितियों से अवगत करवाया गया है। आख्यान्तर्गत शीर्षक निर्माण के नियमों की जानकारी दी गयी है तथा आख्यान्तर्गत शीर्षक के मुखपृष्ठों के क्रियात्मक सूचीकरण से अवगत करवाया गया है।

इकाई 1

सी सी सी की वर्गीकृत सूची की मुख्य प्रविष्टि एवं सहायक प्रविष्टियों की संरचना (Structure of Main and Added Entries of Classified Catalogue of CCC)

उद्देश्य (Objectives)

1. सूची पत्रक की बनावट एवं ग्रन्थालय हस्तलिपि से परिचित कराना।
2. वर्गीकृत सूची, मुख्य प्रविष्टि एवं सहायक प्रविष्टि की परिभाषाओं की जानकारी देना।
3. मुख्य प्रविष्टि एवं सहायक प्रविष्टि की संरचना से परिचित कराना।
4. संतत पत्रक के नियम की जानकारी देना।

संरचना (Structure)

1. सूची पत्रक एवं उसकी बनावट
   - 1.1 सूची पत्रक
   - 1.2 सूची पत्रक की बनावट
2. ग्रन्थालय हस्तलिपि
3. वर्गीकृत सूची की परिभाषा
4. वर्गीकृत सूची की प्रविष्टियों के प्रकार
5. मुख्य प्रविष्टि
   - 5.1 परिभाषा
   - 5.2 संरचना

6 सहायक प्रविष्टियां
   - 6.1 परिभाषा
   - 6.2 प्रकार

7. सहायक प्रविष्टियों की संरचना
   - 7.1 अन्तर्विषयी प्रविष्टि
   - 7.2 वर्ग निर्देशी प्रविष्टि
   - 7.3 ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
   - 7.4 नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि

8. संतत पत्रक

9. वस्तुनिष्ठ प्रश्न

10. अभ्यासार्थ प्रश्न

11. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची

1. सूची पत्रक एवं उसकी बनावट (Catalogue Card and its Structure)

1.1 सूची पत्रक (Catalogue Card)

आधुनिक ग्रन्थालयों में सामान्यतय सूची हेतु सूची पत्रकों का प्रयोग किया जाता है। पत्रक का मानकीकृत आकार 5 x 3 इंच अथवा 12.5 x 7.5 सेन्टीमीटर होता है। यद्यपि विविध मोटाई के पत्रक उपलब्ध होते हैं, परन्तु सूची के स्थायित्व को ध्यान में रखते हुए उच्च स्तरीय मध्यम वजन के पत्रकों का प्रयोग उचित होता है। वैसे तो आजकल लाइनदार (Ruled), अर्ध लाइनदार (Semi-ruled) तथा बिना लाइन के (Un-ruled) पत्रक मिलते हैं, परन्तु यदि प्रविष्टियों का निर्माण हस्तलिपि में किया जाना हो तो लाइनदार पत्रक अधिक सुरुचिपूर्ण और उपयोगी होंगे। यदि प्रविष्टियां टंकित की जानी हों, तो अर्ध लाइनदार पत्रकों जिनमें मात्र अग्र रेखा तथा प्रथम व द्वितीय शीर्ष ही दिये रहते हैं, का प्रयोग उपयोगी होता है, क्योंकि लाइनदार पत्रकों पर टंकण में कठिनाई होती हैं। किसी एकाकी ग्रन्थालय द्वारा पत्रकों को मुद्रित करवाना आर्थिक रूप से उपयोगी नहीं होता, तथापि सहकारी या केन्द्रीकृत सूचीकरण संस्थाओं द्वारा पत्रक मुद्रित करवाना कम खर्चीला होता है। उनके लिए बिना लाइनदार पत्रक उपयोगी साबित होते हैं। हस्तलिपि में पत्रक तैयार किये जाने की अवस्था में ग्रन्थालय हस्तलिपि (Library hand) में प्रविष्टियां तैयार की जानी चाहियें। पत्रकों पर प्रविष्टियों के निर्माण के समय बायें तथा दायें तरफ एक अक्षर की जगह छोड़ी जानी चाहिए ताकि पत्रकों के किनारों के घिसने की अवस्था में उन पर लिखी प्रविष्टियों को पढ़ने में कोई कठिनाई न आये।

सामान्यतया एक पत्रक पर मात्र एक ही प्रविष्टि बनाई जाती है ताकि पत्रक के केबिनेट में व्यवस्थापन में कोई कठिनाई न आये। फिर भी कभी-कभी कुछ प्रविष्टियों को एक ही पत्रक पर समेकन (Consolidation) की अवस्था में एक पत्रक पर एक से अधिक प्रविष्टियां तैयार की जा सकती हैं। उदाहरणार्थ, सी सी सी नियमांक MK2311 के अनुसार एक ग्रन्थमाला के अन्तर्गत प्रकाशित कई ग्रन्थों की ग्रन्थमाला प्रविष्टियों को एक ही पत्रक पर समेकित करने का प्रावधान है।

1.2 सूची पत्रक की बनावट (Structure of Catalogue Card)

सूची पत्रक की बनावट निम्नलिखित प्रकार है:-

1. अग्र रेखा (Leading Line) : यह पत्रक पर प्रथम आड़ी रेखा होती है तथा लाल स्याही से अंकित होती है।

2. प्रथम शीर्ष (First Vertical) :पत्रक पर प्रथम खड़ी रेखा जो कि पार्श्व (Margin) के प्रारम्भ से 8 अक्षरों की दूरी पर दी रहती है, को प्रथम शीर्ष कहते हैं। पत्रक पर यह लाल स्याही से अंकित होता हैं।

3. द्वितीय शीर्ष (Second Vertical) : प्रथम खड़ी रेखा के बाद 4 अक्षरों की दूरी पर द्वितीय खड़ी रेखा होती है, उसे द्वितीय शीर्ष कहा जाता है। पत्रक पर यह लाल स्याही से अंकित होता है।

4. छिद्र (Hole) : पत्रक के नीचे की ओर से आधा सेन्टीमीटर ऊपर मध्य भाग में एक छिद्र होता हैं। जब पत्रकों को केबिनेट की दराजों में रखा जाता है, तो इस छिद्र में से एक छड़ निकलती है, जिससे पत्रक दराज में सुरक्षित रहते हैं। इस छेद के नीचे कुछ भी मुद्रित, अंकित अथवा लिखा नहीं जाना चाहिए, अन्यथा सूची के उपयोगकर्ताओं को उसे पढ़ने में कठिनाई होगी।

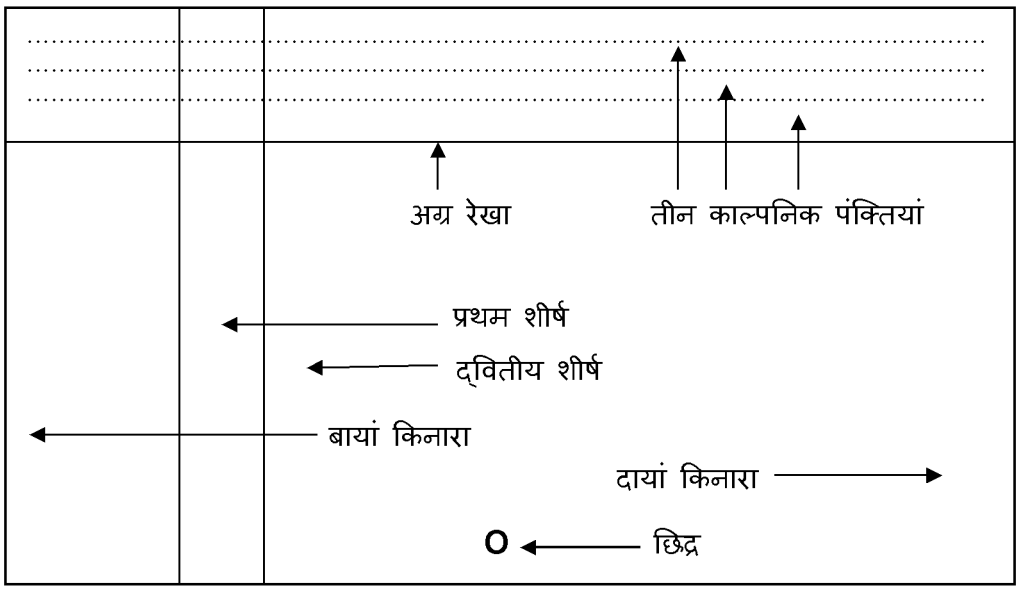

2. ग्रन्थालय हस्तलिपि (Library Hand)

यदि ग्रन्थालय में टंकण मशीन उपलब्ध हो तो सूची पत्रक टंकित किये जाने चाहिये। टंकित या मुद्रित सूची पत्रक देखने में साफ व अच्छे लगते हैं तथा उनके प्रयोग में पाठकों को हस्तलिपि पढ़ने में होने वाली कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ता। परन्तु ग्रन्थालय में टंकण मशीन सुलभ न होने की अवस्था में सूची पत्रक हस्तलिपि में ही तैयार करने पड़ते हैं।

यदि सूचीकार की हस्तलिपि साफ व सुस्पष्ट है, तो पाठकों को सूची पत्रकों के प्रयोग में कोई कठिनाई नहीं आयेगी। परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि सभी सूचीकारों की हस्तलिपि सुस्पष्ट हो। इस बात को ध्यान में रखते हुए ग्रन्थालय विज्ञान प्रशिक्षण काल में ही विद्यार्थियों को ग्रन्थालय हस्तलिपि का प्रशिक्षण दिया जाता है तथा प्रत्येक ग्रन्थालयी को इसका समुचित अभ्यास करना चाहिये। अस्पष्ट हस्तलिपि वाला ग्रन्थालयी भी यदि ग्रन्थालय हस्तलिपि में सूची तैयार करे तो वह सामान्य हस्तलिपि की अपेक्षा तेजी से लिख सकता है।

रंगनाथन ने अपने ग्रन्थ सी सी सी के नियमांक ED23 में ग्रन्थालय हस्तलिपि को निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किया है:

"प्रविष्टि में लिखित सभी शब्द एवं संख्याऐं स्पष्ट, सीधे व साफ रूप में हों तथा प्रत्येक अक्षर व अंक दूसरे अक्षर व अंक से अलग हो।"

रंगनाथन की सूची संहिता से उद्धृत ग्रन्थालय हस्तलिपि का नमूना निम्नलिखित प्रकार है:-

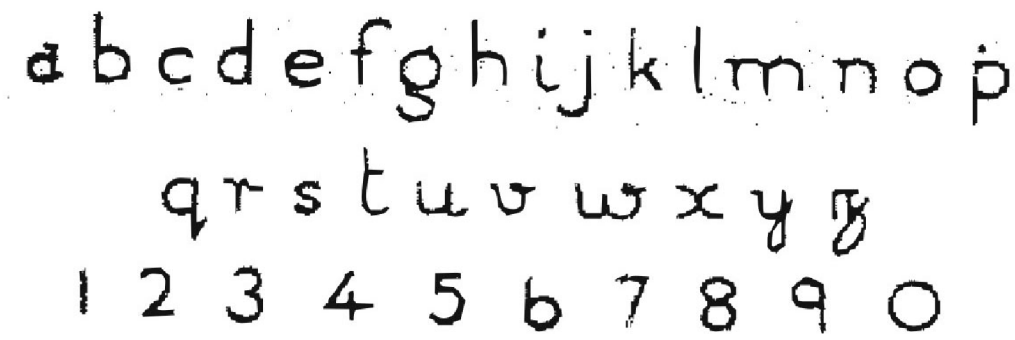

3. वर्गीकृत सूची की परिभाषा (Definition of Classified Catalogue)

ग्रन्थालय सूची एक उपकरण है जिसका निर्माण रंगनाथन के मतानुसार इस प्रकार किया जाना चाहिए:

- प्रत्येक पाठक को उसका अभीष्ट ग्रन्थ प्राप्त हो जाए;
- प्रत्येक ग्रंथ को उसका उपयुक्त पाठक प्राप्त हो जाए;
- पाठक के समय को नष्ट होने से बचाया जाए ; तथा इस हेतु
- कर्मचारियों का समय नष्ट होने से बचाया जाए।

रंगनाथन ने वर्गीकृत सूची को निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किया है -

"ऐसी सूची, जिसमें कुछ अंक प्रविष्टियां तथा कुछ शब्द प्रविष्टियां हों। फलस्वरूप वर्गीकृत सूची के दो भाग होते हैं- वर्गीकृत भाग तथा आनुवर्णिक भाग।" वर्गीकृत भाग में अंक प्रविष्टियां-मुख्य प्रविष्टियां तथा अन्तर्विषयी प्रविष्टियां व आनुवर्णिक भाग में शब्द प्रविष्टियां-वर्ग निर्देशी प्रविष्टियां, ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियां तथा नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियां एक वर्णानुक्रम में व्यवस्थित होती हैं।

इस प्रकार वर्गीकृत सूची के दो भाग होते हैं। इसलिए इसे द्विभागिक सूची कहा जाता है। प्रथम भाग में अनुवर्ग क्रम में प्रविष्टियाँ (Entries) व्यवस्थित की जाती हैं। इसे वर्गीकृत भाग (Classified Part) कहते हैं। इस भाग में मुख्य प्रविष्टियाँ (Main Entries) तथा अन्तर्विषयी प्रविष्टियाँ (Cross Reference Entries) रखी जाती हैं। अन्तर्विषयी प्रविष्टियों का विवरण इस इकाई में सम्मिलित नहीं किया गया है क्योंकि यह प्रस्तुत पाठ्यक्रम के स्तर पर नहीं बताया जाता है।

वर्गीकृत सूची में प्रविष्टियों को वर्गांक के अनुसार व्यवस्थित किया जाता है। इन प्रविष्टियों के अग्र अनुच्छेद (Leading section) में क्रामक अंक (Call number) लिखा जाता है।

वर्गीकृत सूची में द्वितीय भाग, अनुवर्ण भाग (Alphabetical Part) में अन्य प्रविष्टियाँ रखी जाती हैं। ये सभी अनुवर्ण क्रम में व्यवस्थित की जाती हैं। इस भाग में वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ (Class Index Entries), ग्रंथ निर्देशी प्रविष्टियाँ (Book Index Entries) तथा नामांतर निर्देशी प्रविष्टियाँ (Cross Reference Index Entries) रखी जाती हैं। इन सभी प्रविष्टियों के आरंभ में शब्दों का प्रयोग होता है। इसके विपरीत वर्गीकृत भाग में प्रविष्टियाँ अंकों से शुरू होती हैं।

4. वर्गीकृत सूची की प्रविष्टियों के प्रकार (Variety of Entries of Classified Catalogue)

प्रविष्टि (Entry)

रंगनाथन के अनुसार, "प्रविष्टि एक सूची अथवा प्रलेखन सूची में अन्तिम एकांश लेखा है।" इसी प्रकार ए ए सी आर-2 के अनुसार "प्रविष्टि से तात्पर्य सूची में एक मद से है।" इस प्रकार ग्रन्थालय

सूची के सन्दर्भ को दृष्टिगत रखते हुये कहा जा सकता है कि प्रविष्टि, एक ग्रन्थ या अन्य पाठ्य-सामग्री का सूची में एकांश लेखा है।

रंगनाथन की सी सी सी सूची संहिता के आधार पर निर्मित वर्गीकृत सूची में दो प्रकार की प्रविष्टियां होती हैं-

1. मुख्य प्रविष्टि
2. सहायक प्रविष्टि

इन प्रविष्टियों को निम्नलिखित तालिका द्वारा अधिक सुगमता से समझा जा सकता है:

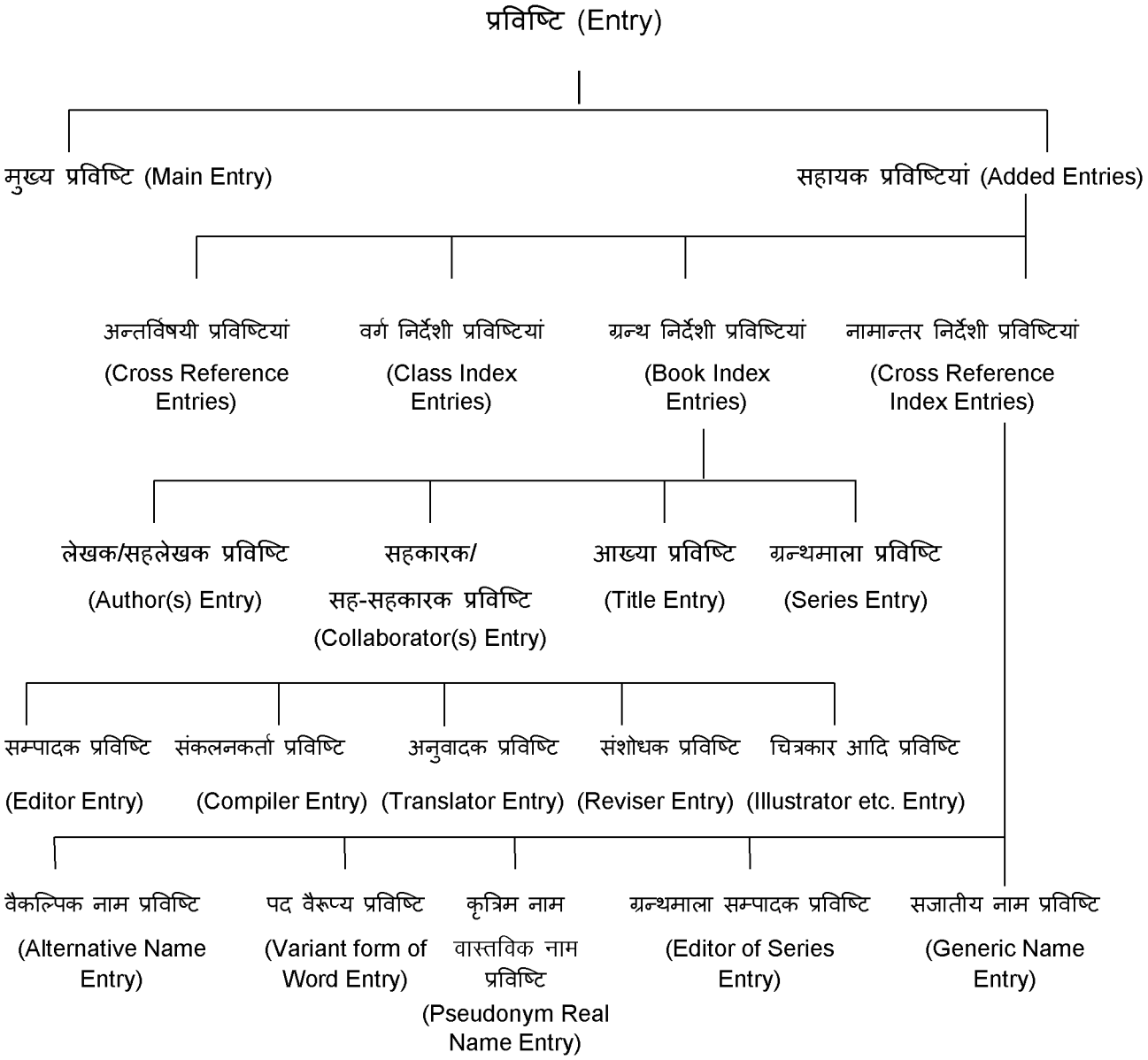

5. मुख्य प्रविष्टि (Main Entry)

5.1 परिभाषा (Definition)

रंगनाथन ने मुख्य प्रविष्टि को निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किया है -

"विशिष्ट प्रविष्टि, जो सम्पूर्ण ग्रन्थ के सम्बन्ध में अधिकतम सूचना प्रदान करती है। ग्रन्थ से

सम्बन्धित अन्य समस्त प्रविष्टियां-विशिष्ट और सामान्य सामान्यता मुख्य प्रविष्टि से ही व्युत्पन्न (Derive) होती हैं"।

वर्गीकृत सूची में मुख्य प्रविष्टि एक विशिष्ट अंक प्रविष्टि होती है। क्योंकि इसका आरम्भ क्रामक अंक (Call Number) से होता है, इसी कारण मुख्य प्रविष्टि को वर्गीकृत भाग में व्यवस्थित किया जाता है। सूची में प्रत्येक ग्रंथ के लिये एक मुख्य प्रविष्टि का निर्माण किया जाता है। संबंधित ग्रंथ के मुखपृष्ठ (Title Page) तथा अतिरेक पृष्ठों (यथा अर्ध मुखपृष्ठ एवं उसका पश्च भाग तथा मुखपृष्ठ का पश्च भाग इत्यादि) से प्राप्त सूचना के आधार पर ही सूची संहिता के नियमों के अनुसार मुख्य प्रविष्टियों में सूचना अंकित की जाती है।

प्रत्येक ग्रन्थ के लिये मात्र एक ही मुख्य प्रविष्टि बनाई जाती है। वर्गीकृत सूची में मुख्य प्रविष्टि ग्रन्थ के विशिष्ट विषय (Specific subject) के अन्तर्गत बनाई जाती है।

5.2 मुख्य प्रविष्टि की संरचना (Sructure of Main Entry)

सी सी सी के अनुसार वर्गीकृत सूची की मुख्य प्रविष्टि के 6 अनुच्छेद क्रमानुसार दिये जाते हैं -

1. अग्र अनुच्छेद (Leading Section)
2. शीर्षक अनुच्छेद (Heading Section)
3. आख्या अनुच्छेद (Title Section)
4. टिप्पणी अनुच्छेद (Note Section)
5. परिग्रहण संख्या (Accession Number)
6. संकेत (Tracing)

उपर्युक्त छह अनुच्छेदों में से पहले पाँच अनुच्छेद तो मुख्य प्रविष्टि पत्रक के मुख भाग (Front portion) पर क्रमानुसार तथा छठा भाग उस पत्रक के पीछे अंकित किया जाता है। टिप्पणी अनुच्छेद में दी जाने वाली सूचना के अतिरिक्त शेष सभी अनुच्छेदों में दी जाने वाली सूचनाएँ ग्रन्थ में उपलब्ध होती हैं। टिप्पणी अनुच्छेद सभी ग्रन्थों की मुख्य प्रविष्टि में नहीं दिया जाता। कुछ ही ग्रन्थों में ऐसी विशेषताएं होती हैं, जिसे कि मुख्य प्रविष्टि के टिप्पणी अनुच्छेद में दिये जाने की आवश्यकता पड़ती है।

इन अनुच्छेदों को निम्नलिखित चित्र द्वारा स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है -

मुख्य प्रविष्टि पत्रक का मुख भाग
(Front Portion of Main Entry Card)

	Leading	Section
		Heading Section Title ..... Edition Statement..... ..... Collaborator Statement..... Note Section ..... Accession Number

मुख्य प्रविष्टि पत्रक का पश्च भाग
(Back Portion of Main Entry Card)

	o
Cross Reference Entry	Class Index Entries
	Book Index Entries
	Cross Reference Index Entries

1. अग्र अनुच्छेद (Leading Section) - यह वर्गीकृत सूची की मुख्य प्रविष्टि का प्रथम भाग होता है। इसमें ग्रन्थ का क्रामक अंक (वर्गांक + ग्रन्थांक + संग्रहांक यदि हो तो) लिखा जाता है। क्रामक अंक ग्रन्थों के मुखपृष्ठ के पश्च पृष्ठ (Verso of title page) से लिया जाता है। यह भाग अग्र रेखा (Leading line) पर प्रथम शीर्ष (First vertical) से प्रारम्भ होता है। वर्गांक के बाद दो अक्षरों की जगह छोड़कर ग्रन्थांक लिखा जाता है। यदि संग्रहांक भी हो तो उसे ग्रन्थांक के ऊपर लिखा जाता है। चूंकि क्रामक अंक में परिवर्तन सम्भव होता है, इसे पेन्सिल से अंकित किया जाता है। इस अनुच्छेद की समाप्ति के बाद पूर्ण विराम (Full stop) नहीं लगाया जाता है।

2. शीर्षक अनुच्छेद (Heading Section) - यह अनुच्छेद अग्र अनुच्छेद की पंक्ति के बाद वाली पंक्ति पर द्वितीय शीर्ष (Second vertical) से प्रारम्भ होता है तथा आवश्यकता पड़ने पर अनुवर्ती पंक्तियां प्रथम शीर्ष से ही प्रारम्भ होती हैं। इसमें प्रविष्टि पद (Entry element), गौण पद (Secondary element)एवं व्यष्टिकृत पद (Individualizing element) लिखे जाते हैं। प्रविष्टि पद बड़े अक्षरों (Block letters) में एवं गौण पद वृत्ताकार कोष्ठक (Circular bracket) में सामान्य अक्षरों में तथा व्यष्टिकृत पद दूसरे वृत्ताकार कोष्ठक में लिखे जाते हैं। लेखक के नाम के साथ लगी डिग्रियां, योग्यतायें, सम्मानित पद, संस्था के साथ सम्बद्धता आदि को लेखक के नाम को लिखने से पूर्व हटा दिया जाता है। यदि शीर्षक अनुच्छेद में लेखक के नाम के स्थान पर किसी सहकारक (Collaborator) के नाम का प्रयोग किया गया हो, उसके नाम के साथ सदैव विवरणात्मक पद (Descriptive element) का प्रयोग किया जाता है। विवरणात्मक पद को रेखांकित (Underline) किया जाता है तथा मुद्रण में इसे टेढ़े अक्षरों (Italics) में मुद्रित किया जाता है। इसके पूर्व अल्पविराम चिन्ह (Comma) का प्रयोग किया जाना अनिवार्य है। इस अनुच्छेद की समाप्ति के बाद पूर्ण विराम (Full stop) (.) लगाया जाता है।

3. आख्या अनुच्छेद (Title Section) - जिस पंक्ति पर शीर्षक अनुच्छेद समाप्त होता है, उससे अगली वाली पंक्ति पर द्वितीय शीर्ष से आख्या अनुच्छेद प्रारम्भ होता है। अनुवर्ती पंक्तियां प्रथम शीर्ष से प्रारम्भ होती हैं। इस अनुच्छेद में मुखपृष्ठ एवं उसके पश्च भाग पर उपलब्ध सूचना के आधार पर एक, दो अथवा तीन वाक्य (Sentences) हो सकते हैं। इन्हें क्रमानुसार निम्नलिखित प्रकार से लिखा जाता है-

(i) आख्या, उपआख्या अथवा व्याख्यात्मक आख्या,

(ii) संस्करण विवरण (प्रथम संस्करण के अतिरिक्त),

(iii) सहकारक विवरण।

आख्या के पूर्व लगे प्रारम्भिक उपपद (Initial articles a, an, the) तथा आदरसूचक शब्दों को आख्या के आख्या अनुच्छेद में अंकित करने के पूर्व हटा दिया जाता है। मुख्य आख्या तथा उपआख्या/व्याख्यात्मक आख्या के मध्य कोलन चिन्ह (:) का प्रयोग किया जाता है तथा अन्त में पूर्ण विराम (.) लगाया जाता है। यदि आख्या के मध्य या अन्त में अनावश्यक शब्द जुड़े हों तो उन्हें मध्य से तीन बिन्दुओं (...) द्वारा तथा अन्त में etc. शब्द लिखकर हटा दिया जाता है। यदि संस्करण की सूचना (प्रथम संस्करण के अतिरिक्त) उपलब्ध हो, तो उसे अंकित किया जाता है। उसके बाद भी पूर्ण विराम (Full stop) (.) लगाया जाता है। संस्करण विवरण के बाद सहकारक विवरण, यथा-अनुवादक, सम्पादक, संकलनकर्ता, चित्रकार आदि, यदि ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर दिये गये हों तो उनके नाम अंकित किये जाते हैं। इस अनुच्छेद के अन्त में पूर्ण विराम (Full stop) (.) लगाया जाता है।

4. टिप्पणी अनुच्छेद (Note Section) - जिस पंक्ति पर आख्या अनुच्छेद समाप्त होता है, उससे अगली पंक्ति पर द्वितीय शीर्ष से टिप्पणी अनुच्छेद प्रारम्भ होता है तथा अनुवर्ती पंक्तियां प्रथम शीर्ष से प्रारम्भ होती हैं। छह प्रकार की टिप्पणियों का प्रावधान है, परन्तु ग्रन्थमाला टिप्पणी का ही अधिकतर प्रयोग होता है। ग्रन्थमाला के बारे में सूचना सामान्यतया ग्रन्थ के संक्षिप्त मुखपृष्ठ (Half title page), उसके पश्च पृष्ठ, मुखपृष्ठ अथवा उसके पश्च पृष्ठ पर दी रहती है। ग्रन्थमाला टिप्पणी के निम्नांकित तीन उपविभाग होते हैं :

(i) ग्रन्थमाला का नाम,

(ii) ग्रन्थमाला के सम्पादक का नाम,

(iii) ग्रन्थमाला का क्रमांक या उसका स्थानापन्न।

ग्रन्थमाला के नाम को ग्रन्थमाला टिप्पणी में लिखते समय नाम के पूर्व लगे प्रारम्भिक उपपद (Initial articles) व आदरसूचक शब्दों को हटाकर लिखा जाता है। इस टिप्पणी को वत्ताकार कोष्ठक में अंकित किया जाता है और प्रत्येक उपविभाग के अन्त में पूर्ण विराम (Full stop) (.) लगाया जाता है।

5. परिग्रहण संख्या (Accession Number) - प्रत्येक ग्रन्थ के मुखपृष्ठ के पश्च पृष्ठ पर परिग्रहणकर्ता (Accessioner) द्वारा प्रदत्त परिग्रहण संख्या प्राप्त कर सूची पत्रक की सबसे अन्तिम पंक्ति पर प्रथम शीर्ष से प्रारम्भ करते हुये अंकित किया जाता है। इस अनुच्छेद की समाप्ति के बाद पूर्ण विराम (Full stop) (.) नहीं लगाया जाता है।

6. संकेत (Tracing) - संकेत अनुच्छेद देने के लिये अधिक स्थान की आवश्यकता पड़ती है, क्योंकि इसमें सभी सहायक प्रविष्टियों के शीर्षक संकेत रूप में दिये जाते हैं। संकेत पूर्णतया ग्रन्थालय कर्मचारियों के लिये ही उपयोगी होता है, न कि पाठकों के लिये। इसलिए यह अनुच्छेद मुख्य प्रविष्टि पत्रक के पश्च भाग पर दिया जाता है। पत्रक के पश्च भाग को काल्पनिक रूप से दो भागों में विभाजित किया जाता है, जिन्हें बायें भाग व दायें भाग के नाम से जाना जाता है। दायें भाग को पुनः काल्पनिक रूप से तीन भागों में विभक्त किया जाता है, जिन्हें ऊपरी भाग, मध्य भाग व निम्न भाग कहा जाता है।

बायें भाग में प्रत्येक अन्तर्विषयी प्रविष्टि (CRE) के अग्र अनुच्छेद, अध्याय, पृष्ठ आदि को अंकित किया जाता है। दायें भाग के ऊपरी भाग में वर्ग निर्देशी प्रविष्टियों (CIE's) के शीर्षक, मध्य भाग में ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियों (BIE's) के शीर्षक तथा निम्न भाग में नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियों (CRIE's) के शीर्षक अंकित किये जाते हैं। समस्त प्रविष्टियों के शीर्षकों को उसी क्रम में अंकित किया जाता है, जिस क्रम में उनको निर्मित किया गया है। संकेत अनुच्छेद के सभी शब्द व्याकरण के नियमों के अनुसार सामान्य लेख में लिखे जाते हैं। यदि प्रत्येक पंक्ति पर पूरा शीर्षक न आ पाये तो अनुवर्ती

पंक्ति दो अक्षर की जगह छोड़कर लिखी जाती है। प्रत्येक शीर्षक के बाद पूर्ण विराम (Full stop) (.) लगाया जाता है।

मुखपृष्ठ

ADOLESCENT PSYCHOLOGY

(Edition 5)

IDENTITY FORMATION

STUART T. HAUSER, A.M., M.D.

Editor : **John Smith**

London

John Wiley & Sons Inc.

1971

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनाएँ :

Call No. S2 L1

Acc. No. 17555

Pages xi, 360

H.T.P. : Wiley series on psychological disorders. Irving B. Weiner, Editor. Treat it as 4th volume in the series.

पृष्ठ 6-7 के चित्रों में सूची पत्रक के मुख भाग एवं पश्च भाग में मुख्य प्रविष्टि के विभिन्न अनुच्छेदों की स्थिति को दर्शाया गया है। प्रत्येक अनुच्छेद की स्थिति इस पृष्ठ पर दिये मुखपृष्ठ के उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है।

मुख्य प्रविष्टि

(Main Entry)

1. अग्र अनुच्छेद (पेन्सिल में अंकित होगा)	S2 L1	
2. शीर्षक अनुच्छेद		HAUSER (Stuart T).
3. आख्या अनुच्छेद		Adolescent psychology. Ed 5. Ed by John Smith.
4. टिप्पणी अनुच्छेद		(Wiley series on psychological disorders. Ed by Irvinig Weiner. 4).
5. परिग्रहण संख्या	27298	

संकेत
(Tracing)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टियां (CIE) →	Adolescent, Psychology. Psychology.
ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियां (BIE) →	Hauser (Strart T). Smith (John), Ed. Wiley series on psychological disorders.
नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियां (CRIE) →	Weiner (Irving B), Ed.

6. सहायक प्रविष्टियां (Added Entries)

6.1 परिभाषा (Definition)

पाठकों की मुख्य अभिगम की पूर्ति मुख्य प्रविष्टि द्वारा हो जाती है, परन्तु अन्य अभिगमों की पूर्ति हेतु सहायक प्रविष्टियों का निर्माण किया जाता है। रंगनाथन के अनुसार "मुख्य प्रविष्टि के अतिरिक्त अन्य प्रविष्टि सहायक इतर प्रविष्टि है।" एएसीआर-2 के अनुसार "मुख्य प्रविष्टि के अतिरिक्त प्रविष्टि, जिसके द्वारा सूची में किसी मद का प्रतिनिधित्व किया जाता है, ही इतर प्रविष्टि है। कटर के अनुसार "सहायक प्रविष्टि द्वितीयक प्रविष्टि होती है अर्थात् मुख्य प्रविष्टि के अतिरिक्त प्रविष्टि।"

6.2 सहायक प्रविष्टि के प्रकार (Types of Added Entry)

सी सी सी के अनुसार निर्मित वर्गीकृत सूची में ग्रन्थों हेतु निम्नलिखित प्रकार की सहायक प्रविष्टियां बनाई जाती हैं -

(i) अन्तर्विषयी प्रविष्टि (Cross Reference Entry)

(ii) वर्ग निर्देशी प्रविष्टि (Class Index Entry)

(iii) ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि (Book Index Entry)

(iv) नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि (Cross Reference Index Entry)

7. सहायक प्रविष्टियों की संरचना (Structure of Added Entries)

7.1 अन्तर्विषयी प्रविष्टि (Cross Reference Entry)

अन्तविर्षयी प्रविष्टियाँ पाठ्यक्रम में न होने के कारण छोड़ दी गई हैं।

7.2 वर्ग निर्देशी प्रविष्टि (Class Index Entry)

वर्गीकृत सूची की वह सामान्य सहायक शब्द प्रविष्टि, जो वर्ग के नाम से वर्गांक की ओर निर्देशित करती है को वर्ग निर्देशी प्रविष्टि कहते हैं। मुख्य प्रविष्टि तथा अन्तर्विषयी प्रविष्टि, दोनों के वर्गांकों के लिए शृंखला प्रक्रिया द्वारा विषय शीर्षक प्राप्त कर, वर्ग निर्देशी प्रविष्टियां बनाई जाती हैं। इस प्रविष्टि में ग्रन्थ के विषय को प्राकृतिक भाषा में अनुवाद कर शीर्षक अनुच्छेद में लिखा जाता है।

ये सूची में एक ही शीर्षक से बार-बार नहीं बनायी जाती हैं, क्यांेकि एक ही वर्ग निर्देशी प्रविष्टि उन सभी ग्रंथों के लिये पर्याप्त होती हैं जिनका वर्गांक समान होता है। एक ग्रंथ के लिये बनायी जाने वाली वर्ग निर्देशी प्रविष्टियों की संख्या, ग्रंथ के वर्गांक तथा सूची में पहले से ही उपलब्ध इन प्रविष्टियों पर निर्भर करती है।

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि की संरचना (Structure of Class Index Entry)

सी सी सी के अनुसार वर्ग निर्देशी प्रविष्टि के तीन भाग होते हैं -

1. अग्र अनुच्छेद (Leading Section)
2. द्वितीय अनुच्छेद (Second Section)
3. निर्देशांक (Index Number)

1. अग्र अनुच्छेद - वर्ग निर्देशी प्रविष्टि के अग्र अनुच्छेद में उपयुक्त वर्ग निर्देशी शीर्षक शृंखला प्रक्रिया द्वारा प्राप्त कर दिया जाता है। यह अनुच्छेद प्रथम शीर्ष से प्रारम्भ होता है तथा अनुवर्ती पंक्तियां भी प्रथम शीर्ष से ही प्रारम्भ होती हैं। इस अनुच्छेद की समाप्ति पर पूर्ण विराम (.) नहीं लगाया जाता है।

2. द्वितीय अनुच्छेद - द्वितीय अनुच्छेद में नियमांक KF2* के अनुसार निम्नलिखित निर्देशक शब्द (Directing words) लिखें जाते हैं -

For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number

यह अनुच्छेद द्वितीय शीर्षक से प्रारम्भ होता है तथा अनुवर्ती पंक्तियां प्रथम शीर्ष से प्रारम्भ होती हैं। निर्देशक शब्द रेखांकित नहीं किये जाते हैं। इस अनुच्छेद की समाप्ति पर पूर्ण विराम (.) नहीं लगाया जाता है।

3. निर्देशांक - इस अनुच्छेद के अन्तर्गत अग्र अनुच्छेद मे दिये गये शीर्षक को दर्शाने वाला वर्गांक लिखा जाता है। निर्देशांक द्वितीय अनुच्छेद वाली पंक्ति में ही उचित स्थान होने पर (कम से कम चार अक्षर की जगह छोड़कर) अंकित किया जाता है। समुचित स्थान न होने पर इसे अनुवर्ती पंक्ति पर अंकित किया जाता है। इसे पेन्सिल से यथासम्भव दाहिनी ओर लिखा जाता है। इस अनुच्छेद की समाप्ति पर पूर्ण विराम (.) नहीं लगाया जाता है।

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1

(Class Index Entry - 1)

	ADOLESCENT, PSYCHOLOGY.	
		For documents in this Class and its Subdivisions,see the Classified Part of the catalogue under the Class Number S2

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2
(Class Index Entry - 2)

	PSYCHOLOGY.	
	Class Number	For documents ..... S

उपर्युक्त प्रथम दो वर्ग निर्देशी प्रविष्टियां मुख्य प्रविष्टि के वर्गांक के लिये बनाई गई हैं। जहां पहली वर्ग निर्देशी प्रविष्टि के द्वितीय अनुच्छेद में पूरे निर्देशक शब्द लिखे जाते हैं, वही शेष वर्ग निर्देशी प्रविष्टियों में कक्षा एवं परीक्षा भवन में समय बचाने की दृष्टि से प्रथम दो शब्द एवं अन्तिम दो शब्द ही लिखे जाते हैं। परन्तु ग्रन्थालयों में पूरे निर्देशक शब्द ही लिखे जाते है।

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि (Book Index Entry)

"वर्गीकृत सूची की विशिष्ट सहायक शब्द प्रविष्टि को ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि कहते हैं।"

ये सूची में विशिष्ट शाब्दिक प्रविष्टियाँ होती हैं। इनका उद्देश्य पाठकों को अभीष्ट ग्रंथ प्राप्त करने में सहायता प्रदान करना होता है। यदि पाठक को किसी ग्रंथ का लेखक अथवा सहलेखक अथवा सहकारक अथवा आख्या (यदि विषय अबोधक आख्या हो) अथवा ग्रंथमाला में से, किसी एक के संबंध में स्पष्ट सूचना ज्ञात हो, तो ग्रंथ निर्देशी प्रविष्टि उसको वांछित ग्रन्थ खोजने में सहायक सिद्ध होती है। इसके अतिरिक्त यह प्रविष्टियाँ पाठकों को सूची के वर्गीकृत भाग के उपयुक्त स्थान तक पहुँचाने में भी सहायक सिद्ध होती हैं। वर्गीकृत भाग के उपयुक्त स्थान पर पाठक को अभीष्ट ग्रंथ की मुख्य प्रविष्टि प्राप्त हो जाती है। किसी शीर्षक से एक बार वर्ग निर्देशी प्रविष्टि बन जाने पर उसी शीर्षक से ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि नहीं बनायी जाती है।

वर्गीकृत सूची में मुख्यतया निम्नलिखित चार प्रकार की ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियां बनाई जाती हैं -

(i) लेखक/सहलेखक निर्देशी प्रविष्टि

(ii) सहकारक/सह-सहकारक निर्देशी प्रविष्टि

(iii) आख्या निर्देशी प्रविष्टि

(iv) ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टि।

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि की संरचना (Structure of Book Index Entry)

एक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि के निम्नलिखित चार भाग होते हैं, परन्तु सामान्य ग्रन्थों की ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि में प्रथम तीन भाग ही प्रयुक्त होते हैं -

1. अग्र अनुच्छेद
2. द्वितीय अनुच्छेद
3. निर्देशांक
4. टिप्पणी अनुच्छेद, (यदि आवश्यक हो)

1. अग्र अनुच्छेद - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि का अग्र-अनुच्छेद अग्र रेखा (Leading line) पर प्रथम शीर्ष से प्रारम्भ होता है तथा अनुवर्ती पंक्तियां भी प्रथम शीर्ष से प्रारम्भ होती हैं। इस अनुच्छेद की समाप्ति पर पूर्ण विराम (.) लगाया जाता है।

2. द्वितीय अनुच्छेद - यह अनुच्छेद ग्रन्थमाला प्रविष्टि के अतिरिक्त तीनों ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियों में द्वितीय शीर्ष से प्रारम्भ होता है जबकि ग्रन्थमाला प्रविष्टि में प्रथम शीर्ष से प्रारम्भ होता है। इस अनुच्छेद की समाप्ति पर पूर्ण विराम (.) लगाया जाता है।

3. निर्देशांक - जिस पंक्ति पर द्वितीय अनुच्छेद समाप्त होता है। यदि उसी पंक्ति पर समुचित स्थान उपलब्ध हो (कम से कम चार अक्षरों की जगह छोड़कर) निर्देशांक अंकित किया जाता है। समुचित स्थान न होने पर इसे अनुवर्ती पंक्ति में अंकित किया जाता हैं इसे यथासम्भव दाहिनी और पेन्सिल से अंकित किया जाता हे। इस अनुच्छेद की समाप्ति पर पूर्ण विराम (.) नहीं लगाया जाता है।

प्रत्येक प्रकार की ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि की संरचना अग्रलिखित प्रकार है -

लेखक/सहलेखक निर्देशी प्रविष्टि (Author/Joint Author Index Entry)

1. अग्र अनुच्छेद - लेखक/सहलेखक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि के अग्र अनुच्छेद में दी जाने वाली सूचना प्रविष्टि की आवश्यकतानुसार होगी -

(अ) यदि लेखक के नाम का प्रयोग वर्ग निर्देशी प्रविष्टि के मुख्य शीर्षक के रूप में न किया गया हो, तो शीर्षक में प्रदत्त लेखक का नाम इस अनुच्छेद में लिखा जायेगा।

(ब) दो सहलेखकों द्वारा रचित ग्रन्थ के लिये दो ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियां बनाई जाती हैं। पहली प्रविष्टि के अग्र अनुच्छेद में मुख्य प्रविष्टि के अग्र अनुच्छेद के समान ही सूचना दी जाती है। दूसरी प्रविष्टि में दूसरे लेखक के नाम को पहले लेखक के नाम के स्थान पर तथा पहले लेखक को दूसरे लेखक के नाम के स्थान पर क्रम परिवर्त (Permutation) करके लिखा जायेगा।

(स) तीन या अधिक सहलेखकों की अवस्था में मात्र एक ही लेखक निर्देशी प्रविष्टि, पहले लेखक के नाम से बनाई जाती है। लेखक के नाम के आगे and others शब्द जोड़ा जायेगा।

अग्र अनुच्छेद में लेखक का नाम मुख्य प्रविष्टि के समान ही उपकल्पित किया जायेगा अर्थात् प्रविष्टि पद बड़े अक्षरों में, गौण पद वृत्ताकार कोष्ठक में सामान्य अक्षरों में तथा आवश्यकतानुसार व्यष्टिकृत पद द्वितीय वृत्ताकार कोष्ठक में दिये जाते हैं।

2. द्वितीय अनुच्छेद - लेखक या सहलेखक निर्देशी प्रविष्टि के द्वितीय अनुच्छेद में संक्षिप्त आख्या तथा संस्करण विवरण दिया जाता है। संस्करण विवरण के बाद पूर्ण विराम (Full stop) (.) का प्रयोग होता है।

3. निर्देशांक - ग्रन्थ का क्रामक अंक (Call Number) इस अनुच्छेद में लिखा जाता है।

उदाहरणार्थ -

लेखक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Aurhor Book Index Entry)

	HAUSER (Stuart T).	
		Adolscent psychology. Ed 5. S2 L1

सहकारक/सह-सहकारक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि (Collaborator/Joint Collaborator Book Index Entry)

1. अग्र अनुच्छेद - सहकारक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि के अग्र अनुच्छेद में सहकारक का नाम मय विवरणात्मक पद (Descriptive element) लिखा जाता हैं विवरणात्मक पद के पूर्व कोमा (,) का प्रयोग होता हैं दो सह-सहकारकों की अवस्था में उनका उपकल्पन दो सहलेखकों के समान ही होगा तथा दो सह-सहकारक प्रविष्टियां उनके नाम को क्रम परिवर्त (Permutation) करके बनाई जायेंगी। दो से अधिक सहकारकों की अवस्था में पहले सहकारक के नाम के बाद and others शब्द तथा उसके बाद कोमा लगाकर विवरणात्मक पद जोड़ा जाता है।

2. द्वितीय अनुच्छेद - सहकारक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि के द्वितीय अनुच्छेद में मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक में प्रयुक्त व्यक्तिगत लेखक अथवा दो व्यक्तिगत सह-लेखकों के नाम के मात्र प्रविष्टि पद तथा कृत्रिम नामधारी लेखक व समष्टि लेखक का पूरा नाम, संक्षिप्त आख्या तथा संस्करण विवरण दिया जाता है। संक्षिप्त आख्या के पूर्व कोलन (:) तथा संस्करण से पूर्व पूर्ण विराम (Full stop) (.) का प्रयोग होता है।

3. निर्देशांक- निर्देशांक लेखक निर्देशी प्रविष्टि के समान ही पेन्सिल से लिखा जाता है।

उदाहरणार्थ -

सहकारक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Collaborator Book Index Entry)

	SMITH	(John), Ed.
		Hauser : Adolscent psychology. Ed 5. S2 L1

आख्या ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि (Title Book Index Entry)

1. अग्र अनुच्छेद : अलंकारिक आख्या (Fanciful title) (वह आख्या जिससे विषय का बोध न होता हो) होने पर ही यह प्रविष्टि बनाई जाती है। आख्या के पूर्व प्रयुक्त प्रारम्भिक उपपद (Intital articles) व आदरसूचक शब्दों को हटा दिया जाता है। आख्या ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि के शीर्षक में संक्षिप्त आख्या का प्रयोग होता है, जिसके प्रथम दो शब्द बड़े अक्षरों (Block letters) में लिखे जाते हैं।

2. द्वितीय अनुच्छेद - आख्या ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि के द्वितीय अनुच्छेद में By शब्द के बाद मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक में प्रयुक्त व्यक्तिगत लेखक अथवा दो सहलेखकों के नाम के प्रविष्टि पद तथा कृत्रिम नामधारी लेखक व समष्टि लेखक का पूरा नाम लिखा जाता है।

3. निर्देशांक - निर्देशांक लेखक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि के समान ही लिखा जाता है।

इस ग्रन्थ की आख्या ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि अलंकारिक आख्या न होने के कारण नहीं बनेगी।

नमूने की आख्या ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि निम्नलिखित प्रकार बनेगी :

नमूने की आख्या ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Sample Book Index Entry)

	BLACK AND white. Ed 3.	
		By Black. S2 L8

नियमांक JE4 के अनुसार आख्या प्रविष्टि में आख्या के प्रथम दो शब्द बड़े अक्षरों (Capital Letters) में लिखे जाते हैं।

ग्रन्थमाला ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि (Series Book Index Entry)

1. अग्र अनुच्छेद - ग्रन्थमाला ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि के अग्र अनुच्छेद में ग्रन्थमाला का नाम बड़े अक्षरों (Block Letters) में लिखा जाता है। ग्रन्थमाला के नाम के पूर्व प्रयुक्त प्रारम्भिक उपपद (Initial articles) व आदरसूचक शब्दों को हटा दिया जाता है।

2. द्वितीय अनुच्छेद - ग्रन्थमाला ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि के द्वितीय अनुच्छेद में निम्नलिखित सूचनाएं अंकित होती हैं-

1. ग्रन्थमाला क्रमांक (Serial number of series) तथा अनुपलब्ध होने पर प्रकाशन वर्ष। यह क्रमांक प्रथम शीर्ष से प्रारम्भ होता है।

2. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक में प्रयुक्त व्यक्तिगत लेखक या दो व्यक्तिगत सहलेखकों के नाम के मात्र प्रविष्टि पद तथा कृत्रिम नामधारी लेखक व समष्टि लेखक का पूरा नाम। यह सूचना द्वितीय शीर्ष से प्रारम्भ होती है।

3. कोलन (:) का चिन्ह।

4. संक्षिप्त आख्या।

5. संस्करण विवरण। संस्करण विवरण से पूर्व पूर्ण विराम (Full stop) (.) का प्रयोग होता है।

3. निर्देशांक - निर्देशांक लेखक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि के समान ही पेन्सिल से लिखा जायेगा। उदाहरणार्थ -

ग्रन्थमाला ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Series Book Index Entry)

	WILEY	SERIES ON PSYCHOLOGICAL DISORDERS.
	4	Hauser : Adolscent psychology. Ed 5. S2 L1

7.4 नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि (Cross Reference Index Entry)

"नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि एक सामान्य सहायक प्रविष्टि है, जो एक शब्द या शब्द समूह से अन्य पर्यायवाची शब्द या शब्द समूह की ओर निर्दिष्ट करती है।"

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि के प्रकार (Types of Cross Reference Index Entry)

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि निम्नलिखित पांच प्रकार की होती हैं -

1. वैकल्पिक नाम प्रविष्टि (Alternative Name Entry)
2. पद वैरूप्य प्रविष्टि (Variant-form-of-word Entry)
3. कृत्रिम-नाम वास्तविक नाम प्रविष्टि (Pseudonym-Real-Name Entry)
4. ग्रन्थमाला सम्पादक प्रविष्टि (Editor of Series Entry)
5. सजातीय नाम प्रविष्टि (Generic Name Entry)

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि की संरचना (Structure of Cross Reference Index Entry)

1. अग्र अनुच्छेद (Leading Section)
2. द्वितीय अनुच्छेद (Second Section)
3. निर्देशित शीर्षक (Referred-To Heading)

1. अग्र अनुच्छेद - नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि के अग्र अनुच्छेद में सामान्यतया व्यक्ति, भौगोलिक सत्ता, ग्रन्थमाला, ग्रन्थ आदि क्रमशः निर्देशित होने वाले शीर्षक (Referred-From Heading) के वैकल्पिक नामों के शब्द या शब्द समूह आते हैं। यह अनुच्छेद अग्र रेखा पर प्रथम शीर्ष के प्रारम्भ होता है तथा अनुवर्ती पंक्तियां भी प्रथम शीर्ष से प्रारम्भ होती हैं।

2. द्वितीय अनुच्छेद- इस अनुच्छेद में आवश्यकतानुसार निर्देशक पर See या See Also लिखे जाते हैं यह अनुच्छेद द्वितीय शीर्ष से प्रारम्भ होता है। प्रविष्टि हाथ से बनाये जाने या टंकित किये जाने पर, निर्देशक पद रेखांकित किये जाते हैं तथा मुद्रण में इन्हें टेढ़े अक्षरों (Italics) में मुद्रित किया जाता है।

3. निर्देशित शीर्षक - नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि के तीसरे भाग में प्रायः व्यक्ति, भौगोलिक सत्ता, ग्रन्थमाला या ग्रन्थ का वह नाम, जो कि मुख्य प्रविष्टि या ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि में प्रयुक्त किया गया हो, अंकित किया जाता हैं यह अनुच्छेद द्वितीय शीर्ष से प्रारम्भ होता है तथा अनुवर्ती पंक्तियां प्रथम शीर्ष से प्रारम्भ होती हैं।

उदाहरण स्वरूप, दिये गये ग्रन्थ में उपर्युक्त वर्णित पांच प्रकार की नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियों में से मात्र ग्रन्थमाला सम्पादक प्रविष्टि बनती है जो कि निम्नलिखित प्रकार से बनेगी-

ग्रन्थमाला सम्पादक निर्देशी प्रविष्टि

(Editor of Series – Cross Reference Index Entry)

	WEINER (Irving B), Ed.	
	DISORDERS.	See WILEY SERIES ON PSYCHOLOGICAL

अन्य नामान्तर निर्देशी प्रविष्टियों की संरचना का वर्णन सम्बन्धित इकाई में किया गया है।

8. संतत पत्रक (Continued Cards)

यदि किसी पत्रक पर प्रविष्टि (मुख्य अथवा सहायक) में दी जाने वाली सूचनाएं अंकित न हो पाये तो ऐसी स्थिति में संतत पत्रक का उपयोग करना पड़ता है। प्रथम पत्रक की अन्तिम पंक्ति पर दाहिनी ओर Continued in the next card वाक्यांश लिखना पड़ता है (देखिये मुख्य प्रविष्टि प्रथम पत्रक)। इसे रेखांकित किया जाता हैं संतत पत्रक के अग्र अनुच्छेद में प्रथम पत्रक के समान ही अग्र अनुच्छेद अंकित करना पड़ता है तथा दाहिनी ओर ऊपर Continued लिखना पड़ता है। इस शब्द को भी रेखांकित करना पड़ता है। इन्हें निम्नलिखित चित्रों द्वारा समझा जा सकता है -

मुख्य प्रविष्टि प्रथम पत्रक

	S1	K7
		Continued in the next card

मुख्य प्रविष्टि हेतु संतत पत्रक

	S1	Continued K7

टिप्पणी : इस इकाई में वर्णित तारांकित (*) नियम रंगनाथन कृत केटालागिंग प्रेक्टिस से लिये गये हैं।

9. वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Type Questions)

'हाँ' या 'ना' में उत्तर दें :-

1 मुख्य प्रविष्टि में ग्रंथ की अधिकतम सूचना दी जाती है।

2 वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ, सहायक प्रविष्टियाँ कहलाती हैं।

3 चित्रकार निर्देशी प्रविष्टि, ग्रंथ निर्देशी प्रविष्टियों की श्रेणी में आती है।

4. मुख्य प्रविष्टि एक सामान्य प्रविष्टि है।
5. ग्रंथ निर्देशी प्रविष्टियाँ सामान्य प्रविष्टियाँ होती हैं।
6. ग्रंथ निर्देशी प्रविष्टियाँ शाब्दिक प्रविष्टियाँ होती हैं।
7. ग्रंथ निर्देशी प्रविष्टियाँ अनुवर्ग भाग में व्यवस्थित की जाती है।
8. ग्रंथ निर्देशी प्रविष्टियों में परिग्रहणांक की सूचना दी जाती है।
9. ग्रंथ के जितने लेखक/सह लेखक होते हैं, उतनी ही लेखक/सह लेखक निर्देशी प्रविष्टियाँ बनायी जाती हैं।
10. ग्रंथ निर्दशी प्रविष्टियों में संस्करण की सूचना द्वितीय अनुच्छेद में दी जाती है।
11. व्यक्ति का नाम शीर्षक में आने पर हमेशा एक ही प्रकार से उपकल्पित किया जाता है, चाहे मुख्य प्रविष्टि हो अथवा अन्य प्रविष्टि हो।
12. प्रत्येक ग्रंथ की आख्या निर्देशी प्रविष्टि बनायी जाती है।
13. विषय अबोधक ग्रन्थमाला अथवा इसमें व्यक्तिवाचक संज्ञा होने पर ही ग्रंथमाला निर्देशी प्रविष्टि बनायी जाती है।
14. नामांतर निर्देशी प्रविष्टि एक विशिष्ट प्रविष्टि है।
15. केवल वैकल्पिक नाम में ही नामांतर निर्देशी प्रविष्टि बनायी जाती है।
16. ग्रंथमाला संपादक से ग्रंथ निर्देशी प्रविष्टि बनायी जाती है।
17. नामांतर निर्देशी प्रविष्टि में क्रामक अंक नहीं दिया जाता।
18. किसी व्यक्ति, भौगोलिक सत्ता; या संस्था के कई नाम होने से कई नामांतर निर्देशी प्रविष्टियाँ बनायी जाती हैं।

उचित उत्तर दें

1. सहायक प्रविष्टि ..... प्रकार की होती है। (तीन, चार)
2. वर्ग निर्देशी प्रविष्टि ..... प्रविष्टि होती है। (अंक, शाब्दिक)
3. वर्ग निर्देशी प्रविष्टि सूची के ..... में व्यवस्थित होती है। (वर्गीकृत भाग, अनुवर्ण भाग)
4. एक ही वर्ग निर्देशी शीर्षक से ..... वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ बनायी जा सकती हैं। (एक, अनेक)
5. वर्ग निर्देशी प्रविष्टि पाठकों को सूची के वर्गीकृत भाग तक पहुँचने के लिए ..... बताती है। (वर्गांक, क्रामक अंक)
6. पत्रक सूची की मानकीकृत साइज ..... होती है। (12.5x7.5 cm, 5x3 cm)

10. अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions)

1. सूची पत्रक की बनावट का चित्र सहित वर्णन कीजिये।
2. मुख्य प्रविष्टि की परिभाषा दीजिये तथा इसके विभिन्न अनुछेदों का सचित्र वर्णन कीजिये।
3. सहायक प्रविष्टि किसी कहते हैं। इसके विभिन्न प्रकारों का उदाहरण सहित वर्णन कीजिये।

11. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची (Bibliography)

1. सूद (एस पी) : क्रियात्मक सूचीकरण-सी सी सी. जयपुर, राज पब्लिशिंग हाउस, 2016.
2. KRISHAN KUMAR : Introduction to cataloguing practice. New Delhi, Vikas, 1981.
3. RANGANATHAN (S R) : Classified catalogue code etc. Ed 5. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.
4. RANGANATHAN (S R) : Cataloguing practice. Ed 2. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.

इकाई 2

एकल व्यक्तिगत लेखकों द्वारा रचित ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण (Practical Cataloguing of Books Involving Single Personal Authors)

उद्देश्य (Objectives)

1. लेखक एवं व्यक्तिगत लेखक को परिभाषित करना।
2. एकल व्यक्तिगत लेखक से सम्बन्धित सूचीकरण के शीर्षक के वरण एवं उपकल्पन के नियमों से परिचित कराना।
3. यूरोपीय कुलनामधारी व्यक्तिगत लेखक, भारतीय कुलनामधारी लेखक, भारतीय बिना कुलनामधारी लेखक एवं योजकीय कुलनामधारी लेखक द्वारा रचित ग्रन्थों के क्रियात्मक सूचीकरण से परिचित कराना

संरचना (Structure)

1. लेखक
   - 1.1 परिभाषा
   - 1.2 प्रकार
2. व्यक्तिगत लेखक
   - 2.1 परिभाषा
   - 2.2 प्रकार
3. एकल व्यक्तिगत लेखक
   - 3.1 परिभाषा
   - 3.2 शीर्षक वरण एवं उपकल्पन
4. एकल व्यक्तिगत लेखक द्वारा रचित ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण
   - 4.1 कुलनामधारी यूरोपीय लेखक
   - 4.2 कुलनामधारी भारतीय लेखक
   - 4.3 बिना कुलनामधारी भारतीय लेखक
   - 4.4 योजकीय कुलनामधारी लेखक
5. अभ्यासार्थ मुखपृष्ठ
6. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची

1. लेखक (Author)

1.1 परिभाषा (Definition)

प्रत्येक ग्रन्थ का कोई न कोई लेखक अवश्य होता है। बिना लेखक के ग्रन्थ के अस्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती है। सामान्यतया लेखक का तात्पर्य ग्रन्थ के रचयिता से होता है। रंगनाथन ने लेखक को निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किया है -

"अर्थ 1 - व्यक्ति जो ग्रन्थ की रचना करता है अर्थात् ग्रन्थ में वर्णित विचार एवं अभिव्यक्ति का पूर्ण उत्तरदायित्व जिस पर होता है।

अर्थ 2 - समष्टि निकाय जो ग्रन्थ की रचना करता है अर्थात् ग्रन्थ में वर्णित विचार एवं अभिव्यक्ति का पूर्ण उत्तरदायित्व जिस पर होता है।"

एंग्लो अमरीकन केटालागिंग रूल्स 1967 के अनुसार लेखक "वह व्यक्ति अथवा समष्टि निकाय है, जो ग्रन्थ के बौद्धिक अथवा कलात्मक अन्तर्वस्तु (Contents) के निर्माण के लिये उत्तरदायी होता है। उदाहरणार्थ, एक ग्रन्थ का लेखक, एक ग्रन्थ सूची (Bibliography) का संकलनकर्ता, एक संगीत ग्रन्थ कर रचनाकार, चित्रांकन करने वाला चित्रकार, फोटो खींचने वाला फोटोग्राफर।"

1.2 प्रकार (Types)

लेखक को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है -

(i) व्यक्तिगत लेखक (Personal Author)

(ii) समष्टि लेखक (Corporate Author)

2. व्यक्तिगत लेखक (Personal Author)

2.1 परिभाषा (Definition)

किसी ग्रन्थ की रचना एवं वर्णन शैली के लिये जब एक या अधिक व्यक्तिगत लेखक जिम्मेदार होते हैं तो उन्हें व्यक्तिगत लेखक कहते हैं। रंगनाथन ने व्यक्तिगत लेखक को निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किया है -

"व्यक्तिगत लेखक के रूप में, ग्रन्थ में वर्णित विचारों तथा अभिव्यक्ति का पूर्ण उत्तरदायित्व जब स्वयं उसके ऊपर व्यक्तिगत तौर पर होता है और किसी पद, जिस पर कि वह समष्टि निकाय में आसीन हो, पर नहीं होता और न ही उस निकाय पर ही होता है।"

2.2 प्रकार (Types)

रंगनाथन ने सूचीकरण के दृष्टिकोण से व्यक्तिगत लेखक को निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया है -

(i) एकल व्यक्तिगत लेखक (Single Personal Author)

यदि ग्रंथ की रचना एक व्यक्ति ने की हो, तो उसे एकल व्यक्तिगत लेखक कहा जाता है।

(ii) व्यक्तिगत सहलेखक (Joint Personal Author)

यदि एक से अधिक व्यक्ति लेखक हों, तो उन्हें व्यक्तिगत सहलेखक कहा जाता है।

टिप्पणी : इस इकाई में केवल एकल व्यक्तिगत लेखकों द्वारा रचित ग्रंथों के सूचीकरण का वर्णन किया गया है।

3. एकल व्यक्तिगत लेखक (Single Personal Author)

3.1 परिभाषा (Definition)

किसी ग्रन्थ की रचना एवं उसमें वर्णित विचार एवं अभिव्यक्ति के लिये जब मात्र एक व्यक्ति ही उत्तरदायी होता है तो उसे एकल व्यक्तिगत लेखक कहते हैं।

3.1 शीर्षक का वरण एवं उपकल्पन (Choice and Rendering of Heading)

सी सी सी सूची संहिता में एकल व्यक्तिगत लेखक के शीर्षक के वरण एवं उपकल्पन हेतु निम्नलिखित नियमों का प्रावधान है -

नियमांक MD1: शीर्षक का निर्माण निम्नलिखित में से अग्रतम (Earliest) के अनुसार होगा, जिसे ग्रन्थ स्वीकार करता है -

1. एकल व्यक्तिगत लेखक का नाम
2. व्यक्तिगत सहलेखक का नाम
3. समष्टि लेखक का नाम
4. व्यक्तिगत सहलेखक का नाम तथा समष्टि सहलेखक का नाम
5. समष्टि सहलेखक का नाम
6. कृत्रिम नामधारी लेखक या दो अथवा उससे अधिक कृत्रिम नामधारी लेखक
7. सहकारक का नाम
8. सह-सहकारक का नाम
9. ग्रन्थ की आख्या।

उपर्युक्त नियम के अनुसार यदि ग्रन्थ का एकल व्यक्तिगत लेखक हो, तो उसके नाम प्रयोग मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक निर्माण हेतु किया जायेगा।

नियमांक MD 21: व्यक्तियों के नामों का उपकल्पन सी सी सी के अध्याय श्र। में वर्णित नियमों के अनुसार निम्नलिखित प्रकार से होगा -

एक शब्दीय नाम (One Worded Name)

एक शब्दीय नामों को निम्नलिखित प्रकार से उपकल्पित किया जायेगा। जैसे -

HOMER.

KALIDAS.

VALMIKI. आदि

आद्याक्षरों का विस्तार (Expansion of Initials)

यदि व्यक्तिगत लेखक के नामों में व्यक्तिगत नाम (Forename) आद्याक्षरों में एवं कुलनाम (Surname) दिया गया हो, तो कुलनाम का प्रयोग प्रविष्टि पद (Entry element) के रूप में होगा तथा आद्याक्षरों का प्रयोग गौण पद (Secondary element) के रूप में होगा। अगर सम्भव हो तो आद्याक्षरों को विस्तारित अवस्था में लिखा जाना चाहिए। आद्याक्षरों का विस्तार किया जाये या नहीं, यह ग्रन्थालय की नीति पर निर्भर करता है। जैसे -

SAXENA (Anand Narain). या

SAXENA (A N).

व्यक्ति का जन्म वर्ष (Year of Birth)

नियमांक MD23 : शीर्षक में प्रदत्त नाम के साथ आवश्यकतानुसार व्यष्टिकृत पद (Individualizing elements) जोड़े जाने चाहिए।

नियमांक JA5 : व्यक्ति के नाम के साथ गौण पद के बाद उसका जन्म वर्ष व्यष्टिकृत पद के रूप में जोड़ा जाना चाहिए।

जन्म वर्ष का प्रयोग प्रविष्टि के शीर्षक में प्रदत्त नाम की एकरूपता (Homonym) को समाप्त करने के लिये व्यष्टिकृत पद के रूप में किया जाता है। जैसे -

GUPTA (S K) (1917).

बहु-शब्दीय नाम (Multi-Worded Name)

बहुशब्दीय नामों को निम्नलिखित प्रकार से उपकल्पित किया जायेगा -

(i) प्रविष्टि पद (Entry element)

(ii) गौण पद (Secondary element)

(iii) व्यष्टिकृत पद अर्थात् व्यक्ति का जन्म-मृत्यु वर्ष (Individualizing element *i.e.* years of person)

उदाहरणार्थ -

एक शब्दीय प्रविष्टि पद (One-Worded Entry Element)

1. SHUKLA (Awadesh Bihari) (1939).
2. BLACK (Newton Henry) (1874).

योजकीय प्रविष्टि पद (Hyphenated Entry Element)

1. QUILIER-COUCH (Arthur) (1863-1944).

दो-शब्दीय प्रविष्टि पद (Two-Worded Entry Element)

1. DASGUPTA (A K) (1915).

तीन शब्दीय प्रविष्टि पद (Three Worded Entry Element)

1. DATTA RAI MAHASAI (Kumar Munindra) (1880-1942).

बिना कुल वाले नाम (Names without Surnames)

1. ANAND PRAKASH (1912).
2. ABDUL KARIM (1921).

4. एकल व्यक्तिगत लेखक द्वारा रचित ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण (Practical Cataloguing of Single Personal Author)

4.1 कुलनामधारी यूरोपीय लेखक

मुखपृष्ठ 1

(यूरोपीय कुलनामधारी लेखक)

CHILD DEVELOPMENT

The Emerging Self

(3rd Edition)

Don C. Dinkmeyer

Chairman, Psychology Department

National College of Education,

Evanston, Illinois

Edited by

Richard M. Elliot

PRENTICE-HALL OF INDIA PVT.LTD.

NEW DELHI, 1967

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

H.T.P. : Prentice-Hall Psychology Series. Edited by A.T. Jersild. Number 7.

Acc. No.	11516	Call No.	S1	k7
Size	19 cm.	Pages	x,	434

Copyright Dinkmeyer, Don C. (Born 1905)

मुख्य प्रविष्टि

(Main Entry)

	S1	K7
	Richard M 11516	DINKMEYER (Don C) (1905). Child development : The emerging self. Ed 3.Ed by Elliot. (Prentice-Hall psychology series. Ed by A T Jersild. 7).

शृंखला प्रक्रिया

S = Psychology

S1 = Child, Psychology

संकेत

(Tracing)

Child, Psychology. Psychology. Dinkmeyer (Don C) (1905). Elliot (Richard M), Ed. Prentice-Hall psychology series,. Jersild (A T), Ed.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1

(Class Index Entry - 1)

	CHILD, PSYCHOLOGY.	
		For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number S1

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2

(Class Index Entry - 2)

	PSYCHOLOGY.	
		For documents ..... Class Number S

लेखक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Author – Book Index Entry)

	DINKMEYER (Don C) (1905).			
		Child development. Ed 3.	S1	K7

सहकारक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Collaborator – Book Index Entry)

	ELLIOT (Richard M), Ed.			
		Dinkmeyer : Child development. Ed 3.	S1	K7

ग्रन्थमाला - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Series – Book Index Entry)

	PRENTICE-HALL PSYCHOLOGY SERIES,			
	7	Dinkmeyer : Child development. Ed 3.	S1	K7

ग्रन्थमाला सम्पादक - नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि
(Editor of Series–Cross Reference Index Entry)

	JERSILD (A T), Ed.	
		See PRENTICE-HALL PSYCHOLOGY SERIES.

टिप्पणी :

1. सी सी सी नियमांक ED 3 के अनुसार मुख्य प्रविष्टि का क्रामक अंक अंकित किया गया है। नियमांक MC3 के अनुसार वर्गांक के बाद दो अक्षरों की जगह छोड़कर ग्रन्थांक लिखा गया है। इसे पेन्सिल से अंकित किया जाता है।
2. नियमांक MD1 के अनुसार मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का वरण एवं नियमांक MD21 के अनुसार उपकल्पन किया गया है। नियमांक ED51 के अनुसार लेखक का कुल नाम बड़े अक्षरों (Block Letters) में तथा नियमांक ED83 के अनुसार व्यक्तिनाम को सामान्य अक्षरों में वृत्ताकार कोष्ठक में लिखा गया है। लेखक का जन्म वर्ष उपलब्ध न होने के कारण नहीं लिखा गया है।
3. नियमांक ME1 के अनुसार आख्या लिखी गई है। आख्या व उपआख्या को कोलन (:) द्वारा जोड़ा गया है।
4. नियमांक ED45 के अनुसार परिग्रहण संख्या दी गई है।
5. संकेत का निर्माण नियमांक MH2, MH3, MH5, MH6, MH91, MH92 एवं MH93 के अनुसार किया गया है।
6. ग्रन्थ की अलंकारिक आख्या न होने के कारण इसकी आख्या सहायक प्रविष्टि नहीं बनाई गई है।
7. अन्य सभी प्रविष्टियाँ इकाई 1 में वर्णित नियमों के अनुसार बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ 2

(एकल व्यक्तिगत लेखक, ग्रन्थमाला सम्पादक)

MANNED SPACE FLIGHT

Max Faget

Holt , Rinehart & Winston Inc.
NEW YORK, 1965

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call Number	D58 K5
Pages	176 P.
Acc. No.	36798
Size	24 x 15 cm.
H.T.P. :	Holt Library of Science Series. No. III. Edited by Hames V. Bernardo

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	D58	K5
	V Bernado. 36798	FAGET (Max.) Manned space flight. (Holt library of science series. Ed by Hames V Bernado. 3).

श्रृंखला प्रक्रिया

D = Engineering

D5 = Transport Vehicle, Engineering.

D58 =Space Vehicle, Engineering

संकेत
(Tracing)

Space vehicle, Engineering. Transport vehicle, Engineering. Engineering. Faget (Max). Holt library of science series. Bernado (Hames V), Ed.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1
(Class Index Entry - 1)

	SPACE	VEHICLE, ENGINEERING.
	see the Number	For documents in this Class and its Subdivisions, Classified Part of the catalogue under the Class D58

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2
(Class Index Entry - 2)

	TRANSPORT VEHICLE, ENGINEERING.	
	Class Number	For documents D5

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-3
(Class Index Entry - 3)

	ENGINEERING.	
	Class Number	For documents ..... D

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Author - Book Index Entry)

	FAGET (Max).	
		Manned space flight. D58 K5

ग्रन्थमाला - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Series - Book Index Entry)

	HOLT LIBRARY OF SCIENCE SERIES.	
.	3	Faget : Manned space flight. D58 K5

ग्रन्थमाला सम्पादक निर्देशी प्रविष्टि
(Editor of Series – Cross Reference Index Entry)

	BERNARDO (Hames V), Ed.	
		See HOLT LIBRARY OF SCIENCE SERIES.

टिप्पणी :

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का वरण व उपकल्पन मुखपृष्ठ 1 की मुख्य प्रविष्टि के समान ही किया गया है।
2. टिप्पणी अनुच्छेद में ग्रन्थमाला का उपकल्पन नियमांक MF11, MF12 एवं MF13 के अनुसार किया गया है। मुखपृष्ठ पर ग्रन्थमाला क्रमांक (Series number) रोमन अंकों (Roman numerals) में दिया गया है तथापि नियमांक ED55 के अनुसार प्रविष्टि में इसे इन्डो-अरेबिक अंकों (Indo-Arabic numerals) में अंकित किया गया है।
3. अन्य सभी इतर प्रविष्टियां इकाई 1 में वर्णित नियमों के अनुसार बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ 3

(एकल व्यक्तिगत लेखक, दो सहकारक, ग्रन्थमाला एवं ग्रन्थमाला सम्पादक)

Electronics and Radio Engineering

by

Frederick E. Terman

Assisted by

Robert Arthur Helliwell

and

Joseph Mayo Pettit

(International Student Edition)

MCGRAW – HILL INTERNATIONAL BOOK CO.,

London,

1975

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No. D65,43 N75

Acc. No. 6321

Pages ix, 445

Size 25.6 cm.

H.T.P. Mc Graw-Hill series in Engineering, 5.

मुख्य प्रविष्टि

(Main Entry)

	D65, 43	N75
	ed. Assis 6321	TERMAN (Frederick E). Electronics and radio engineering. International student by Robert Arthur Helliwell and Joseph Mayo Petttit. (Mc Graw-Hill series in engineering. 5).

शृंखला प्रक्रिया

D = Engineering.

D6 = Mechanical, Engineering. (अवांछित कड़ी)

D65 = Electronic, Engineering.

D65,4 = Wireless, Engineering. (अवांछित कड़ी)

D65,43 = Broadcasting, Engineering.

संकेत

(Tracing)

Broadcasting, Electronic, Engineering.
Electronic, Engineering.
Engineering.

Terman (Frederik E).
Helliwell (Robert Arthur) and Pettit (Joseph Mayo), Assis.
Pettit (Joseph Mayo) and Helliwell (Robert Arthur), Assis.
Mc Graw-Hill series in engineering.

Radio.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1

(Class Index Entry - 1)

	BROADCASTING, ELECTRONIC, ENGINEERING.	
	Classified	For documents in this Class and its Subdivisions, see the Part of the catalogue under the Class Number D65, 43

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2

(Class Index Entry - 2)

	ELECTRONIC, ENGINEERING.	
	Class Number	For documents D65

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-3

(Class Index Entry - 3)

	ENGINEERING.	
	Class Number	For documents ……..... D

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

(Author - Book Index Entry)

	TERMAN (Frederik E).	
	ed.	Electronics and radio engineering. International student D65, 43 N75

सहकारक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - 1

(Collaborator - Book Index Entry - 1)

	HELLIWELL (Robert Arthur) and PETTIT (Joseph Mayo), Assis.	
	student	Terman : Electronics and radio engineering.International ed. D65, 43 N75

सहकारक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - 2

(Collaborator - Book Index Entry -2)

	PETTIT (Joseph Mayo) and HELLIWELL (Robert Arthur), Assis.	
	student	Terman : Electronics and radio engineering.International ed. D65, 43 N75

ग्रन्थमाला - नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि

(Series – Cross Reference Index Entry)

	MC GRAW-HILL SERIES IN ENGINEERING.	
	7 student	Terman : Electronics and radio engineering. International ed. D65, 43 N75

वैकल्पिक नाम - नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि

(Alternative Name – Cross Reference Index Entry)

	RADIO.	
		See BROADASTING.

टिप्पणी :

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक, आख्या व ग्रन्थमाला का उपकल्पन मुखपृष्ठ 1 के समान ही किया गया है।
2. अन्य सभी सहायक प्रविष्टियां इकाई 1 में वर्णित नियमों के अनुसार बनाई गई हैं।

4.2 कुलनामधारी भारतीय लेखक द्वारा रचित ग्रन्थ का क्रियात्मक सूचीकरण

मुखपृष्ठ 4

(**कुलनामधारी भारतीय लेखक, ग्रन्थमाला एवं ग्रन्थमाला सम्पादक**)

CONSTITIUTION OF INDIA

(Edition 2)

S.A. PANDEY

Edited by

S.K. Jain

Bharat Law Books House, Jaipur

1995

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	V44:2	N95	Acc. No.	133255
Size	22.5 cm.		Pages vii,	295 p.
H.T.P. :	Indian Law Series. Edited by Ram Prasad. 8.			

मुख्य प्रविष्टि

(Main Entry)

	V44:2	N95
	133255	PANDEY (S A). Constitution of India. Ed 2. Ed by S K Jain. (Indian law series. Ed by Ram Prasad. 8).

शृंखला प्रक्रिया

V	=	History
V 44	=	India, History
V44:2	=	Constitution, India

संकेत
(Tracing)

Constitution, India. India, History. History. Pandey (S A). Jain (S K), Ed. Indian law series. Ram Prasad, Ed.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1
(Class Index Entry - 1)

	CONSTITUTION, INDIA.	
		For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number V44:2

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2
(Class Index Entry - 2)

	INDIA, HISTORY.	
.		For documents .....
	Class Number	V44

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि- 3
(Class Index Entry - 3)

	HISTORY.	
	Class Number	For documents V

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Author – Book Index Entry)

	PANDEY (S A).	
		Constitution of India. Ed 2. V44:2 N95

सहकारक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Collaborator – Book Index Entry)

	JAIN (S K), Ed.	
		Pandey : Constitution of India. Ed 2. V44:2 N95

ग्रन्थमाला ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Series – Book Index Entry)

	INDIAN LAW SERIES.	
	7	Pandey : Constitution of India. Ed 2. V44:2 N95

ग्रन्थमाला सम्पादक नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि
(Editor Series– Book Index Entry)

	RAM PRASAD, Ed.	
		See INDIAN LAW SERIES.

टिप्पणी :

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का वरण व उपकल्पन मुखपृष्ठ 1 की मुख्य प्रविष्टि के समान ही किया गया है।
2. सहायक प्रविष्टियों का निर्माण मुखपृष्ठ 1 के समान ही किया गया है।
3. नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि में बिना कुलनामधारी भारतीय लेखक को बड़े अक्षरों (Capital Letters) में लिखा गया है।

4.3 बिना कुलनामधारी भारतीय लेखक

मुखपृष्ठ 5

(बिना कुलनामधारी भारतीय लेखक)

REFERENCE SERVICE

by

KRISHAN KUMAR

Professor

Department of Library Science

University of Delhi

Second Revised Edition

VIKAS PUBLISHING HOUSE PVT LTD.

Sahibabad (India)

1980

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No. 2:7 M0
Page 333 p.
Acc. No. 36912
Size 21.4 cm.

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	2:7 M0	
	36912	KRISHAN KUMAR. Reference service. Ed 2.

शृंखला प्रक्रिया

2 = Libraray Science

2:7 = Reference Service, Library Science

संकेत
(Tracing)

Reference service, Library science. Library science. Krishan Kumar.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1
(Class Index Entry - 1)

	REFERENCE SERVICE, LIBRRARY SCIENCE.	
	Classified	For documents in this Class and its Subdivisions, see the Part of the catalogue under the Class Number 2:7

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2
(Class Index Entry - 2)

	LIBRARY SCIENCE.	
.	Class Number	For documents 2

लेखक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Author – Book Index Entry)

	KRISHAN KUMAR.	
		Reference service. Ed 3. 2:7 M0

टिप्पणी :

1. ग्रन्थ का लेखक बिना कुलनामधारी भारतीय लेखक होने के कारण इसे नियमानुसार बड़े अक्षरों (Capital Letters) में लिखा गया है।

4.4 योजकीय कुलनामधारी लेखक

मुखपृष्ठ 6
(योजकीय कुलनामधारी लेखक)

EVERGREEN INDUSTRIAL PSYCHOLOGY

Cecil Day-Lewis
(Fifth Revised Edition)

NEW YORK,
LITTLE BROWN & CO.,
1999

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No. S N 99 Acc. No. 15521
Pages x, 520 p. Size 19 x 13 cm.
H.T.P. : American Psychology Series. Edited by John Young. Number Fifteen.

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	S N99	
	15521	DAY-LEWIS (Cecil). Evergreen industrial psychology. Ed 5. (American psychology series. Ed by John Young. 15).

शृंखला प्रक्रिया

S = Psychology

संकेत
(Tracing)

Psychology. Day-Lewis (Cecil). American psychology series. Lewis (Cecil Day -). Young (John), Ed.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि
(Class Index Entry)

	PSYCHOLOGY.	
	Classified	For documents in this Class and its Subdivisions, see the Part of the catalogue under the Class Number S

लेखक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Author – Book Index Entry)

	DAY-LEWIS (Cecil).	
		Evergreen industrial psychology. Ed 5. S N99

ग्रन्थमाला ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Series – Book Index Entry)

	AMERICAN PSYCHOLOGY SERIES.	
	15	Day-Lewis : Evergreen industrial psychology. Ed 5. S N99

वैकल्पिक नाम . नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि
(Alternative Name – Cross Refrence Index Entry)

	LEWIS (Cecil Day -).	
		See DAY-LEWIS (Cecil).

ग्रन्थमाला सम्पादक - नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि
(Editor of Series – Cross Reference Index Entry)

	YOUNG (John), Ed.	
		See AMERICAN PSYCHOLOGY SERIES.

टिप्पणी :

1. ग्रन्थ के लेखक का कुलनाम योजकीय कुलनाम होने के कारण इसे नियमांक JA62 के अनुसार नियमानुसार अंकित किया गया हैं।
2. मुख्य प्रविष्टि तथा ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियों में संस्करण विवरण नियमांक ME21 एवं ME22 के अनुसार लिखा गया है। (देखिये रंगनाथन कृत केटालागिंग प्रेक्टिस पृष्ठ 67)

टिप्पणी : इस इकाई में वर्णित तारांकित (*) नियम रंगनाथन कृत केटालागिंग प्रेक्टिस से लिये गये हैं।

5. अभ्यासार्थ मुखपृष्ठ (Title Pages for Practice)

मुखपृष्ठ 1

(कुलनामधारी यूरोपीय लेखक, सहकारक एवं ग्रंथमाला)

GEORGE H. SABINE

A History of Political Theory

Fourth Revised Edition

Revised by

Thomas Landen Thorson

Oxford & IBH Publishing Co.,

New Delhi Calcutta

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	Wv	N73	Acc. No.	16677
Pages	871		Size	21 cm.
H.T.P. :-	Oxford series in political science. Number Fifteen.			

मुखपृष्ठ 2

(एकल व्यक्तिगत यूरोपीय लेखक, संस्करण ग्रंथमाला)

An Illustrated History of Science

Second Revised Edition

By

F.Sherwood Taylor

Illustrated by

R.A. Thompson

HEIMANN EDUCATION BOOKS

London, 1999

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	Av1'N9	N99
Acc. No.	12345	
Pages	ix, 246 p	
Size	18.9 cm.	
H.T.P.	Modern Science Series.	

मुखपृष्ठ 3

(एकल व्यक्तिगत यूरोपीय लेखक, लेखक का पूरा नाम व जन्म वर्ष मुखपृष्ठ के पश्च पृष्ठ से प्राप्य)

CARIO DOCUMENTS

The Inside story of Nasser and his

Relationship with World leaders

by

M.H.Heikal

London

Stemens & Sons Ltd.,

1973

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	V677:191'N7	L3
Acc. No.	95613	
Pages	ix, 214	
H.T.P.	Mohammaed Hosnein Heikal (Born 1917)	

मुखपृष्ठ 4

(कुलनामधारी एकल व्यक्तिगत भारतीय लेखक)

PRINCIPLES OF AUDITING

Theory and Practice

by

Dr. B.L. Mathur

(11th edition)

Jaipur

R.B.S.A., 1991.

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	X:8J	N91	Acc. No.	67771
Pages	iv, 345		Size	22.5

मुखपृष्ठ 5

(एकल व्यक्तिगत भारतीय लेखक, लेखक का पूरा नाम मुखपृष्ठ के पश्च पृष्ठ से प्राप्य एवं ग्रंथमाला)

Studies in the Origin of Buddhism

By

G.C.Pande

Department of Ancient Histroy, Culture and Archaeology

University of Allahabad

1957

Publication Unit,

Allahabad University, Allahabad

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

@	Govind Chandra Pande	Call No.	Q4	N57
Acc. No.	2515	Size	22 cm.	
Pages	It has nine preliminary pages numbered in Roman and 591 textula pages numbered in Indo-Arabic numerals.			
H.T.P.	Ancient History Research Series-1.			

मुखपृष्ठ 6

(एकल व्यक्तिगत लेखक-योजकीय कुल नाम एवं ग्रन्थामाला)

A LECTURE ON LECTURES

Introductory Volume

Sir Arthur Quiller-Couch

The Hogarth Press Ltd.,

London

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	T : 397 F7
Acc. No.	15334
Pages	418
Size	18 cm
	First Published in 1927 Second impression 1956
H.T.P.	Hogarth Lectures on Literature.
	Series Editors : George Rylands and Leonard Woolf. No XII

6. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची (Bibliography)

1. गौतम (जे एन) एवं निरजंन सिंह: एडवान्सड केटालागिंग, आगरा, वाई के पब्लिशर्स, 1998.
2. सूद (एस पी): क्रियात्मक सूचीकरण-सी सी सी. जयपुर, राज पब्लिशिंग हाउस, 2016.
3. वर्मा (ए के): क्रियात्मक अनुवर्ग सूचीकरण. रायपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1999.
4. Krishan Kumar : An introduction to cataloguing practice. New Delhi, Vikas, 1996.
5. Ranganathan (S R) : Classified catalogue code etc. Ed 5. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.
6. Ranganathan (S R) : Cataloguing practice. Ed 2. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.

इकाई 3

व्यक्तिगत सहलेखक: दो सहलेखकों द्वारा रचित ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण (Joint Personal Authors : Practical Cataloguing of Books Involving Two Joint Authors)

उद्देश्य (Objectives)

1. दो व्यक्तिगत सहलेखकों द्वारा रचित ग्रन्थों के सूचीकरण के नियमों से परिचित कराना।
2. ऐसे ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण सीखना।

संरचना (Structure)

1. व्यक्तिगत सहलेखक
   1.1 परिभाषा
   1.2 शीर्षक का वरण एवं उपकल्पन
2. दो व्यक्तिगत सहलेखकों द्वारा रचित ग्रन्थों का उपकल्पन
3. दो व्यक्तिगत सहलेखकों द्वारा रचित ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण
4. अभ्यासार्थ मुखपृष्ठ
5. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची

1. व्यक्तिगत सहलेखक (Joint Personal Authors)

जब दो या दो से अधिक व्यक्तिगत सहलेखक संयुक्त रूप से किसी ग्रन्थ की रचना करते हैं तो उन्हें व्यक्तिगत सहलेखक कहते हैं। आंग्ल भाषा में दो या अधिक लेखकों द्वारा ग्रन्थ रचना में सहयोग करने पर रचना को -'जाइंट ऑथरशिप' (Joint Authorship), 'मल्टीपल ऑथरशिप' (Multiple Authorship) अथवा 'शेयर्ड ऑथरशिप' (Shared Authorship) वाली रचना कहा जाता है। ये तीनों समानार्थी शब्द हैं।

1.1 परिभाषा (Definition)

सी सी सी में सहलेखक को निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किया गया है -

"दो या दो से अधिक व्यक्तिगत या समष्टि लेखक जो कि ग्रन्थ में अभिव्यक्त विचारों के लिये संयुक्त रूप से जिम्मेदार हों तथा जिसमें किसी भी लेखक के अंश की जिम्मेदारी न तो स्पष्ट की गई हो तथा न ही अलग की जा सकती हो।"

ए ए सी आर-2 में सहलेखक की निम्नलिखित परिभाषा दी गई है -

"एक व्यक्ति जो ऐसे ग्रन्थ की रचना के लिये एक अथवा अधिक व्यक्तियों के साथ सहयोग करता है, जिसमें प्रत्येक सहयोगी का कार्य समान होता है।"

1.2 शीर्षक का वरण एवं उपकल्पन (Choice and Rendering of Heading)

उपर्युक्त नियमांक के अनुसार में सहलेखकों द्वारा रचित ग्रन्थों के शीर्षक का वरण किया होगा। सी सी सी सूची संहिता ने सहलेखकों को उपकल्पन की दृष्टि से दो भागों में विभक्त किया है-

(i) दो सहलेखकों द्वारा रचित ग्रन्थ

(ii) तीन या अधिक सहलेखकों द्वारा रचित ग्रन्थ।

2. दो व्यक्तिगत सहलेखकों द्वारा रचित ग्रन्थों का उपकल्पन (Rendering of Headings of Books Written by Two Joint Authors)

नियमांक MD32* . यदि मुखपृष्ठ पर दो तथा मात्र दो ही सहलेखकों के नाम दिये गये हों, तो दोनों नामों का प्रयोग शीर्षक के रूप में किया जायेगा। दोनों नाम मुखपृष्ठ पर दिये गये क्रम में लिखे जायेंगे तथा उन्हें योजक शब्द and द्वारा जोड़ा जायेगा।

उदाहरणार्थ -

SRIVASTAVA (S N) and VERMA (S C).

नियमांक MK12 के अनुसार दो सहलेखकों की अवस्था में दोनों लेखकों के नाम से ग्रन्थ मांगने वाले पाठकों की अभिगम पूर्ति हेतु दो ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टियों का निर्माण किया जायेगा। पहली ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि में तो लेखकों के नाम उसी क्रम में लिखे जायेंगे, जिस क्रम में मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक में लिखे गये हैं तथा दूसरी ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि में उनके नाम क्रम परिवर्त (Permutation) करके अर्थात् दूसरा नाम पहले स्थान पर तथा पहला नाम दूसरे स्थान पर लिखा जायेगा।

3. दो व्यक्तिगत सहलेखकों द्वारा रचित ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण (Practical Cataloguing of Books Involving Two Joint Personal Authors)

मुखपृष्ठ 1

(दो व्यक्तिगत सहलेखक, ग्रन्थमाला एवं ग्रन्थमाला सम्पादक)

The Fundamentals
of
Library Classification

by

BERNARD I. PALMER

A. J. WELLS

London

Allen & Unwin Ltd.

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Copyright Year		1951
Bernard Ira Palmer		(1910-)
Arthur James Wells		(1915-)
Call No.	2:51	J 1;2
Pages	215	
Size	18.9 cm.	
Acc. No.	14416	
H.T.P. :	Practical Library Handbooks. 12. Edited by Duncan Gray.	

मुख्य प्रविष्टि

(Main Entry)

	2: 51	J1;2
	James) (1915). 12). 41416	PALMER (Bernard Ira) (1910) and WELLS (Author Fundamentals of library classification. (Practical library handbooks. Ed by Duncan Gray.

संकेत

(Tracing)

Classification, Library science.
Library science.

Palmer (Bernard Ira) (1910) and Well (Arthur James) (1915).
Wells (Arthur James) (1915) and Palmer (Bernard Ira) (1915).
Practical library handbooks.

Gray (Duncan), Ed.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1

(Class Index Entry - 1)

	CLASS	FICATION, LIBRARY SCIENCE.
	see the Number	For documents in this Class and its Subdivisions, Classified Part of the catalogue under the Class 2:51

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2

(Class Index Entry - 2)

	LIBRAR	Y SCIENCE.
	Class N	For documents ..... umber 2

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि-1

(Author - Book Index Entry - 1)

	PALME	R (Bernard Ira) (1910) and WELLS (Arthur James)
	(1915).	Fundamentals of library classification. 2: 51 J1;2

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि-लेखक-2

(Author – Book Index Entry - 2)

	WELL	S (Arthur James) (1915) and PALMER (Bernard Ira)
	(1910).	Fundamentals of library classification. 2: 51 J1;2

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि-ग्रन्थमाला
(Series – Book Index Entry)

	PRACT	CAL LIBRARY HANDBOOKS.
	12	Palmer and Wells : Fundamentals of library classification. 2: 51 J1;2

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि-ग्रन्थमाला सम्पादक
(Editor of Series – Cross Reference Index Entry)

	GRAY (Duncan), Ed.	
		See PRACTICAL LIBRARY HANDBOOKS.

टिप्पणी :

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का वरण एवं उपकल्पन नियमांक MQ 32 एवं MQ 12 के अनुसार ही किया गया है। चूँकि मुखपृष्ठ के पिछले पृष्ठ पर लेखकों के पूरे नाम उपलब्ध हैं, इसलिए नियमांक JA4 के अनुसार पूरे नाम का प्रयोग शीर्षक में किया गया है। नियमांक ED83 व JA5 के अनुसार लेखकों के जन्म वर्ष भी वृत्ताकार कोष्ठक में लिखे गये हैं।
2. अन्य सभी इतर प्रविष्टियां इकाई 1 में वर्णित नियमों के अनुसार बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ 2

(दो व्यक्तिगत सहलेखक, सहकारक, ग्रन्थमाला एवं ग्रन्थमाला सम्पादक)

THE CRISIS OF INDIAN PLANNING

Economic Policy in the 1960's

Dr. P. STREETEN

and

Dr. M. LIPTON

Edited by

John Bulls

OXFORD

Oxford University Press

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

B.T.P. : First edition 1965.

Acc. No. 3798

Call No. X:75.44'N7 K8

Size 22 cm.

Pages x,312

H.T.P. : Indian economy studies series. No. XIV, Chief Editor : E.L. Lewis

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	X:75.44	'N7 K8
	1960's. Ed 14). 3798	STREETEN (P) and LIPTON (M). Crisis of Indian planning : Economic policy in the by John Bulls. (Indian economy studies series. Ed by E L Lewis.

संकेत
(Tracing)

India, Artificial control, Economics.
Artificial control, Economics.
Economics.

Streeten (P) and Lipton (M).
Lipton (M) and Streeten (P).
Indian economy studies series.
John (Bulls), Ed.

Planned economy.
Lewis (E L), Ed.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1

(Class Index Entry - 1)

	INDIA, ARTIFICIAL CONTROL, ECONOMICS.	
	see the Number	For documents in this Class and its Subdivisions, Classified Part of the catalogue under the Class X:75.44

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2

(Class Index Entry - 2)

	ARTIFICIAL CONTROL, ECONOMICS.	
	Class Number	For documents X:75

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-3

(Class Index Entry - 3)

	ECONOMICS.	
	Class Number	For documents X

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि-1

(Author - Book Index Entry - 1)

	STREETEN (P) and LIPTON (M).	
		Crisis of Indian planning. X:75.44'N7 K8

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि-2
(Author – Book Index Entry - 2)

	LIPTON	(M) and STREETEN (P).
		Crisis of Indian planning. X:75.44'N7 K8

सहकारक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Collaborator – Book Index Entry)

	BULLS	(John), Ed.
		Streeten and Lipton : Crisis of Indian planning. X:75.44'N7 K8

ग्रन्थमाला - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Series – Book Index Entry)

	INDIAN	ECONOMY STUDIES SERIES.
	14	Streeten and Lipton : Crisis of Indian planning. X:75.44'N7 K8

वैकल्पिक नाम . नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि
(Alternate Name – Cross Reference Index Entry)

	PLANNED	ECONOMY.
		See ARTIFICIAL CONTROL.

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि-ग्रन्थमाला सम्पादक
(Editor of Series – Cross Reference Index Entry)

	LEWIS	(E L), Ed.
		See INDIAN ECONOMY STUDIES SERIES.

टिप्पणी : 1 मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का वरण एवं उपकल्पन नियमांक MD32 एवं MK12 के अनुसार किया गया है।

2. अन्य सभी सहायक प्रविष्टियां इकाई 1 में वर्णित नियमों के अनुसार बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ 3

(दो व्यक्तिगत सहलेखक, दो सहकारक ग्रन्थमाला एवं ग्रन्थमाला सम्पादक)

The Fundamentals of Teaching Techniques

by

Robert R. James & Edward Shills

Edited by

James Bull

John David

London

ALLEN & UNWIN LTD.

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Copyright Year	1960			
Robert Ray James	(1910-)			
Edward Shills	(1915-)			
Call No.	T:3	K0	Acc. No.	71416
Size	18.9 cm.		Pages	215
H.T.P. :	Modern Education Series 12. Edited by Duncan Shills.			

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	T: 3 K0	
	(1915). Bull and 71416	JAMES (Robert Ray) (1910) and SHILLS (Edward) Fundamentals of teaching techniques. Ed by James John David. (Modern education series. Ed by Duncan Shills.12).

शृंखला प्रक्रिया

T = Education

T : 3 = Teaching Technique, Education

संकेत
(Tracing)

Teaching technique, Education. Education. James (Robert Ray) (1910) and Shills (Edward) (1915). Shills (Edward) (1915) and James (Robert Ray) (1910). Bull (James) and David (John). David (John) and Bull (James). Modern education series. Shills (Duncan), Ed.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1
(Class Index Entry - 1)

	TEACHING TECHNIQUE, EDUCATION.	
	see the Number	For documents in this Class and its Subdivisions, Classified Part of the catalogue under the Class T:3

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2
(Class Index Entry - 2)

	EDUCATION.	
	Class Number	For documents ..... T

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि-1
(Author - Book Index Entry - 1)

	JAMES	(Robert Ray) (1910) and SHILLS (Edward)
	(1915).	Fundamentals of teaching techniques. T:3 K0

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि-2
(Author – Book Index Entry - 2)

	SHILLS	(Edward) (1915) and JAMES (Robert Ray)
	(1910).	Fundamentals of teaching techniques. T:3 K0

सहकारक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - 1
(Collaborator - Book Index Entry - 1)

	BULL	(James) and DAVID (John), Ed.
		James and Shills : Fundamentals of teaching
	techniques.	T:3 K0

सहकारक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - 2

(Collaborator - Book Index Entry - 2)

	DAVID	(John) and BULL (James), Ed.
		James and Shills : Fundamentals of teaching techniques. T:3 K0

ग्रन्थमाला - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

(Series – Book Index Entry)

	MODERN EDUCATION SERIES.	
	12	James and Shills : Fundamentals of teaching techniques. T:3 K0

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि-ग्रन्थमाला सम्पादक

(Editor of Series – Cross Reference Index Entry)

	SHILLS	(Duncan), Ed.
		See MODERN EDUCATION SERIES.

टिप्पणी :

1 मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक वरण इस इकाई के मुखपृष्ठ 1 एवं 2 के अनुसार किया गया है।

2. अन्य सभी सहायक प्रविष्टियां इकाई 1 में वर्णित नियमानुसार बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ 4

(दो भारतीय सहलेखक, एक लेखक बिना कुलनाम का एवं दो विभिन्न प्रकार के सहकारक)

TRADING IN LPG

By

Shankar Dayal Sharma

and

Prof. Om Prakash

Revised by

S.P. Mittal

Edited by

Ramesh Kumar

Delhi,

Metropolitcan Book Co.,

1999

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	X8 (F558):5	N99	Acc. No.	331144
Pages	xiii, 414 p.		Size	22 x 15 cm.

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	X8 (F558):5 N99	
	Ramesh 331144	SHARMA (Shankar Dayal) and OM PRAKASH. Trading in LPG. [Rev ed]. Rev by S P Mittal ; ed by Kumar.

शृंखला प्रक्रिया

X	=	Economics.
X8	=	Industry, Economics.
X8(F558)	=	Fuel Gas, Industry.
X8(F558):5	=	Trade, Fuel Gas.

संकेत
(Tracing)

Trade, Fuel Gas. Fuel Gas, Industry. Industry, Economics. Economics. Sharma (Shankar Dayal) and Om Prakash. Om Prakash and Sharma (Shankar Dayal). Mittal (S P), Rev. Ramesh Kumar, Ed.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1
(Class Index Entry - 1)

	TRADE,	FUEL GAS.
	see the Number	For documents in this Class and its Subdivisions, Classified Part of the catalogue under the Class X8(F558) : 5

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2
(Class Index Entry - 2)

	FUEL GAS, INDUSTRY.	
	Class Number	For documents ..... X8(F558)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-3
(Class Index Entry - 3)

	INDUSTRY, ECONOMICS.	
	Class Number	For documents X8

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-4
(Class Index Entry - 4)

	ECONOMICS.	
	Class Number	For documents X

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि-1
(Author - Book Index Entry - 1)

	SHARMA (Shankar Dayal) and OM PRAKASH.	
		Trading in LPG. [Rev ed]. X8(F558):5 N99

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - 2
(Author – Book Index Entry - 2)

	OM PRAKASH and SHARMA (Shankar Dayal).	
		Trading in LPG. [Rev ed]. X8(F558):5 N99

सहकारक-ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Collaborator– Book Index Entry)

	MITTAL	(S P), Rev.
		Sharma and Om Prakash : Trading in LPG. [Rev ed]. X8 (F558):5 N99

ग्रन्थमाला सम्पादक - नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि
(Editor of Series – Cross Reference Index Entry)

	Ramesh	Kumar, Ed.
		Sharma and Om Prakash : Trading in LPG. [Rev ed]. X8 (F558):5 N99

टिप्पणी :

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक अनुच्छेद में बिना कुलनाम धारी भारतीय लेखक को बड़े अक्षरों (Block Letters) में लिखा गया है।
2. ग्रन्थ में संशोधक का नाम दिया होने के कारण, आख्या अनुच्छेद में [Rev ed], अंकित किया गया है। (देखिये रंगनाथनकृत केटालांगिग प्रेक्टिस, पृष्ठ संख्या 78)
3. आख्या अनुच्छेद में दो विभिन्न प्रकार के सहकारकों को आख्या अनुच्छेद के नियमानुसार सेमीकोलन द्वारा जोड़ा गया है।

टिप्पणी : इस इकाई में वर्णित तारांकित (*) नियम रंगनाथन कृत केटालागिंग प्रेक्टिस से लिये गये हैं।

4. अभ्यासार्थ मुखपृष्ठ (Title Pages for Practice)

मुखपृष्ठ 1

(दो सहलेखक एवं ग्रन्थामाला)

The Teaching of Psychology

(Methods, Content and Context)

by

John Radford

and

David Rose

John Niley & Sons, New York, 1980

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	:	T:3(S) N80
Acc. No.	:	8382
Pages	:	ix, 219
H.T.P.	:	Wiley Educational Series XV. Edited by John Forester

---

मुखपृष्ठ 2

(दो सहलेखक, सहकारक एवं ग्रन्थमाला)

A STUDENT HANDBOOK OF MICROBIOLOGY

(Second Edition)

by

LINCOLN TALZ

and

EDUARDO ZEIGER

Revised by

JAMES BOLL

London

Palgrave Macmillan Ltd., 2002

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	G91y P02	Acc. No.	775511
Pages	viii, 295	Size	22.9 cm.
H.T.P.	Macmillan Microbiology Series. No. VIII.		

मुखपृष्ठ 3

(दो व्यक्तिगत भारतीय सहलेखक, ग्रन्थमाला एवं ग्रन्थमाला सम्पादक)

COLLEGE ALGEBRA

Dr. D.K. Mishra

Dr. B.K. Sharma

Second Edition

Delhi

S. Chand & Co.

1991

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	B2 N91	Pages	219
Size	25 cm.	Acc. No.	4326
H.T.P.	Studies in Mathematical and Related Topics. No. Five. Edited by J.K. Khanna		

मुखपृष्ठ 4

(दो व्यक्तिगत सहलेखक, एकल सहकारक, ग्रन्थमाला एवं ग्रन्थमाला सम्पादक)

The Strucutre of American Industry

With Case Studies of Labour Problems in 1960's

A Bibliography

by

Gwendolen M. Carter

and

John H. Hertz

Edited by

Walter Admas, Ph. D.

Third Edition

Tindal & Co., London

1968

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Pages	ix, 211		Size	21.1 cm
Call No.	X8(A) : 9.73aN7	K9	Acc. No.	44771
H.T.P.	American Industrial Problem series No. IX. General Editor of Series : J.K. Sharp.			

मुखपृष्ठ 5

(दो यूरोपीय सहलेखक, सहकारक एवं ग्रन्थमाला एवं ग्रन्थमाला सम्पादक)

THE UNIVERSITY LIBRARY

The Organization, Administration and Function

of Academic Libraries

by

Louis Round Wilson

&

Maurice F. Tauber

Edited by

Richard S.Angell

Second edition

Columbia University Press,

New York, 1956

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	234	N50	Acc. No.	32145
Pages	xiv, 335 p.		Size	19 x 14 cm.
H.T.P.	Columbia Studies in Library Science. Edited by Robert D. Leigh. No. 8			

5. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची (Bibliography)

1. गौतम (जे एन) एवं निरजंन सिंह: एडवान्सड केटालागिंग. आगरा, वाई के पब्लिशर्स, 1998.
2. सूद (एस पी): क्रियात्मक सूचीकरण-सी सी सी. जयपुर, राज पब्लिशिंग हाउस, 2016.
3. वर्मा (ए के): क्रियात्मक अनुवर्ग सूचीकरण. रायपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1999.
4. Krishan Kumar : An introduction to cataloguing practice. New Delhi, Vikas, 1996.
5. Noorul Hasan and others : Cataloguing practice. New Delhi, Gitanjali Publishing House, 1984.
6. Ranganathan (S R) : Classified catalogue code etc. Ed 5. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.
7. Ranganathan (S R) : Cataloguing practice. Ed 2. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.

इकाई 4

व्यक्तिगत सहलेखक : तीन या तीन से अधिक सहलेखकों द्वारा रचित ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण (Joint Personal Authors : Practical Cataloguing of Books Involving Three or More Joint Authors)

उद्देश्य (Objectives)

1. तीन व तीन से अधिक सहलेखकों के शीर्षक उपकल्पन के नियमों को परिभाषित करना।
3. तीन या अधिक सहलेखकों द्वारा रचित ग्रन्थों के क्रियात्मक सूचीकरण को परिचित कराना।

संरचना (Structure)

1. तीन या तीन से अधिक व्यक्तिगत लेखकों द्वारा रचित ग्रन्थों के शीर्षक का वरण एवं उपकल्पन
2. तीन या तीन से अधिक व्यक्तिगत लेखकों द्वारा रचित ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण
3. अभ्यासार्थ मुखपृष्ठ
4. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची

1. तीन या तीन से अधिक व्यक्तिगत लेखकों द्वारा रचित ग्रन्थों के शीर्षक का वरण एवं उपकल्पन (Choice and Rendering of Heading of Books involving Three or More Personal Authors)

यदि तीन या तीन से अधिक लेखक संयुक्त रूप से ग्रन्थ की रचना अर्थात् ग्रन्थ में निहित विचारों के लिये उत्तरदायी हों, तो उन्हें तीन या अधिक व्यक्तिगत सहलेखक माना जाता है।

इस प्रकार के ग्रन्थों के शीर्षक निर्माण के लिये नियमांक MD33* प्रस्तावित किया गया है। इसके अनुसार ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर दिये गये सहलेखकों के नाम में से, पहले सहलेखक के नाम के अन्तर्गत शीर्षक का निर्माण किया जाता है तथा सभी सहलेखकों को छोड़ दिया जाता है।

यहां यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि तीन या अधिक सहलेखकों में से केवल प्रथम सहलेखक के नाम को ही शीर्षक के रूप में क्यों प्रयोग किया जाता है। इसका पाठकों की स्मरण शक्ति पर आधारित है। सामान्य दो सहलेखकों द्वारा रचित ग्रन्थों को पाठक दोनों नामों से मांग करते हैं, वहीं तीन या अधिक सहलेखकों के ग्रन्थों को अधिकांश पाठक प्रथम सहलेखक के नाम से ही मांग करते हैं।

नियमांक MD33* - यदि मुखपृष्ठ पर तीन या अधिक सहलेखकों के नाम दिये गये हों तो मात्र प्रथम लेखक के नाम का प्रयोग शीर्षक हेतु किया जायेगा तथा उसके नाम के बाद 'and others' शब्द जोड़ा जायेगा।

उदाहरणार्थ -

SAXENA (J P) and others.

SAHRMA (Ramesh Chandra) and others.

इस अवस्था में मात्र पहले सहलेखक के नाम के अन्तर्गत ही लेखक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि बनाई जाती है।

2. तीन या तीन से अधिक व्यक्तिगत लेखकों द्वारा रचित ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण (Practical Cataloguing of Books Involving Three or More Joint Personal Authors)

मुखपृष्ठ 1

(दो से अधिक व्यक्तिगत सहलेखक (प्रथम लेखक मुस्लिम बिना कुलनाम वाला), ग्रन्थमाला एवं दो ग्रन्थमाला सम्पादक)

A Survey of Social Conditions in Kanpur

By

Mohammed Fazal

P.C. Joshi

and

C. Chandra Shekhar

Oxford University Press,

Bombay Calcutta Madras

1981

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	Y. 445236'N8t4 N81
Acc. No.	7711
Pages	514
Size	22 cm.
H.T.P	Oxford Sociology Series. No. III. Edited by A.C. Sharma and Chandra Prakash.

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	Y. 445236'N8t4 N81	
	Chandra 7711	MOHAMMED FAZAL and others Survey of social conditions in Kanpur. (Oxford sociology series. Ed By A C Sharma and Prakash. 3)

संकेत
(Tracing)

	Survey, Kanpur, Sociology. Kanpur, Sociology. Sociology. Mohammed Fazal and others. Oxford sociology series. Sharma (A C) and Chandra Prakash, Ed. Chandra Prakash and Sharma (A C), Ed.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1
(Class Index Entry - 1)

	SURVEY, KANPUR, SOCIOLOGY.	
	see the Number	For documents in this Class and its Subdivisions, Classified Part of the catalogue under the Class Y.445236'N8t4

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2
(Class Index Entry - 2)

	KANPUR, SOCIOLOGY.	
	Class Number	For documents Y.445236

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-3
(Class Index Entry - 3)

	SOCIOLOGY.	
	Class Number	For documents ..... Y

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Author - Book Index Entry)

	MOHAMMED FAZAL and others.	
		Survey of social conditions in Kanpur. Y. 445236'N8t4 N81

ग्रन्थमाला - निर्देशी प्रविष्टि
(Series - Book Index Entry)

	OXFORD SOCIOLOGY SERIES.	
	3	Mohammed Fazal and others. Survey of social conditions in Kanpur. Y. 445236'N8t4 N81

ग्रन्थमाला सम्पादक निर्देशी प्रविष्टि-1

(Editor of Series - Cross Reference Index Entry - 1)

	SHARMA (A C) AND CHANDRA PRAKASH, Ed.	
		See OXFORD SOCIOLOGY SERIES.

ग्रन्थमाला सम्पादक निर्देशी प्रविष्टि

(Editor of Series - Cross Reference Index Entry - 2)

	CHANDRA PRAKASH AND SHARMA (A C), Ed.	
		See OXFORD SOCIOLOGY SERIES.

टिप्पणी :

1 मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का वरण नियमांक की मुख्य संख्या MD1 व उकपल्पन MD21 व MD33* के अनुसार ही किया गया है। प्रथम लेखक का नाम बिना कुलनाम वाला मुस्लिम नाम होने के कारण, पूरे व्यक्तिनाम को ही प्रविष्टि पद के रूप में प्रयुक्त किया गया है।

2. अन्य सभी प्रविष्टियां इकाई 1 में वर्णित नियमों के अनुसार बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ 2

(दो से अधिक सहलेखक एवं दो भिन्न प्रकार के सहकारक)

MECHANICS

By

Charles Kittel

Walter D. Knight

Malvin A. Ruderman

Revised by

Clark Helmholz

Illustrated by

Mrs. Walter D. Moyer

LONDON

Macmillan & Co., 1973

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	B7 L3;6
Acc. No.	4491
Pages	xiv, 426
Size	24 cm.

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	B7 L3;6	
	by Walter D Moyer. 4491	KITTEL (Charles) and others. Mechanics. [Rev ed]. Rev by Clark Helmholz; ill

संकेत
(Tracing)

Mechanics, Mathematics. Mathematics. Kittle (Clarles) and others. Helmholz. (Clark), Rev. Moyer (Walter D). Ill.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1
(Class Index Entry - 1)

	MECHANICS, MATHEMATICS.	
	see the Number	For documents in this Class and its Subdivisions, Classified Part of the catalogue under the Class B7

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2
(Class Index Entry - 2)

	MATHEMATICS.	
	Class Number	For documents ..... B

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Author - Book Index Entry)

	KITTLE (Clarles) and others.	
		Mechanics. [Rev ed]. B7 L3;6

सहकारक निर्देशी प्रविष्टि - 1
(Collaborator - Book Index Entry - I)

	HELMHOLZ (Clark), Rev.	
		Kittle and others : Mechanics. [Rev ed]. B7 L3;6

सहकारक निर्देशी प्रविष्टि-2

(Collaborator - Book Index Entry - 2)

	MOYER	(Walter D), Ill.
		Kittle and others : Mechanics. [Rev ed]. B7 L3;6

टिप्पणी :

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का वरण नियमांक व उपकल्पन मुखपृष्ठ 3 की मुख्य प्रविष्टि के समान ही किया गया है।
2. संस्करण की सूचना इकाई 3 के मुखपृष्ठ की मुख्य प्रविष्टि के समान ही दी गई है।
3. दोनों प्रकार के सहकारकों के नाम को आख्या अनुच्छेद में अंकित किया जाता है और उन्हें सेमीकोलन (;) चिन्ह द्वारा अलग किया जाता है।
4. अन्य सभी इतर प्रविष्टियां इकाई 1 में वर्णित नियमानुसार बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ 3

(दो से अधिक व्यक्तिगत सहलेखक, ग्रन्थमाला एवं ग्रन्थमाला सम्पादक)

ADOLESCENT SUICIDAL BEHAVIOUR

By.

David K. Curran, Marian Duckworth

Theressa J. Flynn

&

Seam Sullivan

(Edition 3)

New York,

National Publishers, 1889

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	Y12:45111	N89	Acc. No.	556633
Pages	xii, 367		Size	25.3 cm.

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	Y12:45111 N89	
	556633	CURRAN (David K) and others. Adolescent suicidal behaviour. Ed 3.

संकेत
(Tracing)

Suicide, Crime, Social pathology, Youth.
Crime, Social Pathology, Youth.
Social Pathology, Youth, Sociology.
Youth, Sociology.
Sociology.

Curran (David K) and others.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1
(Class Index Entry - 1)

	SUICIDE, CRIME, YOUTH.	
	see the Number	For documents in this Class and its Subdivisions, Classified Part of the catalogue under the Class Y12:45111

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2

(Class Index Entry - 2)

	CRIME,, SOCIAL PATHOLOGY, YOUTH.	
	Class Number	For documents Y12:45

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-3

(Class Index Entry - 3)

	SOCIAL PATHOLOGY, YOUTH.	
	Class Number	For documents Y12:4

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-4

(Class Index Entry - 4)

	YOUTH, SOCIOLOGY.	
	Class Number	For documents Y12

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-5

(Class Index Entry – 5)

	SOCIOLOGY.	
	Class Number	For documents ..... Y

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Author - Book Index Entry)

	CURRAN (David K) and others.	
		Adolescent suicidal behaviour. Ed 3. Y12:45111 N89

टिप्पणी :

1 मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का वरण नियमांक MD1 व उपकल्पन नियमांक MD21 व MD33* के अनुसार किया गया है।

2. अन्य सभी सहायक प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमानुसार बनाई गई हैं।

टिप्पणी : इस इकाई में वर्णित तारांकित (*) नियम रंगनाथन कृत केटालागिंग प्रेक्टिस से लिये गये हैं।

3. अभ्यासार्थ मुखपृष्ठ (Title Pages for Practice)

मुखपृष्ठ 1

(दो से अधिक व्यक्तिगत सहलेखक, ग्रन्थमाला एवं ग्रन्थमाला सम्पादक)

The Theory and Practice of
International Relations

Third Edition

(Revised and Enlarged)

By

Fred A. Sonderman

Willam C. Cason

David S. Mclellan

PRENTICE HALL Inc.

Eaglewood Cliffs,

New Jersey

1975

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	W:19	L5	Acc. No.	6644
Size	19.3 cm.		Pages	xii, 456
H.T.P. :	Prentice-Hall Publications in Foreign Relations. No. XXII. Edited by V.A. Pechenev.			

मुखपृष्ठ 2

(तीन से अधिक सहलेखक, सहकारक एंव ग्रन्थमाला)

LINEAR TOPOLOGICAL SPACES

by

Issac Namoika, W.F. Donoghue & G. Baby Price

and

Wendy Robertson

Edited by

Keneth R. Lucas

Princeton

D. Van Nostrand Co., 1983

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	B 316	N83	Acc. No.	22231
Pages	xv, 256		Size	23.5 X 17 cm
H.T.P.	The University Series in Higher Mathematics, 13.			

मुखपृष्ठ 3

(दो से अधिक सहलेखक, ग्रन्थमाला एवं ग्रन्थमाला सम्पादक)

MODERN PROJECTS AND EXPERIMENTS IN

ORGANIC CHEMISTRY

(Fourth Edition)

Prof. Suresh Kumar, Prof. Ramesh Kumar

and

Dr. S.K. Jain

Delhi

S. Chand & Co., 2002

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	E5	P02	Acc. No.	35791
Pages	xii, 219		Size	24.2 cm.
H.T.P.	Modern Chemistry Series No. XII. Edited by Prof. B. Dasgupta.			

मुखपृष्ठ 4

(दो से अधिक व्यक्तिगत सहलेखक एवं सहकारक)

FUNDAMENTAL CONCEPTS IN HUMAN COMMUNICATIONS

Ronald L. Applebaum

Karl W.E. Anatol

Eliss R. Hays

Photographs and Diagrams

by

S. Alstead

Carnfield Press, San Francisco, 1973

A Department of Harper and Row Publishers Inc.

New York Evanston London

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	(P)	L3	Acc. No.	1191
Size	24 cm			
Pages	There are six preliminary pages and 240 text pages.			

मुखपृष्ठ 5

(दो से अधिक सहलेखक, दो सहकारक, ग्रन्थमाला तथा दो ग्रन्थमाला सम्पादक)

Organization, Behaviour And Administration

Cases, Concepts and Research Findings

by

Paul R. Lawrence

Robert C. Katz

John A. Seller

Editors

Amy Winslow

and

Careton B. Joeckel

1961

Homewood

Illiois

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	X.8	K1
Acc. No.	8961	
Pages	xii, 317	
Size	22.8 cm.	
H.T.P. :	The Irwin-Dorsey series in behaviourial science in business. No. 74. Edited by Lowell Martin and N.D. Needham.	

---

4. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची (Bibliography)

1. गौतम (जे एन) एवं निरजंन सिंह: एडवान्सड केटालागिंग. आगरा, वाई के पब्लिशर्स, 1998.
2. सूद (एस पी): क्रियात्मक सूचीकरण-सी सी सी. जयपुर, राज पब्लिशिंग हाउस, 2016.
3. वर्मा (ए के): क्रियात्मक अनुवर्ग सूचीकरण. रायपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1999.
4. Krishan Kumar : An introduction to cataloguing practice. New Delhi, Vikas, 1996.
5. Noorul Hasan and others : Cataloguing practice. New Delhi, Gitanjali Publishing House, 1984.
6. Ranganathan (S R) : Classified catalogue code etc. Ed 5. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.
7. Ranganathan (S R) : Cataloguing practice. Ed 2. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.

इकाई 5

सहकारक शीर्षक: सहकारक के अन्तर्गत प्रविष्ट होने वाले ग्रन्थों का क्रियात्मक सूचीकरण (Practical Cataloguing of Books to be Entered Under Collaborator)

उद्देश्य (Objectives)

1. सहकारक की परिभाषा से परिचित कराना।
2. सहकारक के अन्तर्गत प्रविष्ट होने वाली परिस्थितियों से परिचित कराना।
3. सहकारक के अन्तर्गत प्रविष्ट होने वाली परिस्थितियों की मुख्य समस्याओं से परिचित कराना।
4. सहकारक द्वारा रचित ग्रन्थों के क्रियात्मक सूचीकरण से परिचित कराना।

संरचना (Structure)

1. सहकारक: अर्थ एवं परिभाषा
2. शीर्षक के वरण एवं उपकल्पन के नियम
3. एकल सहकारक
4. दो सहकारक
5. दो से अधिक सहकारक
6. अनेक प्रकार के सहकारक
7. सूचीकृत मुखपृष्ठ
8. अभ्यासार्थ मुखपृष्ठ
9. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची

1. सहकारक: अर्थ एवं परिभाषा (Collaborator : Meaning and Definition)

कई ग्रन्थों का निर्माण स्वतन्त्र लेखों, निबन्धों, कविताओं आदि को संगृहीत करके किया जाता है। इस कार्य को करने वाले व्यक्ति को सम्पादक (Editor) या संकलनकर्ता (Compiler) कहते हैं। इसी प्रकार ग्रन्थ की रचना में लेखक को अन्य प्रकार की सहायता देने वाले व्यक्ति जैसे सहायक (Assistor), चित्रकार (Illustrator), अनुवादक (Translator), संशोधक (Reviser), व्याख्याकार (Commentator), आदि सभी सहयोगियों को सहकारक (Collaborator), कहते हैं। रंगनाथन ने सहकारक को निम्नलिखित प्रकार परिभाषित किया है -

"व्यक्ति या समष्टि निकाय, जो किसी ग्रन्थ और / अथवा उसके लेखक या लेखकों से लेखकत्व के अतिरिक्त गौण रूप से सम्बद्ध है। उदाहरणार्थ - निर्देशक (Director), निदेशक (Guide), सहायक, व्याख्याकार, चित्रकार, तक्षक (Enagraver), संशोधक, सम्पादक, प्रतिवेदक (Reporter), परिचय अथवा प्रस्तावना लेखक, संक्षेपक (Epotomiser), रूपान्तरकार (Adapter), लिब्राटिस्ट (Libratist), संगीत ग्रन्थ का शब्दकार, चित्र ग्रन्थ का शब्दकार।

जब लेखक के नाम के साथ ही सहकारक का नाम मुखपृष्ठ पर अंकित होता है तो उस अवस्था में उसका नाम मुख्य प्रविष्टि के आख्या अनुच्छेद में अंकित किया जाता है। उसके नाम से ग्रन्थ मांगने वाले पाठकों के अभिगम की पूर्ति हेतु सहकारक ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि बनाई जाती है।

2. शीर्षक के वरण एवं उपकल्पन के नियम (Rules of Choice and Rendering of Heading)

सी सी सी सूची संहिता में निम्नलिखित नियम का प्रावधान है -

नियमांक MD1 : शीर्षक का निर्माण निम्नलिखित में से अग्रतम (Earliest) के अनुसार होगा, जिसे ग्रन्थ स्वीकार करता है -

1. एकल व्यक्तिगत लेखक का नाम
2. व्यक्तिगत सहलेखक का नाम
3. समष्टि लेखक का नाम
4. व्यक्तिगत सहलेखक का नाम तथा समष्टि सहलेखक का नाम
5. समष्टि सहलेखक का नाम
6. कृत्रिम नामधारी लेखक या दो अथवा उससे अधिक कृत्रिम नामधारी लेखक
7. सहकारक का नाम
8. सह-सहकारक का नाम
9. ग्रन्थ की आख्या।

उपर्युक्त नियम के अनुसार यदि प्रथम छः प्रकार के लेखकों के नाम ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर अंकित न हों तो सहकारक या सहकारकों के नाम का प्रयोग शीर्षक निर्माण हेतु किया जायेगा।

3. एकल सहकारक (Single Collaborator)

नियमांक MD51 : यदि मुखपृष्ठ पर व्यक्तिगत लेखक का नाम या व्यक्तिगत सहलेखकों के नाम न दिये गये हों अथवा समष्टि लेखक या कृत्रिम नामधारी लेखक या लेखकों के नाम लेखकीय विवरण (Author statement) में न दिये गये हों, बल्कि सहकारक का नाम दिया गया हो तो उस नाम का प्रयोग शीर्षक हेतु किया जायेगा तथा व्यक्ति का पद व्यक्त करते हुये विवरणात्मक पद (Descriptive element) जोड़ा जायेगा। यहां यह स्मरण रखना चाहिए कि हाथ से प्रविष्टि बनाते समय विवरणात्मक पद को रेखांकित करना ओर उसके पूर्व कोमा (,) लगाना आवश्यक है।

उदाहरणार्थ -

1. KULSHRESHTRA (J N), Ed.
2. JAIN (Tikam Chand), Tr and Ed.
3. TRACEY (Kathleen), Comp.

सहकारक शीर्षक की अवस्था में सहकारक के नाम को आख्या अनुच्छेद में देने की आवश्यकता नहीं होती है।

4. दो सहकारक (Two Collaborators)

नियमांक MD54 : यदि मुखपृष्ठ पर एक ही प्रकार के दो सहकारकों के नाम दिये गये हों तो उनके नाम का उपकल्पन सहलेखकों के समान ही किया जायेगा।

उदाहरणार्थ - SHARMA (R C) and VERMA (S K), Ed.

5. दो से अधिक सहकारक (More than Two Joint Collaborators)

एक ही प्रकार के दो से अधिक सहकारकों का उपकल्पन भी दो से अधिक सहलेखकों के समान ही किया जायेगा।

उदाहरणार्थ - ALFRED (John) and others, Ed.

6. अनेक प्रकार के सहकारक (Many Kinds of Collaborators)

नियमांक MD52 : यदि मुखपृष्ठ पर दो या अधिक प्रकार के सहकारकों के नाम दिये गये हों तो मात्र एक ही प्रकार के सहकारक के नाम का प्रयोग शीर्षक हेतु चयन किया जायेगा। उदाहरणार्थ-यदि ग्रन्थ में सम्पादक व चित्रकार, दोनों प्रकार के सहकारक दिये गये हों तो सम्पादक के नाम का प्रयोग शीर्षक हेतु किया जायेगा। चित्रकार के नाम को आख्या अनुच्छेद में लिखा जायेगा।

7. सूचीकृत मुखपृष्ठ (Catalougued Titles)

मुखपृष्ठ 1

(विभिन्न प्रकार के सहकारक)

Handbook of Opthomological Surgery

Edited by

Herbert Gross

Illustrated by

John Smith

Saga India, 2005

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	L185:4:7y8	P05
Acc. No.	17001	
Pages	viii, 414 P.	
Size	22 cm.	

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	L185:4:7y8	P05
	Smith. 17001	CROSS (Herbert), Ed. Handbook of opthomological surgery. Ill by John

संकेत
(Tracing)

	Digest, Surgery, Disease, Eye. Surgery, Disease, Eye. Disease, Eye. Eye, Medicine. Medicine. Cross (Herbert), Ed. Smith (John), Ill. Handbook.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1
(Class Index Entry - 1)

	DIGEST, SURGERY, DISEASE,EYE.	
	see the Number	For documents in this Class and its Subdivisions, Classified Part of the catalogue under the Class L185:4:7y8

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2
(Class Index Entry - 2)

	SURGERY, DISEASE, EYE.	
	Class Number	For documents L185:4:7

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-3
(Class Index Entry - 3)

	DISEASE, EYE.	
	Class Number	For documents L185:4

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-4
(Class Index Entry - 4)

	EYE, MEDICINE.	
	Class Number	For documents L185

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-5
(Class Index Entry - 5)

	MEDICINE.	
	Class Number	For documents L

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Author – Book Index Entry)

	CROSS	(Herbert), Ed.
		Handbook of opthomological surgery. L185:4:7y8 P05

सहकारक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Collaborator – Book Index Entry)

	SMITH	(John), Ill.
		Cross, Ed : Handbook of opthomological surgery. L185:4:7y8 P05

वैकल्पिक नाम - नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि
(Alternative Name – Cross Reference Index Entry)

	HANDBOOK.	
		See DIGEST.

टिप्पणी :

1 शीर्षक का वरण एवं उपकल्पन नियमांक MD52 के अनुसार किया गया है तथा सहकारक के नाम के बाद उसका विवरणात्मक पद जोड़ा गया है।

2 अन्य सभी सहायक प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमानुसार बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ 2

(सह-सहकारक (दो से अधिक) एवं विभिन्न प्रकार के सहकारक)

12 Short Stories

Edited by

Moss Hart, George S Kanfoman, James Moffat

Illustrated by

Arnold Bennett

New York

Parrar & Riviehart, 1933

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	O111, 3x	N33	Acc. No.	93135
Pages	221		Size	22.1 cm.

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	O111,3x	N33.
	93135	HART (MOSS) and others, Ed. Twelve short stories. Ill by Arnold Bennett.

संकेत
(Tracing)

Works, Fiction, English. Fiction, English. English, Literature. Literature. Hart (Moss) and others, Ed. Bennett (Arnold), Ill.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1

(Class Index Entry - 1)

	WORKS, FICTION, ENGLISH.	
	see the Number	For documents in this Class and its Subdivisions, Classified Part of the catalogue under the Class O111,3x

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2

(Class Index Entry - 2)

	FICTION, ENGLISH.	
	Class Number	For documents O111,3

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-3

(Class Index Entry - 3)

	ENGLISH, LITERATURE.	
	Class Number	For documents O111

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-4

(Class Index Entry - 4)

	LITERATURE.	
	Class Number	For documents ..... O

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Author – Book Index Entry)

	HART (Moss) and others, Ed.	
		Twelve short stories. O111,3x N33

सहकारक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Collaborator – Book Index Entry)

	BENNETT (Arnold), Ill.	
		Hart and others, Ed : Twelve short stories. O111,3x N33

टिप्पणी :

1 मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का वरण एवं उपकल्पन पूर्व मुख्य प्रविष्टि के समान ही किया गया है।

2 नियमांक JF2 के अनुसार आख्या को अंकों के बजाय शब्दों से प्रारम्भ किया गया है।

3 अन्य सभी सहायक प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमानुसार बनाई गई हैं।

टिप्पणी : इस इकाई में वर्णित तारांकित (*) नियम रंगनाथन कृत केटालागिंग प्रेक्टिस से लिये गये हैं।

8. अभ्यासार्थ मुखपृष्ठ (Title Pages for Practice)

मुखपृष्ठ 1

(एकल सहकारक)

CHINA AND THE PEACE OF ASIA

Edited by

Rajendra Singh

London,

Chatto & Windus,

1981

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Acc. No.	7856		Pages	253
Call No.	V41:194,(zQ)'N9	N81	Size	22.1 cm.

मुखपृष्ठ 2

(सह-सहकारक शीर्षक एवं दो भिन्न प्रकार के सहकारक)

COMMON BIRDS

Edited by

Salim Ali

&

Laeeq Fatehally

Illustrated by

John Allen Dean

New Delhi,

NATIONAL BOOK TRUST OF INDIA,

1979

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

H.T.P.	India -- The Land and the People. No, 22			
Call No.	K96:12.44	N79	Acc. No.	19351
Pages	xi, 205			

मुखपृष्ठ 3

(सहकारक शीर्षक)

SOCIOMETRIC RESEARCH

Edited by

W.E. Sariis & L.W. Falhoffer

London,

Pergoman Press, 1993

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No. Y0b B28 : f N93 Acc. No. 56111

Pages ix, 227

मुखपृष्ठ 4

(दो से अधिक सहकारक)

FUNDAMENTALS OF MODERN PHYSICS

Edited by

S.Alsteasd

Karl W. Hays

Eliss R. Bliss

S. Alstead

Carnfield Press, San Francisco, 1993

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No. C9B N93

Acc. No. 51196

Size 24 cm

Pages There are six preliminary pages and 240 text pages.

9. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची (Bibliography)

1. गौतम (जे एन) एवं निरजंन सिंह: एडवान्सड केटालागिंग. आगरा, वाई के पब्लिशर्स, 1998.
2. सूद (एस पी): क्रियात्मक सूचीकरण-सी सी सी. जयपुर, राज पब्लिशिंग हाउस, 2016.
3. वर्मा (ए के): क्रियात्मक अनुवर्ग सूचीकरण. रायपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1999.
4. Krishan Kumar : An introduction to cataloguing practice. New Delhi, Vikas, 1996.
5. Noorul Hasan and others : Cataloguing practice. New Delhi, Gitanjali Publishing House, 1984.
6. Ranganathan (S R) : Classified catalogue code etc. Ed 5. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.
7. Ranganathan (S R) : Cataloguing practice. Ed 2. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.

इकाई 6

कृत्रिम नामधारी लेखक (Pseudonymous Author)

उद्देश्य (Objectives)

1. कृत्रिम नामधारी लेखक को परिभाषित करना।
2. कृत्रिम नामधारी लेखक के उपकल्पन के नियमों से परिचित कराना।
3. दो व्यक्तियों द्वारा रखे गये एक कृत्रिम नाम के ग्रन्थों के सूचीकरण के नियमों को स्पष्ट करना।
4. कृत्रिम नामधारी वास्तविक नाम नामान्तर प्रविष्टि की संरचना समझाना।

संरचना (Structure)

1. परिचय
2. कृत्रिम नामधारी लेखक
   - 2.1 परिभाषा
   - 2.2 समस्यायें
3. कृत्रिम नामधारी लेखक के शीर्षक के वरण एवं उपकल्पन के नियम
   - 3.1 एक लेखक द्वारा प्रयुक्त कृत्रिम नाम
   - 3.2 दो व्यक्तियों द्वारा रखे गये एक कृत्रिम नाम के सूचीकरण के नियम
4. सूचीकृत मुखपृष्ठ
5. अभ्यासार्थ मुखपृष्ठ
6. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची

1. परिचय (Introduction)

जब लेखक अपनी रचनाओं में अपने वास्तविक नाम के स्थान पर मिथ्या अथवा कल्पित नाम का प्रयोग करता है, तो उसे कृत्रिम नामधारी लेखक (Pseudonym) कहते हैं। कृत्रिम नाम में लिखने की प्रवृत्ति देश-विदेशों की भाषाओं के साहित्य में अत्यन्त प्राचीनकाल से चली आ रही है, परन्तु पाश्चात्य साहित्य की तुलना में भारतीय साहित्य में इस प्रकार के नाम विशेष रूप से उपलब्ध होते हैं। उदाहरणार्थ, प्राचीन भारत के प्रसिद्ध कूटनीतिज्ञ अपने कृत्रिम नाम 'कौटिल्य' से ही जाने जाते हैं। कुछ ही व्यक्ति उनके वास्तविक नाम विष्णु गुप्त से परिचित हैं। हिन्दी के प्रख्यात कथाकार प्रेमचन्द का भी वास्तविक नाम धनपत राय था और उन्होंने कुछ ग्रन्थ एक अन्य छद्म नाम नवाब राय के नाम से

भी लिखे हैं। इसी प्रकार, हिन्दी साहित्य में अज्ञेय, नीरज, नागार्जुन, बच्चन, मुक्तिबोध आदि तथा आंग्ल साहित्य में जार्ज इलियट, मार्क ट्वेन, टू ब्रदर्स आदि प्रसिद्ध कृत्रिम नाम हैं।

2. कृत्रिम नामधारी लेखक (Pesudonymous Auhtors)

2.1 परिभाषा (Definition)

रंगनाथन ने कृत्रिम नामधारी लेखक को निम्नलिखित प्रकार परिभाषित किया है -

"एक लेखक द्वारा प्रयुक्त मिथ्या अथवा काल्पनिक अथवा वास्तविक नाम से भिन्न अन्य कोई विशिष्ट नाम। कृत्रिम नाम लेखक के जीवन काल में अथवा जीवनोपरान्त अन्य व्यक्तियों द्वारा प्रदान किया जा सकता है अथवा यह लेखक द्वारा सहज भाव से स्वयं की कृतियों में अपनाया जा सकता है।"

2.2 समस्यायें (Problems)

यदि कोई लेखक लज्जावश, भयवश, भीरूतावश, मजाक में, अथवा घबराहट के कारण अथवा वैसे ही अपने असली नाम को छिपा लेता है और लेखन कार्य किसी कृत्रिम एवं कल्पित नाम से करता है तो उक्त नाम को कृत्रिम कहते हैं। कई बार यह कृत्रिम नाम प्रकाशक भी देते हैं। इसलिये हम यह कह सकते हैं कि कृत्रिम नाम, लेखक के असली नाम से अलग, वह नाम है जो उसके द्वारा लेखन कार्य के लिये धारण किया जाता है। किन्हीं अन्य व्यक्तियों के द्वारा भी किसी लेखक को कोई कल्पित नाम दिया जा सकता है अथवा वह स्वतः ही प्रचलित हो जाता है। अनुवर्ग सूचीकरण के जन्मदाता रंगनाथन स्वयं यह बताते हैं कि उन्होंने एजुकेशनल रिव्यू (Educational Review) में "मैथेमेटिक्स" के कृत्रिम नाम से और दैनिक हिन्दू में 'लिब्रा' के कृत्रिम नाम से उन्होंने कुछ लेख लिखे थे।

सूचीकार के लिये दो बातें जानना आवश्यक है- कृत्रिम नामों के रूप तथा उनके द्वारा उठाई गई समस्याओं का समाधान। यह समस्यायें हैंः-

(क) जब कृत्रिम एवं कल्पित नाम मुखपृष्ठ पर अंकित हो और उसी के साथ असली नाम भी दिया हो।

(ख) जब मुखपृष्ठ पर कल्पित नाम दिया हो और ग्रंथ के भीतर से असली नाम का पता चले।

(ग) जब मुखपृष्ठ पर कल्पित नाम दिया हो और असली नाम ग्रंथ के किसी भाग में न हो और उसे अन्य स्रोतों से ढूंढा जाये।

(घ) जब मुखपृष्ठ पर असली नाम दिया हो और साथ ही मुखपृष्ठ पर कल्पित नाम भी दिया हो।

3. कृत्रिम नामधारी लेखक के शीर्षक के वरण एवं उपकल्पन के नियम (Rules of Choice and Rendering of Heading of Pseudonym)

3.1 एक लेखक द्वारा प्रयुक्त कृत्रिम नाम (Cataloguing Rules of Pseudonym adopted by Single Author)

सी सी सी सूची संहिता में निम्नलिखित नियमों का प्रावधान है -

नियमांक MD41 : यदि मुखपृष्ठ पर लेखक के नाम के स्थान पर कृत्रिम नाम ही दिया गया हो, तो उस कृत्रिम नाम का ही प्रयोग शीर्षक अनुच्छेद में किया जायेगा एवं कृत्रिम नाम के पश्चात Pseud शब्द लिखा जायेगा। यहां यह बात विशेष ध्यान देने योगय है कि Pseud शब्द रेखांकित किया जायेगा तथा इससे पूर्व कोमा (,) का प्रयोग होगा।

उदाहरणार्थ -

1. PREM CHAND, Pseud.

2. ELIOT (Ceorge), Pseud.

नियमांक MD421 : यदि मुखपृष्ठ पर लेखक के कृत्रिम नाम के साथ-साथ वास्तविक नाम भी अधीनस्थ रूप से अथवा मुखपृष्ठ के पिछले पृष्ठ पर अंकित हो तो वास्तविक नाम को वृत्ताकार कोष्ठक में Pseud शब्द लिखने के पश्चात् कृत्रिम नाम से साथ जोड़ा जाता है लेखक का वास्तविक नाम लिखने से पूर्व *i e* का प्रयोग किया जाता है। वृत्ताकार कोष्ठक से पूर्व कोमा (,) लगाया जाता है। लेखक का वास्तविक नाम सामान्य क्रम में लिखा जाता है।

उदाहरणार्थ -

1. TWAIN (Mark), Pseud, (*i e* S L Clemens).
2. PREM CHAND, Pseud, (*i e* Dhanpat Rai).

वास्तविक नाम से ग्रन्थ मांगने वाले पाठकों की अभिगम पूर्ति हेतु एक नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि निम्नलिखित प्रकार से तैयार की जाती है -

उदाहरणार्थ -

कृत्रिम नाम - वास्तविक नाम - नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि

(Pseudonym-Real Name-Cross Reference Index Entry)

	CLEMENS (S L).	
		See TWAIN (Mark), Pseud.

नियमांक MD422* यदि मुखपृष्ठ पर लेखक का वास्तविक नाम दिया गया हो और कृत्रिम नाम भी साथ में संलग्न हो, तो वास्तविक नाम का प्रयोग शीर्षक हेतु किया जायेगा तथा कृत्रिम नाम *i e* शब्द लिखने के पश्चात् वृत्ताकार कोष्ठक में जोड़ा जायेगा। कृत्रिम नाम के पश्चात् Pseud शब्द लिखा जायेगा। वृत्ताकार कोष्ठक से पूर्व कोमा (,) का प्रयोग किया जायेगा।

उदाहरणार्थ - SHIVMANGAL SINGH, (i e Suman, Pseud).

कृत्रिम नाम से ग्रन्थ मांगने वाले पाठकों की अभिगम पूर्ति हेतु एक नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि निम्नलिखित प्रकार से तैयार की जाती है -

उदाहरणार्थ -

	SUMAN, Pseud.	
		See SHIVMANGAL SINGH.

नियमांक MD423 : यदि लेखक का वास्तविक नाम ग्रन्थ में अंकित न हो तथा बाह्य स्रोत से ज्ञात किया जाये तो वास्तविक नाम को Pseud शब्द लिखने के पश्चात् वर्गाकार कोष्ठक में लिखा जाता है। वास्तविक नाम से पूर्व *i e* शब्द लिखा जाता है। वर्गाकार कोष्ठक से पूर्व कोमा (,) का प्रयोग किया जाता हैं एवं वास्तविक नाम सामान्य क्रम में लिखा जाता है।

उदाहरणार्थ -

1. LIBRA, Pseud, [*i e* Shiyali Ramamrita Ranganathan]
2. SHIVANI, Pseud, [*i e* Gora Pant].

3.2 दो या अधिक व्यक्तियों द्वारा प्रयुक्त एक कृत्रिम नाम के सूचीकरण के नियम (Cataloguing Rules of Pseudonym adopted by Two or More Authors)

नियमांक MD424 : यदि दो सहलेखकों द्वारा एक कृत्रिम नाम का प्रयोग किया जाये और उनके वास्तविक नाम भी उपलब्ध हो सके तो *i e* शब्द जो कृत्रिम नाम के बाद आता है, के पश्चात् सहलेखकों के वास्तविक नाम सामान्य क्रम में कोष्ठक में दिये जायेंगे और उन्हें and शब्द द्वारा जोड़ा जायेगा।

उदाहरणार्थ -

1. COLES (Manning), Pseud, (*i e* Adelaind Frances Oke Mann and Cyril Henry Coles).
2. TWO BROTHERS, Pseud, (*i* e Alfred Tennyson and Charles Tennyson).

नियमांक MD425 : यदि एक कृत्रिम नाम तीन या अधिक सहलेखकों द्वारा प्रयुक्त किया जाता हो, तो कोष्ठक में प्रथम लेखक का वास्तविक नाम सामान्य क्रम में लिखकर and others शब्द लिखा जायेगा।

उदाहरणार्थ - THREE BROTHERS, Pseud, [i e Edward Hamilton and others].

नियमांक MD43 : लेखकों के वास्तविक नाम के स्थान पर दो या अधिक नामों का प्रयोग हुआ हे तो उन्हें and शब्द द्वारा जोड़ा जायेगा।

उदाहरणार्थ - J K F R S and S A Sc, Pseud, [*i* e James Keir].

4. सूचीकृत मुखपृष्ठ (Catalogued Title Pages)

मुखपृष्ठ 1

(एकल कृत्रिम नामधारी लेखक (वास्तविक नाम ग्रन्थ से प्राप्य), एकल सहकारक, ग्रन्थमाला एवं ग्रन्थमाला सम्पादक)

Lectures on Applied Engineering Aspects. No. 5. Edited by K. Ruth Desouza

--- --- ---

MODERN HYDRAULICS

By

Arnold Sommerfield

Translated from the 2nd German Edition

by

Alaxender O. Stern

Academic Press, New York • London, 1952

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनाएँ :

Call No.	D:15	N52	Acc. No.	2825
Pages	217		Size	21.5 cm.

Note : Real name of the author as taken from outside sources of the book is John Marston Edser.

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	D:1 N52	
		SOMMERFIELD (Arnold), Pseud, (*i e* John Marston Edser). Modern hydraulics. Tr from 2nd German ed by Alaxendor O Stern. (Lectures on applied engineering aspects. Ed by K Ruth Desouza.5). 2825

शृंखला प्रक्रिया

D = Engineering

D:1 = Applied mechanics Engineering

D:15 = Hydraulics, Applied mechanics

संकेत
(Tracing)

Hydraulics, Applied mechanics. Applied mechanics, Engineering. Engineering. Sommerfield (Arnold), Pseud, (*i e* John Marston Edser). Stern (Alaxender O), Tr. Lectures on applied engineering aspects. Edser (John Marston). Desouza (K Ruth), Ed.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1
(Class Index Entry - 1)

	HYDRAULICS, APPLIED MECHANICS.	
	see the Number	For documents in this Class and its Subdivisions, Classified Part of the catalogue under the Class D:15

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2
(Class Index Entry - 2)

	APPLIED MECHANICS, ENGINEERING.	
	Class Number	For documents D:1

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-3
(Class Index Entry - 3)

	ENGINEERING.	
	Class Number	For documents ..... D

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Author – Book Index Entry)

	SOMMERFIELD (Arnold), Pseud, (*i e* John Marston	
	Edser).	Modern hydraulics. D:15 N52

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - सहकारक
(Collaborator – Book Index Entry)

	STERN (Alaxender O), Tr.	
	Edser) :	Sommerfield (Arnold), Pseud. (*i e* John Marston Modern hydraulics. D:15 N52

ग्रन्थमाला - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Series – Book Index Entry)

	LECTURES ON APPLIED ENGINEERTING ASPECTS.	
	15 Edser)	Sommerfield (Arnold), Pseud, (*i e* John Marston : Modern hydraulics. D:15 N52

कृत्रिम नाम-वास्तविक-नाम - नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि
(Pseudonym-Real-Name-Cross Reference Index Entry)

	EDSSER (John Marston).	
		See SOMMERFIELD (Arnold), Pseud.

ग्रन्थमाला सम्पादक - नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि
(Editor of Series-Cross Reference Index Entry)

	DESOUZA (K Ruth), Ed.	
	ASPECTS.	See LECTURES ON APPLIED ENGINEERTING

टिप्पणी :

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का वरण एवं उपकल्पन नियमांक MD421 व MD21 के अनुसार किया गया हैं
2. लेखक के वास्तविक नाम से ग्रन्थ की मांग करने वाले पाठकों की अभिगम पूर्ति हेतु नियमांक LD के अनुसार एक कृत्रिम नाम-वास्तविक नाम : नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि बनाई गई है।
3. सहकारक व ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टियों के द्वितीय अनुच्छेद में नियमांक MK221 व MZD3 के नीचे दी गई व्याख्या के अनुसार कृत्रिम लेखक का पूरा नाम लिखा गया है। (देखिये सी सी सी पृष्ठ 410)।
4. अन्य सभी सहायक प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमानुसार बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ 2

(कृत्रिम नामधारी लेखक, वास्तविक नाम ग्रन्थ से प्राप्य)

GABAN

by

Prem Chand

Allahabad,

Hindi Book Centre

1981

Call No.	0152, 3M80, 11	N81	Acc. No.	11133
Pages	iii, 271 p.		Size	19 x 13 cm.
H.T.P :	Hindi Granthmala. No. IV.			

Note : Dhanpat Rai is the real time of Prem Chand as given on the back of the title page.

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	O152, 3M80, 11 N81	
	11133	PREM CHAND, Pseud, (i e Dhanpat Rai). Gaban. (Hindi granthamala. 4).

शृंखला

0	Literature
0152	Hindi, Literature
0152,3	Fiction, Hindi
0152,2M80	Prem Chand, Pseud, (i e Dhanpat Rai), Fiction.
0152, 3M80, 11	Gaban, Prem Chand, Pseud, (i e Dhanpat Rai).

संकेत

(Tracing)

	Gaban, Prem Chand, Pseud, (i e Dhanpat Rai). Prem Chand, Pseud, (i e Dhanpat Rai), Fiction. Fiction, Hindi. Hindi, Literature. Literature. Hindi granthamala. Dhanpat Rai.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1

(Class Index Entry – 1)

		GABAN, PREM CHAND, Pseud, (i e Dhanpat Rai).
	see the Number	For documents in this Class and its Subdivisions, Classified Part of the catalogue under the Class O152, 3M80, 11

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2

(Class Index Entry – 2)

		PREM CHAND, Pseud, (i e Dhanpat Rai), FICTION.
	Class Number	For documents O152, 3M80

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-3

(Class Index Entry – 3)

	FICTION, HINDI.	
	Class Number	For documents in - O152,3

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-4

(Class Index Entry – 4)

	HINDI, LITERATURE.	
	Class Number	For documents O152

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-5

(Class Index Entry – 5)

	LITERATURE.	
	Class Number	For documents ..... O

ग्रन्थमाला - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

(Series – Book Index Entry)

	HINDI GRANTHAMALA.	
	4	Prem Chand, Pseud. (i e Dhanpat Rai) :Gaban. 0152,3M80,11 N81

कृत्रिम नाम वास्तविक नाम - नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि
(Pseudonym – Real Name-Cross Reference Index Entry)

	DHANAT RAI.	
		See PREM CHAND, Pseud.

मुखपृष्ठ 3

(कृत्रिम नामधारी लेखक)

WUTHERING HEIGHTS

By

Emily Bronte

Edited by

Tom Philips

London,

Penguin Books, 1969

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनाएँ :

Call No.	O111, 3M18, 21 K9	Acc. No.	657811
Pages	iii, 219	Size	22 cm

Note : Ellis Bell is the real name of the author as given on the back of the title page.

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	O111, 3M18, 21 K9	
	657811	BRONTE (Emily), Pseud, (i e Ellis Bell). Wuthering heights. Ed by Tom Phillips.

संकेत
(Tracing)

Wuthering heights, Bronte (Emily), Pseud, (i e Ellis Bell).

Bronte (Emily), Pseud, (i e Ellis Bell), Fiction.

Fiction, English.

English, Literature.

Literature.

Phillips (Tom), Ed.

Bell (Ellis).

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1
(Class Index Entry - 1)

WUTHERING HEIGHTS, BRONTE (Emily), Pseud, (i e. Emily Bronte).

For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number O111, 3M18, 21

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2
(Class Index Entry - 2)

BRONTE (Emily), Pseud, (i e Ellis Bell), FICTION.

For documents ..... Class Number O111, 3M18

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-3
(Class Index Entry - 3)

	FICTION, ENGLISH.	
	Class Number	For documents O111,3

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-4
(Class Index Entry - 4)

	ENGLISH, LITERATURE.	
	Class Number	For documents O111

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-5
(Class Index Entry - 5)

	LITERATURE.	
	Class Number	For documents ..... O

सहकारक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Collaborator – Book Index Entry)

	PHILLIPS (Tom), Ed.	
	heights.	Bronte (Emily), Pseud, (i e Ellis Bell):Wuthering 0111,3M1821 K9

कृत्रिम नाम वास्तविक नाम - नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि
(Pseudonym – Real Name – Cross Reference Index Entry)

	BELL (Ellis).	
		See BRONTE (Emily), Pseud.

टिप्पणी :

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का वरण नियमांक MD423 एवं उपकल्पन नियमांक MD21 के अनुसार किया गया है।
2. सहकारक निर्देशी प्रविष्टियों के द्वितीय अनुच्छेद में नियमांक MK221 व MZD3 के नीचे दी गई व्याख्या के अनुसार कृत्रिम लेखक का पूरा नाम लिखा गया है (देखिये सी सी सी पृष्ठ 410)।
3. आख्या निर्देशी प्रविष्टि एवं लेखक निर्देशी से मांग करने वाले पाठकों की आवश्यकताओं की पूर्ति चूंकि प्रथम एवं द्वितीय वर्ग निर्देशी द्वारा हो जाती है, इसलिए इनके निर्माण की आवश्यकता नहीं है।
4. अन्य सभी सहायक प्रविष्टियां इकाई - 1 वर्णित नियमानुसार बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ 4

(दो लेखकों द्वारा प्रयुक्त कृत्रिम नामधारी नाम)

BASSEL EXPRESS

By

Manning Coles

London

Oxford University Press, 1988

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनाएँ :

Call No.	O111, 3M97,31 N88	Acc. No.	41404
Pages	221	Size	18.5 cm

Note : Manning Coles is the pseudonym of Adelaida Francis Oke Manning and Cyril Henry Coles. This information is taken from outside sources.

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	O111,3M97,31 N88	
		COLES (Manning), Pseud. [i e Adedaida Francis Oke Manning and Cyril Henry Coles].
		Bassel express.
	41404	

शृंखला प्रक्रिया

O	=	Literature
O111	=	English, Literature
O111,3	=	Fiction, English
O111,3M 97	=	Coles (Manning), Pseud, [i e Adedaida Francis Oke Manning and Cyril Henry Coles], Fiction.
O111,3M 97,31	=	Bassel express, Coles (Manning), Pseud. [i e Adedaida Francis Oke Manning and Cyril Henry Coles].

संकेत
(Tracing)

Bassel express, Coles (Manning), Pseud, [i e. Adelaide Francis Oke Manning and Cyril Henry Coles].

Coles (Manning), Pseud, [i e Adelaide Francis Oke Manning and Cyril Henry Coles], Fiction.

Fiction, English.

English, Literature.

Literature.

Manning (Adelaide Francis Oke) and Coles (Cyril Henry).

Coles (Cyril Henry) and Manning (Adelaide Francis Oke).

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1
(Class Index Entry - 1)

	BASSEL EXPRESS, COLES (Manning),Pseud, [i e	
	Adelaide Francis Oke Manning and Cyril Henry Coles]. For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number O111, 3M97, 31	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2
(Class Index Entry - 2)

	COLES (Manning).Pseud, [i e Adelaide Francis Oke	
	Manning and Cyril Henry Coles], FICTION. For documents ..... Class Number O111,3M97	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-3
(Class Index Entry - 3)

	FICTION, ENGLISH.	
	For documents ..... Class Number O111,3	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-4
(Class Index Entry – 4)

	ENGLISH, LITERATURE.	
	For documents ..... Class Number O111	

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-5

(Class Index Entry - 5)

	LITERATURE.	
	Class Number	For documents ..... O

कृत्रिम नाम-वास्तविक-नाम - नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि - 1

(Pseudonym-Real Name-Cross Reference Index Entry - 1)

	MANNING (Adelaide Francis Oke) and COLES (Cyril	
	Henry).	See COLES (Manning), Pseud.

कृत्रिम नाम-वास्तविक-नाम - नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि - 2

(Pseudonym – Real Name – Cross Reference Index Entry - 2)

	COLES (Cyril Henry) and MANNING (Adelaide Frances	
	Oke).	See COLES (Manning), Pseud.

टिप्पणी :

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का वरण एवं उपकल्पन नियमांक MD424 एवं MD21 के अनुसार किया गया है।
2. अन्य सभी सहायक प्रविष्टियां इकाई-1 में वर्णित नियमों के अनुसार बनाई गई हैं।

टिप्पणी : इस इकाई में वर्णित तारांकित (*) नियम रंगनाथन कृत केटालागिंग प्रेक्टिस से लिये गये हैं।

4. अभ्यासार्थ मुखपृष्ठ (Title Pages for Practice)

मुखपृष्ठ 1

(कृत्रिम नामधारी लेखक, वास्तविक नाम ग्रन्थ से प्राप्य)

THE LIFE ON THE MISSISIPI

By

MARK TWAIN

Edited by James Bull

London,

Harper Publishers. 1951

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनाये :

Call No.	O111, 3M15, 13	N51	Acc. No.	44455
Pages	xii, 108		Size	18.9 cm

Note : Author's real name as given in the Preface is Samuel Langhorne Clemens.

मुखपृष्ठ 2

(कृत्रिम नामधारी लेखक)

ANIMAL FARM

By

George Orwell

Illustrated by

John Stuart

London

Penguin Books, 1981

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनाएँ :

Call No.	O111, 3N08, 27	N81	Acc. No.	479531
Pages	x, 287		Size	21 cm

Note : George Orwell is the Pseudonym of Eric Arthur Blair. This information is given on the back of the title page.

मुखपृष्ठ 3

(कृत्रिम नामधारी लेखक-वास्तविक नाम बाह्य स्रोत से प्राप्य एवं एकल सहकारक)

THE CHURCH IN THE DARK AGES

By

Henry Deniel Rops

Translated from the French

by

Audrey Butler

London

J.M. Dent & Sons Ltd.

1959

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनाएँ :

Call No.	Q6:1 N59	Acc. No.	87563
Size	21 cm		
Note :	The real name of the author is Charles Henry Petiot as revealed by Chambers Biographical Dictionary.		

मुखपृष्ठ 4

(कृत्रिम नामधारी लेखक वास्तविक नाम ग्रन्थ से प्राप्यनाम)

EVERGREEN

By

Ennett Holt

London.

R.S. Crofts & Co.

1942

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनाएँ :

Call No.	O111,3M83, 7 N42	Acc. No.	16781
Pages	xi, 421	Size	23x14 cm
Note :	Real name of the author as given in the book is WILLIAM WARNER BISHOP.		

मुखपृष्ठ 5

(कृत्रिम नामधारी लेखक (दो लेखकों द्वारा प्रयुक्त नाम)

VALLEY OF DIAMONDS

By

Francis Gaite

Philadelphia

Dorance & Co., 1969

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनाएँ **:**

Call No.	O111,3M96,1 N69
Acc. No.	61293
Pages	414
Size	21.5 cm
Note :	The real names of the authors are Sydney Coles (B 1896) and Manning A Cartor (B 1898) as given in the Preface of the book.

---

6. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची (Bibliography)

1. गौतम (जे एन) एवं निरजंन सिंह: एडवान्सड केटालागिंग. आगरा, वाई के पब्लिशर्स, 1998.
2. सूद (एस पी): क्रियात्मक सूचीकरण-सी सी सी. जयपुर, राज पब्लिशिंग हाउस, 2016.
3. वर्मा (ए के): क्रियात्मक अनुवर्ग सूचीकरण. रायपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1999.
4. Krishan Kumar : An introduction to cataloguing practice. New Delhi, Vikas, 1996.
5. Ranganathan (S R) : Classified catalogue code etc. Ed 5. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.
6. Ranganathan (S R) : Cataloguing practice. Ed 2. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.

इकाई 7

समष्टि लेखक: शासन एवं इसका प्रथम श्रेणी का अंग (Corporate Author : Government and its Organ of First Remove)

उद्देश्य (Objectives)

1. समष्टि निकाय एवं समष्टि लेखक को परिभाषित करना।
2. शासन को परिभाषित करना।
3. शासन के प्रथम श्रेणी के अंग तथा अस्थाई अंग के सूचीकरण के नियमों का वर्णन करना।

संरचना (Structure)

1. समष्टि निकाय व समष्टि लेखकत्व का अर्थ एवं परिभाषा
2. समष्टि लेखक के प्रकार
3. शासन की परिभाषा
4. शासन के वरण के नियम
5. शासन व उसके अंग के उपकल्पन के नियम
   - 5.1 शासन के अंग
   - 5.2 अंगों का उपकल्पन
6. शासन व उसके प्रथम श्रेणी के प्रशासनिक अंग के सूचीकृत मुखपृष्ठ
7. शासन व उसके अस्थाई अंग के सूचीकृत मुखपृष्ठ
8. अभ्यासार्थ मुखपृष्ठ
9. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची

1. समष्टि निकाय व समष्टि लेखकत्व का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition of Corporate Body and Corporate Author)

आधुनिक काल में व्यक्तिगत लेखकों की रचनाओं के अतिरिक्त समष्टि लेखकों की रचनायें भी ग्रन्थालयों में प्रचुर मात्रा में क्रय की जाती हैं। इस प्रकार के ग्रन्थों में मानव जीवन के सभी क्षेत्रों की प्रामाणिक सूचनायें, सांख्यिक आँकड़ें आदि उपलब्ध होने के कारण, ये शोधकर्ताओं के लिये बहुत उपयोगी होते हैं। इसलिये सभी ग्रन्थालय इन ग्रन्थों के बिना अपने पाठकों की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकते। विशेषतया विभागीय एवं विशिष्ट ग्रन्थालयों में तो पर्याप्त मात्रा में समष्टि लेखकों के ग्रन्थ क्रय किये जाते हैं। समष्टि लेखकों के ग्रन्थ व्यक्तिगत लेखकों के ग्रन्थों की तुलना में सूचीकारों के

लिये कई समस्यायें उत्पन्न करते हैं। इसलिये इन समस्याओं के समाधान के लिये क्रियात्मक सूचीकरण में विशेष अध्ययन का प्रावधान किया जाता है।

रंगनाथन ने सी सी सी नियमांक FC2 के अन्तर्गत समष्टि निकाय को निम्नलिखित प्रकार परिभाषित किया है-

"अर्थ 1: सामूहिक रूप से प्रायः संयुक्त अथवा संगठित अथवा अनौपचारिक रूप से किसी सामान्य उद्देश्य अथवा किसी सामान्य कार्य के लिये यथा-शासकीय, व्यवसायिक, अथवा सामूहिक विचार अभिव्यक्ति या कथन के लिये मिलने वाले व्यक्ति। उदाहरणार्थ, राजस्थान सरकार, चेम्बर आफ कामर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय, भारतीय ग्रन्थालय सम्मेलन आदि।

अर्थ 2: सामूहिक रूप से प्रायः संयुक्त अथवा संगठित अथवा अनौपचारिक रूप से किसी सामान्य उद्देश्य अथवा किसी सामान्य कार्य के लिये, यथा-शासकीय, व्यवसायिक, औद्योगिक या सेवा या राजनीतिक कार्य अथवा कोई अन्य कार्य या विचार विनिमय के लिये अथवा किसी सामूहिक विचार अभिव्यक्ति या कथन के लिये आपस में मिलने वाले समष्टि निकाय। उदाहरणार्थ, इफला (IFLA), संयुक्त राष्ट्र संघ, भारतीय विश्वविद्यालय संघ आदि।

रंगनाथन ने उपर्युक्त परिभाषा में समष्टि निकाय को उसके कार्यों के आधार पर परिभाषित किया है। अर्थ 1 में वर्णित कार्यों को करने वाले व्यक्तियों के समूह को तथा अर्थ 2 में वर्णित कार्यों को करने वाले समष्टि निकायों के संघों को भी समष्टि निकाय बताया गया है।

रंगनाथन ने समष्टि लेखक को निम्नलिखित प्रकार परिभाषित किया है -

"जब ग्रन्थ में निहित विचारों तथा अभिव्यक्ति का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व किसी निकाय अथवा उसके किसी अंग पर होता है और किसी व्यक्ति या व्यक्तियों पर निजी रूप से नहीं होता है, जो उसके अंग होते हैं अथवा उसमें पदासीन रहते हैं अथवा अन्य किसी प्रकार से उससे सम्बन्धित होते हैं, उसे समष्टि लेखक कहते हैं।"

2. समष्टि लेखक के प्रकार (Types of Corporate Author)

रंगनाथन ने समष्टि लेखक को तीन प्रकारों में विभक्त किया हैं -

1. शासन (Government)
2. संस्था (Institution)
3. सम्मेलन (Conference)

इस इकाई में शासन का ही वर्णन किया गया है।

3. शासन की परिभाषा (Definition of Government)

ऐसे ग्रन्थ जिनमें अभिव्यक्त विचारों के लिये शासन अथवा उसका कोई अंग उत्तरदायी हो, को शासकीय प्रकाशन कहा जाता है। शासकीय प्रकाशन कभी-कभी तो विक्रय के लिये उपलब्ध होते हैं तथा कभी-कभी सीमित वितरण (Limited circulation) के लिये निःशुल्क भी उपलब्ध होते हैं। शासकीय प्रकाशनों के मुख्य लक्षण निम्नलिखित हैं -

1. ऐसे सभी प्रकाशन जिनमें निहित विचार शासकीय एजेन्सियों के प्रयासों का परिणाम होता है, परन्तु यह आवश्यक नहीं कि उनका भौतिक प्रस्तुतीकरण शासकीय एजेन्सियों द्वारा ही किया जाये।

2. शासकीय एजेन्सियों द्वारा भौतिक रूप से अभिप्रेत कोई भी प्रकाशन जिसको शासकीय प्राधिकार द्वारा स्वीकृति प्राप्त हो तथा उसके प्रकाशन विवरण से अंकित होकर निर्गमित हो।

रंगनाथन ने सी सी सी नियमांक FC22 के अन्तर्गत शासन को निम्नलिखित प्रकार परिभाषित किया है-

अर्थ 1: एक निश्चित भू-भाग पर समष्टि निकाय का पूर्ण या सीमित सम्प्रभुता का होना। साधारणतया इसके कार्यकारी, विधायी, न्यायिक तथा प्रशासनिक कार्य होते हैं। इसके अन्य कार्यों में सुरक्षा, कराधान, वाणिज्य, जन-यातायात, संचार आदि हैं, जो सम्प्रभुता के आधार पर सीमित होते रहते हैं।

अर्थ 2: शासन द्वारा प्रदत्त अधिकारों के अन्तर्गत एक निश्चित भू-भाग पर एवं निश्चित सीमा पर स्वायत्तता प्राप्त स्थानीय सार्वजनिक प्राधिकारी, जो किसी निश्चित स्थानीय सार्वजनिक क्षेत्र में सेवाओं का नियमन, उन्नयन तथा/अन्यथा सेवाओं का प्रावधान करता है।

अर्थ 3: उपर्युक्त परिभाषित अर्थ 1 अथवा 2 के अन्तर्गत शासन के अंग।

4. शासन के वरण के नियम (Rules of Choice of Government)

यदि ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर लेखकीय विवरण में मात्र शासन अथवा उसके अंग का नाम दिया गया हो, तो शीर्षक वरण में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होती तथा उन्हें लेखक के रूप में स्वीकार कर उसके नामान्तर्गत शीर्षक का निर्माण कर लिया जाता है, परन्तु यदि किसी व्यक्ति का नाम तथा शासन या उसके अंग, दोनों ही लेखक के नाम के स्थान पर अंकित हों तो शीर्षक के निर्धारण में कठिनाई होती है। सी सी सी में इस प्रकार के लेखकीय द्वन्द्व के समाधान के लिये नियमांक GC31 व GC32 का प्रावधान किया गया है।

नियमांक GC31 : यदि ग्रन्थ समष्टि निकाय के उद्देश्य, कार्य या दृष्टिकोण सम्बन्धी वैचारिक (Deliberative). विधायी (Legislative), निर्देशात्मक (Directive), न्यायिक (Judicial), प्रशासनिक (Administrative) अथवा सामान्य प्रकृति ;त्वनजपदम बींतंबजमतद्ध का हो तो ऐसे ग्रन्थ को समष्टि निकाय का लेखकत्व प्रदान किया जाना चाहिए। मात्र इस कारण से कि ग्रन्थ समष्टि निकाय द्वारा प्रकाशित, वित्तीय सहायता प्राप्त, मान्यता प्राप्त, प्रायोजित या प्राधिकृत है, उसे समष्टि लेखकत्व का मानने का यथेष्ट कारण नहीं है और इसी आधार पर व्यक्तिगत लेखकत्व को अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

नियमांक GC32 : यदि ग्रन्थ का मुख्य कार्य ज्ञान के क्षेत्र की सीमाओं में वृद्धि करना या प्रखर करना हो तथा ग्रन्थ में वर्णित विचार एवं अभिव्यक्ति की जिम्मेदारी व्यक्ति पर हो, न कि उस पद पर जिस पर कि वह समष्टि निकाय में आसीन है, चाहे वह वेतनभोगी कर्मचारी हो या अवैतनिक अथवा समष्टि निकाय का सदस्य हो तो उसे व्यक्तिगत लेखक का ग्रन्थ माना जायेगा। यदि ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर जहां सामान्यतया लेखक का नाम अंकित होता है वहां समष्टि निकाय के पदाधिकारी के नाम का उल्लेख होने पर भी ग्रन्थ को व्यक्तिगत लेखकत्व का मानने का यथेष्ट कारण नहीं है और इसी आधार पर उसे समष्टि लेखकत्व का होने से भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

5. शासन व उसके अंगों के उपकल्पन के नियम (Rules of Rendering of Government and their Organs)

5.1 शासन के अंग (Organs of Government)

रंगनाथन के शासन के अंगों को निम्नलिखित दो भागों में बांटा हैं -

1. स्थायी अंग (Permanent organ) (जो कि अनिश्चित अवधि के लिये होते हैं)

2. अस्थायी अंग (Temporary organ) (जो कि निश्चित अवधि व विशेष कार्य के लिये होते हैं)

स्थायी अंगों को तीन मुख्य भागों में बांटा गया है -

(अ) वैधानिक अंग (Constitutional organ)

(ब) शासन प्रमुख (Head of Government)

(स) प्रशासकीय अंग (Administrative organ)

वैधानिक अंग पुनः तीन भागों में विभक्त किये गये हैं -

(1) कार्यपालिका (Executive)

(2) विधायिका (Legislative)

(3) न्यायपालिका (Judicial)

आपके पाठ्यक्रम में शासन के प्रशासनिक अंग के प्रथम श्रेणी के अंग तथा शासन के अस्थाई अंग ही प्रस्तावित हैं। इस इकाई में इन्हीं के उपकल्पन के नियमों का ही अध्ययन किया गया है।

5.2 अंगों का उपकल्पन (Rendering of Organs)

शासन के विभिन्न अंगों के उपकल्पन के लिये निम्नलिखित नियमों का प्रावधान है -

नियमांक JC21 : यदि समष्टि निकाय शासन का अंग हो तो बहुविध समष्टि शीर्षक (Multiple Corporate Heading) देना चाहिए।

नियमांक JC22 : शासन के अंग के उपकल्पन में प्रथम शीर्षक शासन का नाम तथा उपशीर्षक शासन के अंग का नाम होगा।

5.2.1 प्रशासकीय अंग (Administrative Organ)

शासन के प्रशासकीय अंग का उपकल्पन पुनः स्मरण मान के उपसूत्र के अनुसार किया जायेगा।

नियमांक JC5 : शासन के प्रशासकीय विभाग के उपकल्पन में उसके कार्यक्षेत्र को दर्शाने वाला शब्द या शब्द-समूह प्रविष्टि पद होगा।

नियमांक JC61 : जहां तक सम्भव हो, कार्यक्षेत्र को संज्ञा के रूप में कर्तृकारक (Noun form in the nominative case) होना चाहिए।

नियमांक JC62 : प्रशासनिक विभाग के अन्य शब्दों को गौण पद के रूप में प्रयुक्त करना चाहिए।

नियमांक JC63 : छोटी आड़ी रेखा (- Dash) का प्रयोग -

नियमांक JC631 : यदि शासन के प्रशासकीय विभाग के नाम में प्रविष्टि तत्त्व (शब्द या शब्द-समूह) एकवचन कर्तृकारक रूप (Singular nominative form) में नहीं है तो गौण तत्त्व में इसे दर्शाने के लिये छोटी आड़ी रेखा (- Dash) खींची जाती है।

उदाहरणार्थ -

KERALA, LIBRARY (Director of - ies).

नियमांक JC632* : यदि शासन के प्रशासकीय विभाग के नाम में प्रविष्टि तत्त्व (शब्द या शब्द-समूह) प्रारम्भ में आता हो तो गौण तत्त्व में इसे दर्शाने के लिये छोटी आड़ी रेखा खींची जाती है।

उदाहरणार्थ -

RAJASTHAN, AGRICULTURE (-al Adviser).

नियमांक JC64 : यदि प्रशासनिक विभाग का कोई विशिष्ट नाम न हो तो उसके पदाधिकारी के नाम का ही प्रयोग इस हेतु किया जायेगा।

उदाहरणार्थ -

KARNATAKA, LIBRARIAN (State -).

5.2.2 अस्थायी अंग (Temporary Organ)

शासन द्वारा समय-समय पर विशेष कार्य व निश्चित अवधि हेतु आयोग (Commission), समिति (Committee) आदि स्थापित (Set up) किये जाते हैं। समय एवं कार्य की समाप्ति पर यह आयोग, समिति आदि अपना प्रतिवेदन शासन को प्रस्तुत कर भंग हो जाते हैं। ऐसे आयोग व समिति के प्रतिवेदनों को सूचीकृत करने के लिये नियमांक JC7 व उसके उपखण्डों का प्रावधान है।

नियमांक JC71 : के अस्थायी अंग के नाम के प्रविष्टि पद का उपकल्पन नियमांक JC6 व उसके उपखण्डों के अनुसार होगा।

नियमांक JC71 : शासन के अस्थायी अंग की अवस्था में उसके स्थापना वर्ष का प्रयोग व्यष्टिकृत पद के रूप में किया जायेगा।

नियमांक JC72 : तदर्थ आयोग, समिति आदि की अवस्था में उसके अध्यक्ष का नाम वृत्ताकार कोष्ठक में व्यष्टिकृत पद के बाद निम्नलिखित प्रकार से जोड़ा जायेगा -

1. Chairman पद
2. कोलन (:)
3. सामान्य क्रम में अध्यक्ष के नाम के शब्द।

उदाहरणार्थ -

1. INDIA, LIBRARY (Advisory Committee for -ies) (1956) (Chairman : K P Sinha).
2. RAJASTHAN, PAY (Commission) (1968) (Chairman : J S Ranawat).

5.2.3 शासन के संयुक्त अंग (Common Organ of Government)

नियमांक JC8 : यदि कोई अंग दो या अधिक शासनों द्वारा संयुक्त रूप से स्थापित किया गया हो, तो अंग के नाम से पूर्व स्थापित करने वाले शासनों के नाम को शीर्षक के रूप में प्रयोग किया जायेगा तथा उन्हें योजक शब्द and द्वारा जोड़ा जायेगा।

उदाहरणार्थ -

1. RAJATHAN and HARYANA, IRRIGATION (Commission) (1979).
2. RAJASTHAN, MADHYA PRADESH and UTTAR PRADESH, ANTI DECOIT DRIVE (Joint Committee on-).

6. शासन व उसके प्रथम श्रेणी के प्रशासनिक अंग के सूचीकृत मुखपृष्ठ (Cataloguing of Title page of Government and its Administrative Organ of First Remove)

मुखपृष्ठ 1

(शासन व उसका प्रथम श्रेणी का प्रशासनिक अंग)

INDIA'S ECONOMIC POLICY

सत्यमेव जयते

Ministry of Information and Broadcasting

Government of India

The Manager, Publiction Division

New Delhi

1988

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनाएँ :

Call No.	V44:19 (X) N88
Acc. No.	377112
Pages	vii, 201
Size	26.1 cm

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	V44:19(X) N88	
	CASTING	INDIA, INFORMATION AND BROAD (Ministry of-). India's economic policy.
	377112	

संकेत
(Tracing)

Economics, Foreign policy, India. Foreign policy, India India, History. History. India, Information and Broadcasting (Ministry of-).

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1
(Class Index Entry - 1)

	ECONOMICS, FOREIGN POLICY, INDIA.	
	Number	For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classfied Part of the catalogue under the Class V44:19(X)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2
(Class Index Entry - 2)

	FOREIGN POLICY, INDIA.	
	Class Number	For documents V44:19

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-3
(Class Index Entry - 3)

	INDIA,	HISTORY.
	Class Number	For documents V44

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-4
(Class Index Entry - 4)

	HISTORY.	
	Class Number	For documents V

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Author – Book Index Entry)

	INDIA,	INFORMATION AND BROADCASTING (Ministry
	of -).	India's economic policy. V44:19(X) N88

टिप्पणी :

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का वरण नियमांक MD 1 तथा उपकल्पन नियमांक MD 21, JC21 व JC6, JC61, JC62, एवं JC3 के अनुसार किया गया है। शासन के प्रशासनिक अंग को पुनस्मरण मान के उपसूत्र के अनुसार उपकल्पित किया गया है।
2. अन्य सभी सहायक प्रविष्टियां इकाई-1 में वर्णित नियमानुसार बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ 2

(शासन व उसका प्रथम श्रेणी का प्रशासनिक अंग)

CHALLENGES OF HIGHER EDUCATION

A Policy Perspective

by

Ministry of Education

Government of Rajasthan

सत्यमेव जयते

Directorate of College Education

Jaipur

1999

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनाएँ :

Call No. T4.4437 N99

Acc. No. 773312

Pages xii, 114

Size 25.3

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	T4.4437	N99
	773312	RAJASTHAN, EDUCATION (Ministry of-). Challenges of higher education: A policy perspective.

संकेत

(Tracing)

Rajasthan, University, Education. University, Education. Education. Rajasthan, Education (Ministry of -).

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1

(Class Index Entry - 1)

	RAJASTHAN, UNIVERSITY, EDUCATION.	
		For documents in this Class and its Subdivisions. see the Classfied Part of the catalogue under the Class Number T4.4437

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2

(Class Index Entry – 2)

	UNIVERSITY, EDUCATION.	
		For documents ……..... Class Number T4

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-3

(Class Index Entry – 3)

	EDUCATION.	
	Class Number	For documents ……..... T

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

(Author - Book Index Entry)

	RAJASTHAN, EDUCATION (Ministry of-).	
		Challenges of higher education. T4.4437 N99

टिप्पणी :

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का वरण इस इकाई के मुखपृष्ठ 1 में वर्णित नियमों के अनुसार किया गया है।
2. अन्य सभी सहायक प्रविष्टियां इकाई में वर्णित नियमानुसार बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ 3

(शासन व उसका प्रथम श्रेणी का प्रशासनिक अंग)

Governmetny of India

Ministry of Education

सत्यमेव जयते

Report of the All india Educational Survey

Delhi,

Manager of Publications,

1996

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनाएँ :

Call No.	T2:8.2'N57t4 J6	Acc. No.	8542
Pages	x, 90	Size	19.8 cm

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	T2:8.2'N	N57 t4 J6
	8542	INDIA, EDUCATION (Ministry of-). Report of the all India educational survey.

संकेत
(Tracing)

Survey, India, Management, Secondary, Education.
India, Management, Secondary, Education.
Management, Secondary, Education.
Secondary, Education.
Education.
India, Education (Ministry of -).

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1
(Class Index Entry - 1)

	SURVEY, INDIA, MANAGEMENT, SECONDARY,	
	EDUCATION. see the Number	For documents in this Class and its Subdivisions. Classified Part of the catalogue under the Class T2:3.2'N57t4

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2
(Class Index Entry – 2)

	INDIA, MANAGEMENT, SECONDARY, EDUCATION.	
	Class Number	For documents ……..... T2:82

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-3
(Class Index Entry – 3)

	MANAGEMENT, SECONDARY, EDUCATION.	
	Class Number	For documents ……..... T2:8

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-4
(Class Index Entry – 4)

	SECONDARY, EDUCATION.	
	Class Number	For documents ……..... T2

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-5
(Class Index Entry – 5)

	EDUCATION.	
	Class Number	For documents ……..... T

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

(Author - Book Index Entry)

	INDIA,	EDUCATION (Ministry of -).
		Report of the all India educational survey. T2:8.2'N57t4 J6

टिप्पणी :

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का वरण इस इकाई के मुखपृष्ठ 1 में वर्णित नियमों के अनुसार किया गया है।
2. अन्य सभी सहायक प्रविष्टियां इकाई 1 में वर्णित नियमों के अनुसार बनाई गई हैं।

7. शासन के अस्थाई अंग के सूचीकृत मुखपृष्ठ (Cataloguing of Title page of Temporary Organ of Government)

मुखपृष्ठ 4

(शासन व उसका अस्थाई अंग)

MODERNIZATION OF INDIAN BANK INDUSTRY

Report of the Committee on Bank Industry

सत्यमेव जयते

Ministry of Commerce, Government of India, New Delhi

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनाएँ

Call No. X62.44'N94t N95

Acc. No. 154332

Pages ii, 519

Size 28 cm

Note The committee was appointed by Government of India under the chairmanship of Prof Kanta Ahuja in 1994.

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	X62.44'N94t N95	
	(1994) (Chairperson : Kanta Ahuja). 154332	INDIA, BANK INDUSTRY (Committee on-) Modernization of Indian bank industry: Report.

संकेत
(Tracing)

		Report, India, Bank Industry (Committee on-) (1994). Report, Ahuja Committee. India, Bank. Bank, Credit. Credit, Economics. Economics. India, Bank Industry (Committee on-) (1994) (Chairperson : Kanta Ahuja). Ahuja Committee.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1
(Class Index Entry - 1)

	REPORT, INDIA, BANK INDUSTRY (Committee on-) (1994).	
	see the Number	For documents in this Class and its Subdivisions, Classified Part of the catalogue under the Class X62.44'N94t

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2
(Class Index Entry - 2)

	REPORT, AHUJA COMMITTEE.	
	Class Number	For documents ..... X62.44'N94t

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-3
(Class Index Entry - 3)

	INDIA, BANK.	
	Class Number	For documents X62.44

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-4
(Class Index Entry - 4)

	BANK, CREDIT.	
	Class Number	For documents X62

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-5
(Class Index Entry - 5)

	CREDIT, ECONOMICS.	
	Class Number	For documents X6

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-6
(Class Index Entry - 6)

	ECONOMICS.	
	Class Number	For documents X

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि-1
(Author – Book Index Entry- 1)

	INDIA, BANK INDUSTRY (Committee on-) (1994)	
	(Chairperson : Kanta Ahuja).	Modernization of Indian bank industry. X62.44'N94t N95

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि-लेखक -2
(Author – Book Index Entry- 2)

	AHUJA COMMITTEE.	
		Modernization of Indian bank industry. X62.44'N94t N95

टिप्पणी :-

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का वरण नियमांक MD1 एवं उपकल्पन नियमांक JC6 व उसके उपखण्डों के अनुसार किया गया है तथा व्यष्टिकृत पद नियमांक JC71 व JC72 के अनुसार जोड़े गये हैं।
2. नियमांक KJ1* के अनुसार वर्गांक की अन्तिम कड़ी से दो वर्ग निर्देशी प्रविष्टियां तथा नियमांक MD117* के अनुसार दो लेखक निर्देशी प्रविष्टियां बनाई गई हैं।
3. अन्य सभी सहायक प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमानुसार बनाई गई हैं।

टिप्पणी : इस इकाई में वर्णित तारांकित (*) नियम रंगनाथन कृत केटालागिंग प्रेक्टिस से लिये गये हैं।

8. अभ्यासार्थ मुखपृष्ठ (Title Pages for Practice)

मुखपृष्ठ 1

(शासन व उसका प्रथम श्रेणी का प्रशासनिक अंग)

GOVERNMENT OF INDIA

MINISTRY OF EDUCATION

सत्यमेव जयते

Delhi

Manager of Publications,

1966

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनाएँ :

Call No.	T2:8,2'N57t4	J6	Acc. No.	8542
Pages	x, 90		Size	19.8 cm.

मुखपृष्ठ 2

(शासन व उसका एक प्रथम श्रेणी प्रशासनिक अंग)

THE INDIAN TAXATION PATTERN

सत्यमेव जयते

Government of India

Ministry of Finance

The Manager of Publications,

New Delhi,

1990

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनाएँ :

Call No.	X72.44	N90	Acc. No.	29922
Pages	xii, 291		Size	22 x 14 cm.

मुखपृष्ठ 3

(शासन व उसका प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी का प्रशासकीय अंग)

Ministry of Health

Governement of Great Britian

Seal of Govt. of Great Britian

The Health and Welfare Services

A Report

H.M.S.O.

London, 2011

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनाएँ :

Call No.	L:5.44r	P11	Acc. No.	4682
Pages	i-ix + 1-180		Size	24 cm.
Note	Report contains charts and diagrams.			
H.T.P. :-	British Public Health and Social welfare report No. 114. Edited by Dr. Louis Kolin.			

मुखपृष्ठ 4

(शासन व उसका अस्थाई अंग)

REPORT

of the Expert Committee on Prevention of Slaughter of Cattle in India

सत्यमेव जयते

Ministry of Food and Agriculture

Govt. of India

New Delhi

The Manager of Publications, 1993

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनाएँ :

Call No.	KX31:527.44'N92t	N93	Acc. No.	446671
Pages	xiv, 128		Size	24 x 15 cm
Note	The Committee was set up by Government of India in 1992 under the chairmanship of Dr. K.P. Dutta			

मुखपृष्ठ 5

(शासन व उसका अस्थाई अंग)

COOPERATIVE AGRICULTURE IN INDIA

REPORT OF THE COMMITTEE ON AGRICULTURAL

COOPERATION IN INDIA, 1967

सत्यमेव जयते

Chairman : Dr. A.K. Swaminathan

Department of Agriculture

Government of India

New Delhi, 1968

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनाएँ :

Call No.	XM,8(J). 44'N67t	N68	Acc. No.	53331
Pages	xix, 419		Size	22.3 cm
Note	The Committee was setup in 1967 by Government of India.			

9. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची (Bibliography)

1. गौतम (जे एन) एवं निरजंन सिंह: एडवान्सड केटालागिंग. आगरा, वाई के पब्लिशर्स, 1998.
2. सूद (एस पी): क्रियात्मक सूचीकरण-सी सी सी. जयपुर, राज पब्लिशिंग हाउस, 2016.
3. वर्मा (ए के): क्रियात्मक अनुवर्ग सूचीकरण. रायपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1999.
4. Krishan Kumar : An introduction to cataloguing practice. New Delhi, Vikas, 1996.
5. Ranganathan (S R) : Classified catalogue code etc. Ed 5. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.
6. Ranganathan (S R) : Cataloguing practice. Ed 2. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.

इकाई 8

समष्टि लेखक: संस्था एवं इसका प्रथम श्रेणी का अंग (Corporate Author : Institution and its Organ of First Remove)

उद्देश्य (Objectives)

1. संस्था को परिभाषित करना।
2. संस्था एवं उसके प्रथम श्रेणी के अंग को सूचीकृत करने के नियमों की व्याख्या करना।

संरचना (Structure)

1. संस्था: परिचय एवं परिभाषा
2. शीर्षक वरण के नियम
   - 2.1 व्यक्ति बनाम संस्था
   - 2.2 शासन बनाम संस्था
3. शीर्षक उपकल्पन के नियम
4. सूचीकृत मुखपृष्ठ: संस्था व उसके अंग
   - 4.1 संस्था
   - 4.2 संस्था व उसका प्रथम श्रेणी का अंग
   - 4.3 संस्था व उसका अस्थाई अंग
5. अभ्यासार्थ मुखपृष्ठ
6. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची

1. संस्था : परिचय एवं परिभाषा (Institution : Introduction and Definition)

शासन के समान ही संस्था भी समष्टि निकाय की एक श्रेणी है तथा उसके द्वारा रचित ग्रन्थों को संस्था के नाम से ही जाना जाता है। संस्थागत प्रकाशनों में निहित विचारों के लिये संस्था उत्तरदायी होती है तथा उन प्रकाशनों के लेखक के रूप में जानी जाती है।

रंगनाथन ने सी सी सी नियमांक FC23 के अन्तर्गत संस्था को निम्नलिखित प्रकार परिभाषित किया है -

"**अर्थ 1:** शासन के अतिरिक्त अन्य प्रकार का स्वाधीन या स्वायत्तशासी समष्टि निकाय। इसका निर्माण शासन द्वारा किया जा सकता है अथवा इसका गठन किसी अधिनियम के अन्तर्गत अथवा स्वैच्छिक रूप से औपचारिक या अनौपचारिक रूप में किया जा सकता है। ये मात्र सम्मेलन आयोजन

के अतिरिक्त अन्य कार्य करते हुये निरन्तर अस्तित्व में रहती है या निरन्तर अस्तित्व बनाये रखने के लिये प्रयत्नशील रहती है।"

अर्थ 2: उपर्युक्त अर्थ 1 में परिभाषित संस्था का अंग।"

उदाहरणार्थ, राजस्थान ग्रन्थालय संघ तथा राजस्थान विश्वविद्यालय अर्थ 1 के अनुसार संस्था है तथा राजस्थान ग्रन्थालय संघ की परिषद् व राजस्थान विश्वविद्यालय का समाजशास्त्र विभाग भी अर्थ 2 के अनुसार संस्था है।

2. शीर्षक वरण के नियम (Rules of Choice of Heading)

2.1 व्यक्ति बनाम संस्था (Person V/s Institution)

यदि ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर लेखकीय विवरण में मात्र शासन अथवा उसके अंग का नाम दिया गया हो, तो शीर्षक वरण में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होती तथा उन्हें लेखक के रूप में स्वीकार कर उसके नामान्तर्गत शीर्षक का निर्माण कर लिया जाता हे, परन्तु यदि किसी व्यक्ति का नाम तथा शासन या उसके अंग, दोनों ही लेखक के नाम के स्थान पर अंकित हों तो शीर्षक के निर्धारण में कठिनाई होती है। सी सी सी में इस प्रकार के लेखकीय द्वन्द्व के समाधान के लिये नियमांक GC31 व GC32 का प्रावधान किया गया है।

नियमांक GC31 : यदि ग्रन्थ समष्टि निकाय के उद्देश्य, कार्य या दृष्टिकोण सम्बन्धी वैचारिक (Deliberative), विधायी (Legislative), निर्देशात्मक (Directive) न्यायिक (Judicial), प्रशासनिक (Administrative) अथवा सामान्य प्रकृति (Routine character) का हो तो ऐसे ग्रन्थ को समष्टि निकाय का लेखकत्व प्रदान किया जाना चाहिए। मात्र इस कारण से कि ग्रन्थ समष्टि निकाय द्वारा प्रकाशित, वित्तीय सहायता प्राप्त, मान्यता प्राप्त, प्रायोजित या प्राधिकृत है, उसे समष्टि लेखकत्व का मानने का यथेष्ट कारण नहीं है और इसी आधार पर व्यक्तिगत लेखकत्व को अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

नियमांक GC32 : यदि ग्रन्थ का मुख्य कार्य ज्ञान के क्षेत्र की सीमाओं में वृद्धि करना या प्रखर करना हो तथा ग्रन्थ में वर्णित विचार एवं अभिव्यक्ति की जिम्मेदारी व्यक्ति पर हो, न कि उस पद पर जिस पर कि वह समष्टि निकाय में आसीन है। चाहे वह वेतनभोगी कर्मचारी हो या अवैतनिक अथवा समष्टि निकाय का सदस्य हो तो उसे व्यक्तिगत लेखक का ग्रन्थ माना जायेगा। यदि ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर जहां सामान्यतया लेखक का नाम अंकित होता है वहां समष्टि निकाय के पदाधिकारी के नाम का उल्लेख होने पर भी ग्रन्थ को व्यक्तिगत लेखकत्व का मानने का यथेष्ट कारण नहीं है और इसी आधार पर उसे समष्टि लेखकत्व का होने से भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

2.2 शासन बनाम संस्था (Government V/s Institution)

शासन बनाम संस्था के लेखकीय द्वन्द्व के समाधान के लिये नियमांक GD2 व GD3 सहायक होते हैं।

3. शीर्षक उपकल्पन के नियम (Rules of Rendering of Heading)

संस्था के उपकल्पन के लिये सी सी सी सूची संहिता में निम्नलिखित नियमों का प्रावधान किया गया है-

संस्था के नाम का रूप (Form of the Name of Institution)

सी सी सी सूची संहिता में सम्पूर्ण संस्था के शीर्षक के उपकल्पन के लिये निम्नलिखित नियमों का प्रावधान किया गया है-

नियमांक JD1: संस्था के नाम के उपकल्पन में संस्था का संक्षिप्त नाम देना चाहिए, जो

1. मुखपृष्ठ
2. संक्षिप्त मुखपृष्ठ
3. ग्रन्थ के किसी अन्य भाग में उपलब्ध हो।

नियमांक JD16 : यदि विभिन्न ग्रन्थों में संस्था का नाम भिन्न-भिन्न रूपों में मिले तो उसके नाम के उपकल्पन में नाम में एकरूपता (Uniform name) का प्रयोग करना चाहिए।

नियमांक JD17* : संस्था के नाम के शीर्षक के उपकल्पन में संस्था के विषय या अन्य विशेषतासूचक शब्द या शब्द-समूह प्रविष्टि पद (Entry element) होगा।

नियमांक JD171* : संस्था के नाम के शेष शब्दों को गौण पद (Secondary element) के रूप में रखना चाहिए।

नियमांक JD 172* : यदि वह शब्द-समूह जिनसे कि प्रविष्टि पद बना हो, संस्था के प्रारम्भ के अतिरिक्त अन्य किसी भाग से लिया गया हो, तो गौण पद में उस स्थान को छोटी आड़ी रेखा (Dash) द्वारा दर्शाना चाहिए।

नियमांक JD 173* : यदि संस्था के नाम में प्रविष्टि पद (शब्द या शब्द-समूह) एकवचन कर्तृकारक रूप (Singular nominative form) में नहीं है तो गौण पद में इस दर्शाने के लिये छोटी आड़ी रेखा (Dash) खींची जाती है।

नियमांक JD 174* : संस्था के नाम में प्रविष्टि पद (शब्द या शब्द-समूह) एकवचन कर्त्कारक रूप (Singular nominative form) में पहले आता हो तो गौण पद में इसे दर्शाने के लिये छोटी आड़ी रेखा (Dash) का प्रयोग किया जाता है तथा इसके पश्चात् रूपान्तर शेष (Inflexional ending) लिखा जायेगा।

नियमांक JD 175* : विश्वविद्यालय का नाम आदि-विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, विद्यालय, प्रयोगशाला, ग्रन्थालय, संग्रहालय और अन्य कोई इसी प्रकार की परम्परागत संस्था होने पर नियमांक JD17* का प्रयोग नहीं होगा तथा प्रविष्टि पद क्रमशः विश्वविद्यालय आदि ही होगा। गौण पद नियमांक JD171* के अन्तर्गत ही उपकल्पित किये जायेंगे।

नियमांक JD 177* अन्य संस्थाओं के नाम-यदि नियमांक JD17* या JD175* के अन्तर्गत संस्था के प्रविष्टि पद का निर्धारण न हो पाये तो नियमांक JD11 से नियमांक JD16 को ध्यान में रखते हुये सम्पूर्ण संस्था के नाम को ही प्रविष्टि पद मानना चाहिए।

नाम का पद लोप (Ommissions from Name)

सी सी सी सूची संहिता में संस्था के नाम के पूर्व लगे कुछ शब्दों को हटाने के लिये निम्नलिखित नियमों का प्रावधान किया गया है-

नियमांक JD12 : संस्था के नाम के उपकल्पन में उसके प्रारम्भ में प्रयुक्त प्रारम्भिक उपपद (Initial articles a, an, the) को हटा दिया जाना चाहिए।

नियमांक JD 13 : संस्था के नाम के उपकल्पन में उसके नाम के प्रारम्भ, अन्त या किसी अन्य स्थान पर लगे आदरसूचक पदों को हटा दिया जाना चाहिए। जैसे Shri Mahajan Sabha,Jaipur का उपकल्पन

MAHAJAN (Sabha) (Jaipur) होगा।

नियमांक JD 14 : ऐसी संस्था के उपकल्पन में, जो किसी व्यक्ति विशेष के नाम से प्रारम्भ हो तथा उस व्यक्ति के नाम से पूर्व कोई सम्मानसूचक पद या उपाधि या व्यवसायिक पद प्रयुक्त हो तो उन प्रारम्भिक पदों को हटा दिया जायेगा। जैसे Padmashri Dr. Ranganathan Memorial Library, Banglore का उपकल्पन

RANGANATHAN (Memorial Library) (Banglore) होगा।

व्यष्टिकरण (Individualization)

नियमांक JD 2 : यदि संस्था का केवल नाम उसे व्यष्टिकृत करने में असमर्थ हो तो समरूपता (Homonym) समाप्त करने के लिये निम्नलिखित व्यष्टिकृत पदों (Individualizing Elements) का प्रयोग किया जाये-

1. स्थान, यदि वह स्थानीय संस्था हो,

2. देश, यदि वह राष्ट्रीय स्तर की संस्था हो,

3. संघठक राज्य (Constitutent State) जिला, तहसील आदि यदि संस्था राज्य, जिला, तहसील स्तर की हो।

4. मुख्यालय (Head Quarter) यदि उपर्युक्त 1-3 में प्रस्तावित पदों द्वारा भी संस्था को सुविधापूर्वक व्यष्टिकृत न किया जा सके तो मुख्यालय का प्रयोग किया जायेगा।

उपर्युक्त नियम का प्रयोग करने के बाद भी यदि संस्था को व्यष्टिकृत रूप प्राप्त न हो सके और उसकी समरूपता समाप्त न हो सके तो द्वितीय व्यष्टिकृत पद लगाने का प्रावधान अधोलिखित नियम द्वारा किया गया है-

नियमांक JD 21 : स्थापना वर्ष (Year of Foundation)

यदि नियमांक JD2 में व्यष्टिकृत पद तथा संस्था के नाम के साथ किसी व्यक्ति का स्थान का नाम समग्र रूप से जुड़ा होने के बाद भी समरूपता पूर्णतया समाप्त नहीं हो तो संस्था के स्थापना वर्ष को द्वितीय व्यष्टिकृत पद के रूप में प्रयोग किया जायेगा। उदाहरणार्थ, अजमेर में दो सार्वजनिक ग्रन्थालय हों तो उन्हें निम्नलिखित प्रकार से उपकल्पित किया जायेगा -

1. LIBRARY (Public-) (Ajmer) (1939).
2. LIBRARY (Public-) (Ajmer) (1951).

सी सी सी में व्यष्टिकृत पद सदैव वृत्ताकार कोष्ठकों में जोड़े जाते हैं।

संस्था के अंग (Organ of Institution)

संस्था के अंगों को शासन के अंगों के समान निम्नलिखित प्रकार से विभाजित किया जा सकता है-

1. स्थायी अंग (Permanent organ) (जो कि अनिश्चित अवधि के लिये होते हैं)

2. अस्थायी अंग (Temporary organ) (जो कि विशेष कार्य व निश्चित अवधि के लिये होता है)

स्थायी अंगों को पुनः तीन भागों में बांटा गया है -

(अ) वैधानिक अंग (Constitutional organ)

(ब) संस्था प्रमुख (Head of Institution)

(स) प्रशासकीय अंग (Administrative organ)

अंगों का उपकल्पन (Rendering of Organ)

सी सी सी में संस्था के अंगों के उपकल्पन के लिये बहुविध समष्टि शीर्षक (Multiple Corporate Heading) बनाने का प्रावधान है।

आपके पाठ्यक्रम में संस्था के प्रशासकीय अंग के प्रथम स्तर के अंग तथा अस्थाई अंग प्रस्तावित है। इसलिये इतने ही नियमों का अध्ययन किया जाता है।

प्रशासकीय अंग (Administrative Organ)

संस्था के प्रशासकीय अंग के उपकल्पन में प्रशासकीय विभाग के कार्यों (Sphere of work)को निरूपित करने वाले शब्द अथवा शब्द समूह को प्रविष्टि पद के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। जै Division of Cataloguing and Classification of American Library Association को निम्नलिखित प्रकार से उपकल्पित किया जायेगा-

LIBRARY (American-Association), CATALOGUING AND CLASSFICATION (Division of-).

अस्थायी अंग (Temporary Organ)

जब कोई संस्था किसी विशेष कार्य पूर्ति हेतु किसी तदर्थ समिति (Adhoc Committee) का गठन किसी व्यक्ति की अध्यक्षता में करती है तो उस समिति को उस संस्था का अस्थायी अंग कहा जाता है।

संस्था के अस्थायी अंग का उपकल्पन शासन तथा उसके प्रशासनिक अंग के समान ही होता है तथा व्यष्टिकरण के लिये उसका स्थापना वर्ष जोड़ा जाता है। यदि तदर्थ आयोग, समिति आदि हों तो उसके अध्यक्ष का नाम व्यष्टिकृत पद के बाद वृत्ताकार कोष्ठक में जोड़ा जाता है।

उदाहरणार्थ -

BANK (Reserve-of India), AGRICULTURAL CREDIT (Advisory Committee on-) (1958) (Chairman : Kasturi Santhanam).

4. सूचीकृत मुखपृष्ठ : संस्था व उसके अंग (Catalogued Title Pages : Institution and its organs)

4.1 संस्था

मुखपृष्ठ 1

(संस्था)

BOTANICAL SOCIETY OF INDIA

Seal of Society

Classification and Description of Plants found in India

Edited by

Dr. Ramesh Chandra

The Society, New Delhi,

1991

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	I : 11.44	N91	Acc. No.	96411
Pages	iv, 431		Size	23 cm.

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	I :11.44	N91
	India. Ed 96411	BOTANICAL (Society of India). Classification and description of plants found in by Ramesh Chandra.

संकेत
(Tracing)

India, Nomenclature, Botany.
Nomenclature, Botany.
Botany.

Botanical (Society of India).
Ramesh Chandra, Ed.

Classification.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1
(Class Index Entry - 1)

	INDIA,	NOMENCLATURE, BOTANY.
	see the Number	For documents in this class and its Subdivisions, Classified Part of the catalogue under the Class I:11.44

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2
(Class Index Entry - 2)

	NOMENCLATURE, BOTANY.	
	Class Number	For documents I:11

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-3
(Class Index Entry - 3)

	BOTANY.	
	Class Number	For documents I

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Author - Book Index Entry)

	BOTANICAL (Society of India).	
	India.	Classification and description of plants found in I:11.44 N91

सहकारक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Collaborator - Book Index Entry)

	RAMESH CHANDRA, Ed.	
	description	Botanical (Society of India) : Classification and of plants found in India. I:11.44 N91

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि-वैकल्पिक नाम
(Alternate Name – Cross Reference Index Entry)

	CLASS	FICATION.
		See NOMENCLATURE.

टिप्पणी :

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का वरण नियमांक MD1 व उपकल्पन नियमांक MD21, JD1, JD171* एवं JD172* के अनुसार किया गया है।
2. वैकल्पिक नाम नामान्तर प्रविष्टि नियमांक LB के अनुसार बनाई गई है।
3. अन्य सभी सहायक प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमों के अनुसार बनाई गई है।

मुखपृष्ठ 2

(संस्था)

REVIEW OF INDIAN IRON INDUSTRY

National Council of Applied Economic Research

New Delhi

THE MANAGER OF PUBLICATIONS

August, 1990

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No. X8(F182).44 N90

Acc. No. 17755

Pages 204

Size 21 cm.

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	X8(F182).44 N90	
	Research	ECONOMIC (National Council of Applied-) (India). Review of Indian iron industry.
	17755	

संकेत
(Tracing)

India, Iron, Industry.
Iron, Industry.
Industry, Economics.
Economics.

Economic (National Council of Applied-Research) (India).

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1
(Class Index Entry - 1)

	INDIA, I	RON, INDUSTRY.
	see the Number	For documents in this class and its Subdivisions, Classified Part of the catalogue under the Class X8(F182).44

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2

(Class Index Entry - 2)

	IRON, INDUSTRY.	
	Class Number	For documents ..... X8(F182)

वर्ग निर्देशी प्रविष्ट-3

(Class Index Entry - 3)

	INDUSTRY, ECONOMICS.	
	Class Number	For documents X8

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-4

(Class Index Entry - 4)

	ECONOMICS.	
	Class Number	For documents X

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

(Author – Book Index Entry)

	ECONOMICS (National Council of Applied-Research)	
	(India).	Review of Indian iron industry. X8(F182).44 N90

टिप्पणी :

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का वरण नियमांक MD1 व उपकल्पन नियमांक MD21, JD1, JD171*, JD172* तथा व्यष्टिकरण नियमांक JD2 के अनुसार किया गया है।
2. अन्य सभी सहायक प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमों के अनुसार बनाई गई हैं।

4.2 संस्था व उसका प्रथम श्रेणी का अंग

मुखपृष्ठ 3

(संस्था एवं उसका प्रथम श्रेणी का प्रशासकीय अंग)

INDIAN WOMEN IN RURAL DEVELOPMENT : Critical Issues

Seal of ILO

Women Cell

International Labour Organization

Geneva

ILO, 1998

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No. Y15-31:7:7.44 N98

Acc. No. 112233

Pages ix, 201 p.

Size 27cm.

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	Y15-31:7:7.44 N98	
	(Cell). issues. 112233	LABOUR (International – Organization), WOMEN Indian women in rural development : Critical

संकेत
(Tracing)

India, Conservation, Personality, Rural, Woman.
Conservation, Personality, Rural, Woman.
Personality, Rural, Woman.
Rural, Woman, Sociology.
Woman, Sociology.
Sociology.

Labour (International-Organization), Women (Cell).

Improvement.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1
(Class Index Entry - 1)

	INDIA, CONSERVATION, PERSONALITY, RURAL, WOMAN.	
	see the Number	For documents in this class and its Subdivisions, Classified Part of the catalogue under the Class Y15-31:7:7.44

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2
(Class Index Entry - 2)

	CONSERVATION, PERSONALITY, RURAL, WOMAN.	
	Class Number	For documents Y15-31:7:7

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-3

(Class Index Entry - 3)

	PERSONALITY, RURAL, WOMAN.	
	Class Number	For documents Y15-31:7

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-4

(Class Index Entry - 4)

	RURAL, WOMAN, SOCIOLOGY.	
	Class Number	For documents Y15-31

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-5

(Class Index Entry - 5)

	WOMAN, SOCIOLOGY.	
	Class Number	For documents Y15

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-6

(Class Index Entry - 6)

	SOCIOLOGY.	
	Class Number	For documents ..... Y

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Author – Book Index Entry)

	LABOUR (International – Organization), WOMEN (Cell).	
		Indian women in rural development. Y15-31:7:7.44 N98

नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि - वैकल्पिक नाम
(Alternative Name – Cross Reference Index Entry)

	IMPROVEMENT.	
		See CONSERVATION.

टिप्पणी :

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का वरण नियमांक MD1 व उपकल्पन नियमांक MD21, JC21, JD1, JD171* एवं JD174* के अनुसार किया गया।
2. अन्य सभी सहायक प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमों के अनुसार बनाई गई हैं।

4.3 संस्था व उसका अस्थाई अंग

मुखपृष्ठ 4

(संस्था व उसका अस्थायी अंग)

Report of the Advisory Committee on Agricultural Credit, 1959

Seal of
R.B.I.

RESERVE BANK OF INDIA, BOMBAY,

1961

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	X8(J):6.44'N59t	K1	Acc. No.	167721
Size	21 cm.		Pages	90

Note : Committee was set up under the Chairmanship of Kasturi Santhanam in 1958.

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	X8(J):6.44'N59t K1	
	CREDIT Kasturi Santhanam). 16721	BANK (Reserve-of India), AGRICULTURAL. (Advisory Committee on-) (1958) (Chairman : Report, 1959.

संकेत
(Tracing)

Report, Bank (Reserve — of India), Agricultural Credit (Advisory Committee on--) (1958).
Report, Santhanam Committee
India, Financing, Agricultural economics.
Financing, Agricultural economics.
Agricultural economics.
Industry, Economics.
Economics.

Continued in the next card.

संकेत का संतत पत्रक
(Continue Card of Tracing)

	X8(J):6.44'N59t K1	Continued
		Bank (Reserve—of India), Agricultural Credit (Advisory Committee on--) (1958) (Chairman : Kasturi Santhanam). Santhanam Committee.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1

(Class Index Entry - 1)

	REPORT, BANK (Reserve –- of India), AGRICULTURAL	
	CREDIT (Advisory Committee on-) (1958).	
	see the	For documents in this class and its Subdivisions, Classified Part of the catalogue under the Class
	Number	X8(J):6.44'N59t

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2

(Class Index Entry - 2)

	REPORT, SANTHANAM COMMITTEE.	
	Class Number	For documents ..... X8(J):6.44'N59t

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-3

(Class Index Entry - 3)

	INDIA, FINANCING, AGRICULTURAL ECONOMICS.	
	Class Number	For documents ..... X8(J):6.44

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-4

(Class Index Entry - 4)

	FINANCING, AGRICULTURAL ECONOMICS.	
	Class Number	For documents ..... X8(J):6

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-5
(Class Index Entry - 5)

	AGRICULTURAL ECONOMICS.	
	Class Number	For documents ..... X8(J)

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-6
(Class Index Entry - 6)

	INDUSTRY, ECONOMICS.	
	Class Number	For documents X8

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-7
(Class Index Entry - 7)

	ECONOMICS.	
	Class Number	For documents X

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - 1
(Author – Book Index Entry - 1)

	BANK (Reserve – of India), AGRICULTURAL CREDIT	
	(Advisory Committee on--) (1958) (Chairman : Kasturi Santhanam).	Report, 1959. X8(J):6.44'N59t K1

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - 2
(Author – Book Index Entry - 2)

	SANTH	ANAM COMMITTEE.
		Report, 1959. X8(J):6.44'N59t K1

टिप्पणी :

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक व उपकल्पन नियमांक JD3 के अनुसार किया गया है।
2. मुखपृष्ठ 23 की वर्ग निर्देशी प्रविष्टियों के समान ही अन्तित कड़ी से दो वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ तैयार की गई है।
3. नियमांक MK117* के अनुसार द्वितीय लेखक निर्देशी प्रविष्टि बनाई गई है।

टिप्पणी : इस इकाई में वर्णित तारांकित (*) नियम रंगनाथन कृत केटालागिंग प्रेक्टिस से लिये गये हैं।

9. अभ्यासार्थ मुखपृष्ठ (Title Pages for Practice)

मुखपृष्ठ 1

(संस्था)

INDIAN COUNCIL OF MEDICAL RESEARCH,
New Delhi

SEAL OF ICMR

Research activities : A biographical profile

Edited by

M.N. Rajan

Asia Publishing House,

Bombay New Delhi Madras,

1979

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	L.44w	L9	`	Acc. No.	398371
Pages	ix, 212			Size	19.3 cm.

मुखपृष्ठ 2

(संस्था)

Rural Medical Practitioners Council of Uttar Pradesh

Seal of Council

Eradication of Malaria

Lucknow

1970

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	L35:54261	N70		Acc. No.	33771
Pages	213			Size	21.9 cm.

मुखपृष्ठ 3

(संस्था एवं ग्रन्थमाला)

A DRAFT PUBLIC LIBRARIES BILL FOR THE PRESIDENCY OF MADRAS

by

Madras Library Association

Published by

Madras Library Association

August, 1931

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	22.4411 : (Z) N31
Acc. No.	23911
Pages	411
Size	21 cm.
H.T.P.	Madras Library Association, Legislative series. No. 2

मुखपृष्ठ 4

(संस्था व उसका प्रथम श्रेणी का अंग)

Standard Library Furniture
For Large Libraries

Library Furniture Committee

INDIAN LIBRARY ASSOCIATION

Delhi,

ILA, 1982

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	2:(M2)	M2	Acc. No.	7417
Copyright	1982 by I.L.A.		Size	20.2 cm.
Pages	108			

मुखपृष्ठ 5

(संस्था एवं उसका प्रथम श्रेणी का अंग व सह-सहकारक)

Mathematics at the University

An Introduction to University Mathematics

For students

Prepared by

The University and School Committee

of the

Mathematics Association of Great Britain

Edited by

H.L. Cornelius

and

H. Neill Bell

London,

Mathematics Association of Great Britian

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	B	N74	Acc. No.	267721
Size	21.8 cm.		Page	217 p.

मुखपृष्ठ 6

(संस्था एवं उसका प्रथम श्रेणी का अंग, एकल सहकारक एवं ग्रन्थमाला)

Australian Library Association Occasional Paper No. 3.

- -- --

Banking in Australia

Books of Australian Public Libraries

Chosen by

The Commeittee of Library Service to Books

of

Australian Library Association

Editor :

Charles A. Dubroy

AUSTRALIAN LIBRARY ASSOCIATION

MELBOURNE

1970

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No. X62.8aN7 L0

Acc. No. 97321

Size. 23 x 14 cm.

Pages vi, 91

---

10. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची (Bibliography)

1. गौतम (जे एन) एवं निरजंन सिंह: एडवान्सड केटालागिंग. आगरा, वाई के पब्लिशर्स, 1998.
2. सूद (एस पी): क्रियात्मक सूचीकरण-सी सी सी. जयपुर, राज पब्लिशिंग हाउस, 2016.
3. वर्मा (ए के): क्रियात्मक अनुवर्ग सूचीकरण. रायपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1999.
4. Krishan Kumar : An introduction to cataloguing practice. New Delhi, Vikas, 1996.
5. Noorul Hasan and others : Cataloguing practice. New Delhi, Gitanjali Publishing House, 1984.
6. Ranganathan (S R) : Classified catalogue code etc. Ed 5. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.
7. Ranganathan (S R) : Cataloguing practice. Ed 2. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.

इकाई 9

समष्टि लेखक: सम्मेलन (Corporate Author : Conference)

उद्देश्य (Objectives)

1. सम्मेलन को परिभाषित करना।
2. सम्मेलन को सूचीकृत करने के नियमों की व्याख्या करना।

संरचना (Structure)

1. सम्मेलन: परिचय एवं परिभाषा
2. शीर्षक वरण के नियम
3. शीर्षक उपकल्पन के नियम
   - 3.1 आवधिक सम्मेलन
   - 3.2 अनावधिक सम्मेलन
   - 3.3 सम्मेलन के नाम का रूप
   - 3.4 नाम से पद लोप
   - 3.5 अंकों से प्रारम्भ होने वाले सम्मेलन
   - 3.6 भाषा
   - 3.7 व्यष्टिकरण
   - 3.8 राजनयिक सम्मेलन
   - 3.9 बिना विशिष्ट नाम वाले सम्मेलन
   - 3.10 सम्मेलन के अंग
   - 3.11 अंग सम्मेलन
4. सूचीकृत मुखपृष्ठ
5. अभ्यासार्थ मुखपृष्ठ
6. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची

1. सम्मेलनः परिचय एवं परिभाषा (Conference: Introduction and Definition)

अनेक प्रकाशनों के लेखक-सम्मेलन, सभायें, अधिवेशन आदि होते हैं। ऐसे प्रकाशनों में मुख्यतया उनकी कार्यावली (Agenda), कार्यवृत्त (Minutes), प्रस्ताव (Resolutions), कार्यवाही (Proceedings) आदि दिये रहते हैं।

रंगनाथन ने सी सी सी नियमांक FC24 के अन्तर्गत सम्मेलन को निम्नलिखित प्रकार परिभाषित किया है-

"**अर्थ 1:** विचार विनिमय या विचार भावनाओं के निर्माण तथा अभिव्यक्ति हेतु तदर्थ सम्मेलन

1. जो इनके द्वारा नहीं बुलाया जाता हो-

1.1 शासन और शासन के मात्र अपने कर्मचारियों या संविधान सभा द्वारा सम्प्रभुता सम्पन्न राज्य बनाने हेतु, या

1.2 संस्था और संस्था के मात्र अपने सदस्यों या संस्था की संस्थापना सभा द्वारा संस्था के निर्माण हेतु, या

1.3 एक या अधिक शासनों द्वारा संयुक्त रूप से मात्र तथा उसके कर्मचारियों तक ही सीमित हो, या

1.4 एक से अधिक संस्थाओं द्वारा संयुक्त रूप से तथा मात्र उसके सदस्यों तक ही सीमित हो।

2. जो इनके द्वारा आयोजित एवं संचालित किया जाता हो-

2.1 कुछ व्यक्तियों और अथवा समष्टि निकायों द्वारा स्वेच्छापूर्ण सामान्य रुचि के विषयों पर विचार विनिमय हेतु, या

2.2 निकाय के कार्य या अस्तित्व, सम्मेलन आयोजित करने तथा संचालित करने के अलावा और कोई न हो, या

2.3 निकाय जिसका प्राथमिक कार्य मात्र समय-समय पर सम्मेलन बुलाना और संचालित करना हो।

अर्थ 2: उपर्युक्त परिभाषित अर्थ 1 के अन्तर्गत सम्मेलन के अंग।

उदाहरणार्थ -

भारतीय गणित सम्मेलन 1957 अर्थ 1 के अनुसार सम्मेलन है तथा इसकी स्वागत समिति अर्थ 2 के अनुसार सम्मेलन है।"

2. शीर्षक वरण के नियम (Rules of Choice of Heading)

व्यक्ति बनाम सम्मेलन (**Person V/s Conference**)

यदि ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर लेखकीय विवरण के स्थान पर मात्र सम्मेलन, सभा या अधिवेशन का नाम अंकित हो तो शीर्षक वरण में कोई कठिनाई नहीं होती, परन्तु यदि सम्मेलन तथा व्यक्ति या व्यक्तियों के नाम भी दिये गये हों तो सूचीकार के लिये शीर्षक वरण में कठिनाई उत्पन्न हो जाती है। इस प्रकार की लेखकीय द्वन्द्वात्मक स्थिति के समाधान के लिये नियमांक GC5 सहायक होता है।

नियमांक GC5 : सम्मेलन को मात्र उसकी कार्यसूचियों, कार्यवृत्तों, प्रस्तावों, कार्यवाही के प्रतिवेदनों तथा ऐसे ही सामूहिक अभिव्यक्त विचारों का लेखक माना जाता है लेकिन व्यक्ति

(व्यक्तियों) अथवा निकाय (निकायों) द्वारा सम्मेलन में प्रस्तुत विद्वत् लेखों के संग्रह अथवा स्मरणपत्रों (Memoranda) के लिये सम्बन्धित व्यक्ति (व्यक्तियों) अथवा निकाय (निकायों) को ही लेखक मानना चाहिए।

सम्मेलन के लिये प्रतिनिधिमण्डल (Delegation to Conference)

किसी सम्मेलन में गये प्रतिनिधिमण्डल द्वारा सम्मेलन में अभिव्यक्त विचारों का उत्तरदायित्व प्रतिनिधिमण्डल भेजने वाली संस्था अथवा देश का होता है। नियमांक GD71 के अनुसार भेजने वाले देश अथवा संस्था को उसका लेखक मानते हुये उस देश अथवा संस्था व प्रतिनिधिमण्डल के नाम से शीर्षक का निर्माण किया जाना चाहिए।

3. शीर्षक उपकल्पन के नियम (Rules of Rendering of Heading)

सी सी सी सूची संहिता में सम्मेलन को निम्नलिखित दो भागों में विभाजित किया गया है तथा इसके उपकल्पन के लिये निम्नलिखित प्रावधान है -

1. आवधिक सम्मेलन (Periodic Conference)
2. अनावधिक सम्मेलन (Non-Periodic Conference)

अनावधिक सम्मेलन को पुनः तीन भागों में बांटा गया है -

(अ) विशिष्ट नाम वाले सम्मेलन (Conference with Specific Name)

(ब) राजनयिक सम्मेलन (Diplomatic Conference)

(स) बिना विशिष्ट नाम वाले सम्मेलन (Diplomatic Conference)।

3.1 आवधिक सम्मेलन (Periodic Conference)

निश्चित अवधि या अन्तराल के पश्चात् होने वाले सम्मेलनों को सामयिक प्रकाशनों (Periodical publication) को सूचीकृत करने के लिये नियमांक JE2 में नियमांक PB एवं उसके उपखण्डों के अनुसार सूचीकृत करने को कहा गया है।

3.2 अनावधिक सम्मेलन (Non-periodic Conference)

विशिष्ट नाम वाले सम्मेलनों को सूचीकृत करने के लिये सी सी सी में निम्नलिखित नियमों का प्रावधान किया गया है -

3.3 सम्मेलन के नाम का रूप (Form of the Name of Conference)

नियमांक JE1 : विशिष्टि नाम वाले सम्मेलन के नाम का उपकल्पन संस्था के नाम के उपकल्पन के समान ही होगा अर्थात् सम्मेलन के नाम के उपकल्पन में सम्मेलन का वह संक्षिप्त नाम देना चाहिए, जो-

1. मुखपृष्ठ
2. संक्षिप्त मुखपृष्ठ
3. ग्रन्थ के किसी अन्य भाग में उपलब्ध हो।

नियमांक JE16 : यदि सम्मेलन का नाम विभिन्न ग्रन्थों में भिन्न-भिन्न रूपों में मिले तो उसके नाम के उपकल्पन में एकरूपता नाम (Uniform name) का प्रयोग करना चाहिए।

नियमांक JE17* : सम्मेलन के नाम के शीर्षक के उपकल्पन में सम्मेलन के विषय या अन्य विशेषतासूचक शब्द या शब्द-समूह प्रविष्टि पद (Entry element) होगा।

नियमांक JE171* : सम्मेलन के नाम के शेष शब्दों को गौण पद (Secondary element) के रूप में रखना चाहिए।

नियमांक JE172* : यदि वह शब्द या शब्द समूह जिनसे कि प्रविष्टि पद बना हो, सम्मेलन के प्रारम्भ के अतिरिक्त अन्य किसी भाग से लिया गया हो तो गौण पद में उस स्थान को छोटी आड़ी रेखा (Dash) द्वारा दर्शाना चाहिए।

नियमांक JE173* : यदि सम्मेलन के नाम में प्रविष्टि पद (शब्द या शब्द-समूह) एकवचन कर्तृकारक रूप (Singular nominative form) में नहीं है तो गौण पद में इसे दर्शाने के लिये छोटी आड़ी रेखा (Dash) खींची जाती है।

नियमांक JE174* : सम्मेलन के नाम में प्रविष्टि पद (शब्द या शब्द-समूह) एकवचन कर्तृकारक रूप (Singular nominative form) में पहले आता हो तो गौण पद में इसे दर्शाने के लिये छोटी आड़ी रेखा (Dash) का प्रयोग किया जाता है तथा इसके पश्चात् रूपान्त शेष (Inflexional ending) लिखा जायेगा।

3.4 नाम से पद लोप (Omissions from Name)

सी सी सी सूची संहिता में सम्मेलन के नाम के पूर्व लगे कुछ शब्दों को हटाने के लिये निम्नलिखित नियमों का प्रावधान किया गया है -

नियमांक JE12 : सम्मेलन के नाम के उपकल्पन में उसके प्रारम्भ में प्रयुक्त प्रारम्भिक उपपद (Initial articles a, an, the) को हटा दिया जाना चाहिए।

नियमांक JE13 : सम्मेलन के नाम के उपकल्पन में उसके नाम के प्रारम्भ, अन्त या किसी अन्य स्थान पर लगे आदरसूचक पदों को हटा दिया जाना चाहिए।

नियमांक JE14 : ऐसे सम्मेलन के उपकल्पन में, जो किसी व्यक्ति विशेष के नाम से प्रारम्भ हो तथा उस व्यक्ति के नाम से पूर्व कोई सम्मानसूचक पद या उपाधि या व्यवसायिक पद प्रयुक्त हो तो उन प्रारम्भिक पदों को हटा दिया जायेगा।

3.5 अंकों से प्रारम्भ होने वाले सम्मेलन (Numeral at the Beginning)

कुछ सम्मेलनों के नामों का प्रारम्भ किसी शब्द से न होकर अंकों से होता हो तो सम्मेलनों के नामों के उपकल्पन हेतु सी सी सी सूची संहिता में निम्नलिखित नियमों का प्रावधान किया गया है-

नियमांक JE15 : अंकों से प्रारम्भ होने वाले सम्मेलनों के नाम के उपकल्पन में, अंकों को सम्मेलन के शेष नाम की भाषा के अनुरूप शब्दों में लिखा जाना चाहिए।

3.6 भाषा (Language)

यदि ग्रन्थ पर सम्मेलन का नाम एक से अधिक भाषाओं में दिया गया हो तो सूचीकार के समक्ष यह समस्या आती है कि वह प्रविष्टि हेतु सम्मेलन के किस भाषा वाले नाम का प्रयोग करें। इस समस्या के निवारणार्थ सी सी सी सूची संहिता में निम्नलिखित नियम का प्रावधान किया गया है -

नियमांक JE11 : यदि सम्मेलन का नाम दो या अधिक भाषाओं में दिया गया हो तो उस भाषा वाले नाम का उपकल्पन हेतु प्रयोग करना चाहिये, जो ग्रन्थालय द्वारा निर्धारित भाषाओं के क्रम में पूर्व में आता हो।

3.7 व्यष्टिकरण (Individualization)

नियमांक JE2 : अनावधिक सम्मेलन के नाम के साथ उस स्थान का नाम जहां सम्मेलन सम्पन्न हुआ हो तथा सम्मेलन होने के वर्ष को जोड़ा जाना चाहिए।

1. LIBRARIAN (University-s Conference) (Jaipur) (1964).
2. RELIGION (International-Conference) (Varanasi) (1963).

3.8 राजनयिक सम्मेलन (Diplomatic Conference)

कुछ देशों व राष्ट्रों के प्रतिनिधियों का राजनयिक उद्देश्य से अस्थायी रूप से एकत्र होना ही राजनियक सम्मेलन कहलाता है। यह सम्मेलन प्रायः उस स्थान के नाम से विख्यात हो जाते हैं या जाने जाते हैं, जहां वे सम्पन्न होते हैं।

नियमांक JE3 : राजनयिक सम्मेलन, जो कि आवधिक न हो और स्थान का नाम सम्मेलन के नाम में न दिया गया हो तो उसे एक शब्द-समूह बनाने के लिये सम्मेलन के नाम से पूर्व उस स्थान का नाम जहां कि सम्मेलन आयोजित हुआ है, जोड़ा जायेगा तथा व्यष्टिकृत पद के रूप में सम्मेलन के वर्ष को भी अंकित किया जायेगा।

उदाहरणार्थ -

1. VIENA (Congress) (1814-15).
2. PARIS (Peace Conference) (1919).
3. SIMLA (Conference) (1974).

3.9 बिना विशिष्ट नाम वाले सम्मेलन (Conference without Specific Name)

कुछ सम्मेलन ऐसे होते हैं, जिनका कोई विशिष्ट नाम नहीं होता तथा यह सामान्यतया कुछ व्यक्तियों का समूह होता है, जो कि अपने समूह के सदस्यों की समस्याओं पर विचार विनिमय करता है। जैसे-राजनैतिक पीड़ित, वकील, कपड़ा मिल मालिक, भारतीय निवासी आदि।

नियमांक JE4*: यदि सम्मेलन को कोई विशिष्ट नाम न हो और वह अनावधिक हो तो व्यक्तियों के वर्ग के अनुरूप नाम दिया जाना चाहिए। जैसे-नागरिक, भारतीय निवासी, महिलाएं, व्यापारी, संगीतज्ञ आदि।

टिप्पणी : यहां यह बात ध्यान में रखी जानी चाहिए कि व्यक्तियों के वर्ग को दर्शाने वाले शब्द या शब्द समूह को प्रविष्टि पद बनाया जायेगा।

नियमांक JE41 : सम्मेलन के नाम के पश्चात् व्यष्टिकृत पद के रूप में उस स्थान के नाम का प्रयोग किया जायेगा, जहां कि सभा आयोजित की गई है।

उदाहरणार्थ -

CITIZEN (Bombay).

नियमांक JE42 : यदि उपर्युक्त नियमांक JE4 व JE41 के अनुसार उपकल्पित दो या अधिक सम्मेलन एक ही नाम के हों तो वर्ष मय माह व तिथि द्वितीय व्यष्टिकृत पद के रूप में जोड़े जायेंगे।

उदाहरणार्थ -

1. INDIAN RESIDENTS (Ceylon) (1978).
2. INDIAN RESIDENTS (Ceylon) (1982).

3.10 सम्मेलन के अंग (Organs of Conference)

नियमांक JE6* : सम्मेलन के अंगों का उपकल्पन शासन के अंगों के समान ही नियमांक JC2 से JC8 के सादृश्य किया जायेगा।

उदाहरणार्थ -

LIBRARY (Indian-Conference) (Indore) (1972), RECEPTION (Committee).

3.11 अंग सम्मेलन (Organ Conference)

नियमांक JE5 : जब कोई सम्मेलन स्वयं किसी दूसरी समष्टि निकाय का अंग हों तो उसके लिये बहुविध समष्टि शीर्षक (Multiple Corporate Heading) देना चाहिए।

नियमांक JE51 : सम्मेलन के उपकल्पित शीर्षक के पूर्व उस पैतृ निकाय का नाम जोड़ा जायेगा, जिसका सम्मेलन स्वयं अंग हैं।

उदाहरणार्थ -

RAJASTHAN, COLLECTORS (Conference) (Jaipur) (1990).

नियमांक JE52 : यदि अंग सम्मेलन का पैतृ निकाय दो या अधिक समष्टि निकायों का हो तो प्रत्येक पैतृ निकाय के नाम के बाद सम्मेलन का नाम दिया जायेगा। पैतृ निकायों को नामों को योजक शब्द जोड़ा जायेगा।

उदाहरणार्थ -

TAMILNADU, ENGINEER (Chief) and KARNATAKA, ENGINEER (Chief), KAVERI RIVER WATER (Conference) (Madras) (1985).

4. सूचीकृत मुखपृष्ठ-सम्मेलन (Catalogued Title Pages – Conference)

मुखपृष्ठ 1

(सम्मेलन)

PROCEEDINGS

The National Conference of Canadian Universities
Held at University of Alberta

5, 6 and 7th June, 1958

Publication Unit
University of Alberta, 1960

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No. T4p72,N58 N60
Acc. No. 44711
Pages 118
Size 22 x 15 cm.

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	T4p72,N58	N58
	44711	UNIVERSITY (National Conference of Canadian-ies) (Alberta) (1958). Proceedings.

संकेत
(Tracing)

Proceedings, University (National Conference of Canadian-ies) (Alberta) (1958).

Conference proceedings, University, Education.

University, Education.

Education.

University (National Conference of Canadian-ies) (Alberta) (1958).

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1
(Class Index Entry - 1)

	PROCEEDINGS, UNIVERSITY (National Conference of Canadian-ies) (Alberta) (1958).	
	see the Number	For documents in this class and its Subdivisions, Classified Part of the catalogue under the Class T4p72,N58

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2

(Class Index Entry - 2)

	CONFERENCE PROCEEDINGS, UNIVERSITY,	
	EDUCATION.	
	Class Number	For documents T4p

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-3

(Class Index Entry - 3)

	UNIVERSITY, EDUCATION.	
	Class Number	For documents T4

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-4

(Class Index Entry - 4)

	EDUCATION.	
	Class Number	For documents ..... T

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि

(Author – Book Index Entry)

	UNIVERSITY (National Conference of Canadian-ies)	
	(Alberta) (1958).	
		Proceedings. T4p72,N58 N60

टिप्पणी :

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का वरण नियमांक डक्1 व उपकल्पन नियमांक MD21, JE1 व उसके उपखण्डों तथा व्यष्टिकरण नियमांक JE2 के अनुसार किया गया है।
2. अन्य सभी सहायक प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमों के अनुसार बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ 2

(सम्मेलन एवं सम्पादक)

PROCEEDINGS

National Conference on Documentation and Networking

Held at University of Delhi, May 3-5, 1990

Edited by : Prof. C.P. Vashishtha

Published by

University of Delhi, 1991,

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No. 2:97p44, N90 N91

Acc. No. 55431

Pages xii, 350 p.

Size 27 cm.

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	2:97p44,	N90 N91
	(National	DOCUMENTATION AND NETWORKING Conference on-) (Delhi) (1990). Proceedings. Ed by C P Vashishtha.
	55431	

संकेत

(Tracing)

Proceedings, Documentation and Networking (National Conference on-) (Delhi) (1990). Conference proceedings, Documentation, Library science. Documentation, Library science. Library science. Documentation and Networking (National Conference on-) (Delhi) (1990) Vashishtha (C P), Ed.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1

(Class Index Entry - 1)

	PROCEEDINGS, DOCUMENTATION AND	
	NETWORKING (National Conference on-) (Delhi) (1990).	
	see the Number	For documents in this class and its Subdivisions, Classified Part of the catalogue under the Class 2:97p44,N90

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2

(Class Index Entry – 2)

	CONFERENCE PROCEEDINGS, DOCUMENTATION,	
	LIBRARY SCINECE.	
	Class Number	For documents 2:97p

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-3
(Class Index Entry - 3)

	DOCUMENTATION, LIBRARY SCIENCE.	
	Class Number	For documents 2:97

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-4
(Class Index Entry - 4)

	LIBRARY SCIENCE.	
	Class Number	For documents 2

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Author – Book Index Entry)

	DOCUMENTATION AND NETWORKING (National	
	Conference on-) (Delhi) (1990).	Proceedings. 2:97p44,N90 N91

ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - सहकारक
(Collaborator – Book Index Entry)

	VASHISHTHA (C P), Ed.	
	Conference on-) (Delhi) (1990) : Proceedings.	Documentation and Networking (National 2:97p44,N90 N91

टिप्पणी :

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का वरण एवं उपकल्पन पूर्व मुखपृष्ठ के समान ही किया गया है।
2. सहकारक निर्देशी प्रविष्टि के द्वितीय अनुछेद में नियमांक MD221 के अनुसार सम्मेलन का पूरा नाम लिखा गया है।
3. अन्य सभी सहायक प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमों के अनुसार बनाई गई है।

मुखपृष्ठ 3

(सम्मेलन व सह-सहकारक)

INDUSTRIAL MANAGEMENT

Proceedings of the International Conference on

Management Science

Conducted by

Institute of Management Science

London University (London) on January 6-8, 1959

Edited by

Dr. George Feeney

And

Bill Burger

PREGAMON PRESS

London • New York

1960

Publication Unit

University of Alberta, 1960

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	X8(A):8p1,N59	N60
Acc. No.	45135	
Size	22 x 15 cm.	
Pages	vii, 256	

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	X8(A):8p1,N59 N60	
	Conference on-) (London) (1959). George Feeney and Bill Burger. Management Science. 45135	MANAGEMENT SCIENCE (International Industrial management : Proceedings. Ed by Conducted by London University Institute of

संकेत
(Tracing)

Proceedings, Management Science (International Conference on--) (London) (1959).
Conference proceedings, Management, Industry.
Management, Industry.
Industry, Economics.
Economics.

Continued in the next card

संकेत का संतत पत्रक
(Continued Card of Tracing)

	X8(A):8p1,N59 N60	Continued
		Management Science (International Conference on-) (London) (1959). Feeney (George) and Burger (Bill), Ed. Burger (Bill) and Feeney (George), Ed.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1
(Class Index Entry - 1)

	PROCEEDINGS, MANAGEMENT SCIENCE (International	
	Conference on-) (London) (1959).	For documents in this class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number X8(A):8p1,N59

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2
(Class Index Entry - 2)

	CONFERENCE PROCEEDINGS, MANAGEMENT,	
	INDUSTRY.	For documents ..... Class Number X8(A):8p

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-3
(Class Index Entry - 3)

	MANAGEMENT, INDUSTRY.	
		For documents ..... Class Number X8(A):8

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-4
(Class Index Entry - 4)

	INDUSTRY, ECONOMICS.	
		For documents ..... Class Number X8

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-5
(Class Index Entry - 5)

	ECONOMICS.	
	Class Number	For documents X

लेखक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Author – Book Index Entry)

	MANAGEMENT SCIENCE (International Conference on-)	
	(London) (1959).	Industrial management. X8(A):8p1,N59 N60

सहकारक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - 1
(Collaborator – Book Index Entry - 1)

	FEENEY (George) and BURGER (Bill), Ed.	
	on-) (London) (1959) :	Management Science (International Conference Industrial management. X8(A):8p1,N59 N60

सहकारक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि- 2
(Collaborator – Book Index Entry - 2)

	BURGER (Bill) and FEENEY (George), Ed.	
	on-) (London) (1959) :	Management Science (International Conference Industrial management. X8(A):8p1,N59 N60

टिप्पणी :

1. मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक का वरण एवं उपकल्पन मुखपृष्ठ 32 की मुख्य प्रविष्टि के समान ही किया गया है। मुख्य प्रविष्टि में अभिटिप्पण नियमांक FQ41 एवं MB9 के अनुसार किया गया है। केटालांगिग प्रेक्टिस के अध्याय JE-1C1 पृष्ठ 245 पर इस प्रकार का उदाहरण दिया गया है।
2. सहकारक निर्देशी प्रविष्टियों में द्वितीय अनुच्छेद में नियमांक MK221 के अनुसार सम्मेलन का पूरा नाम लिखा गया है।
3. अन्य सभी प्रविष्टियां अध्याय 4 में वर्णित नियमों के अनुसार बनाई गई हैं।

टिप्पणी : इस इकाई में वर्णित तारांकित (*) नियम रंगनाथन कृत केटालागिंग प्रेक्टिस से लिये गये हैं।

5. अभ्यासार्थ मुखपृष्ठ (Title Pages for Practice)

मुखपृष्ठ 1

(सम्मेलन)

Proceedings of the

National Conference on Carbon

Held at University of Buffalo

Buffalo, New York

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Note :- The conference was held in 1958.

Call No.	E140p73, N58	N59	Acc. No.	4476
Pages	718		Size	9 inches

मुखपृष्ठ 2

(सम्मेलन)

PROCEEDINGS

of

The Conference on Problems of Child Behaviour

Held at

University of Jodhpur

From

9th to 12th April, 1982

Jodhpur, 1982

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	S1p2,N82 M2	Acc. No.	31983
Pages	347	Size	21.1 cm.
Copyright	1982		

मुखपृष्ठ 3

(सम्मेलन एवं दो सम्पादक)

ECONOMIC TRADE

Proceedings of the International Economic Conference

Held at Paris, March 3-9, 1997

Edited by

S. Agesthialingam

and

S.V. Shammugam

London

Academic Press, 1998

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	X:5p1,N97 N98	Acc. No.	251134
Pages	xi, 311	Size	25 cm.

मुखपृष्ठ 4

(सम्मेलन एवं एकल सम्पादक)

PROCEEDINGS

of the

INTERNATIONAL CONFERENCE ON TUBERCULOSIS

Held at New Delhi on 17-18 March, 1991

Edited by

Dr. V.A. Kamath

New Delhi,

Scientific Publishers,

1992

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

Call No.	L:42lpl, N91 N92	Pages	xiii, 705
Acc. No.	88114	Size	25 cm.

मुखपृष्ठ 5

(सम्मेलन, सह-सहकारक, ग्रन्थमाला एवं ग्रन्थमाला सम्पादक)

PROCEEDINGS

of the

International Conference on Education For Librarianship

Held at London

From 1-7 March, 1971

Edited by

Edward A. Parr

&

Eric J. Wain Wright

London

Clive Bingley

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें

H.T.P.	Monographs in library education, No. III. Edited by Norman Roberts.			
Call No.	T4:3(2)p1, N71	L4;1	Acc. No.	59921
Size	21 cm.		Pages xii,	217

6. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची (Bibliography)

1. गौतम (जे एन) एवं निरजंन सिंह: एडवान्सड केटालागिंग. आगरा, वाई के पब्लिशर्स, 1998.
2. सूद (एस पी): क्रियात्मक सूचीकरण-सी सी सी. जयपुर, राज पब्लिशिंग हाउस, 2016.
3. वर्मा (ए के): क्रियात्मक अनुवर्ग सूचीकरण. रायपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1999.
4. Krishan Kumar : An introduction to cataloguing practice. New Delhi, Vikas, 1996.
5. Noorul Hasan and others : Cataloguing practice. New Delhi, Gitanjali Publishing House, 1984.
6. Ranganathan (S R) : Classified catalogue code etc. Ed 5. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.
7. Ranganathan (S R) : Cataloguing practice. Ed 2. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.

इकाई 10

आख्यान्तर्गत शीर्षक (Title as Heading)

उद्देश्य (Objectives)

1. आख्यान्तर्गत शीर्षक के अन्तर्गत प्रविष्टि निर्मित करने की परिस्थितियों से परिचित कराना।
2. आख्यान्तर्गत शीर्षक निर्माण के नियमों की व्याख्या करना।
3. आख्यान्तर्गत शीर्षक के मुखपृष्ठों के क्रियात्मक सूचीकरण से परिचित कराना।

संरचना (Structure)

1. परिचय
2. शीर्षक का वरण
3. शीर्षक का उपकल्पन
4. सूचीकृत मुखपृष्ठ
5. अभ्यासार्थ मुखपृष्ठ
6. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची

1. परिचय (Introduction)

ग्रन्थालय में आने वाली अधिकतर पाठ्य-सामग्री के शीर्षक का निर्माण ग्रन्थ के लेखक के नाम के अन्तर्गत किया जाता है, जैसे व्यक्तिगत लेखक, समष्टि लेखक, कृत्रिम नामधारी लेखक आदि। लेखक की अनुपस्थिति में सहकारक के नाम के अन्तर्गत शीर्षक बनाया जाता है। परन्तु कुछ पाठ्य-सामग्री ऐसी होती है, जिसका आख्यान्तर्गत शीर्षक निर्माण किया जाता है। अनामक ग्रन्थ जिसमें न तो लेखक का नाम दिया जाता है और न ही किसी सहकारक का नाम दिया जाता है, इन्हें भी आख्या के अन्तर्गत प्रविष्ट किया जाता है। सी सी सी सूची संहिता में आख्यान्तर्गत शीर्षक निर्माण हेतु विशेष नियमों का प्रावधान किया गया है।

2. शीर्षक का वरण (Choice of Heading)

रंगनाथन ने आख्यान्तर्गत शीर्षकों के वरण हेतु निम्नलिखित नियमों का प्रावधान किया है -

नियमांक MD1 : शीर्षक का निर्माण निम्नलिखित में अग्रतम के अनुसार होगा, जिसे ग्रन्थ स्वीकार करता हो एवं सी सी सी सूची संहिता के अध्याय G में लेखक का निर्धारण किया गया है -

1. एकल व्यक्तिगत लेखक
2. व्यक्तिगत सहलेखक

3. समष्टि लेखक

4. व्यक्तिगत सहलेखक तथा समष्टि सहलेखक

5. समष्टि सहलेखक

6. कृत्रिम नामधारी लेखक अथवा दो या दो से अधिक कृत्रिम नामधारी लेखक

7. सहकारक

8. सह-सहकारक

9. ग्रन्थ की आख्या।

अर्थात् उपर्युक्त 1 से 8 में वर्णित लेखक या सहकारक न दिये गये हों तो ऐसी अवस्था में ग्रन्थ के आख्यान्तर्गत शीर्षक का निमार्ण किया जायेगा।

नियमांक MD61* : यदि ग्रन्थ सामान्य जीवन चरितकोश (General Biographical Dictionary) अथवा सामान्य ज्ञान अथवा सामान्य विज्ञान अथवा उपयोगी कलाओं अथवा समाज विज्ञान से सम्बन्धित विश्वकोश है अथवा यदि इस अध्याय (अध्याय MD) के किसी अनुच्छेद में वर्णित अन्य किन्हीं नियमों के अनुसार शीर्षक का वरण नहीं हो सके, तो आख्यान्तर्गत शीर्षक का निर्माण आख्या के प्रारम्भ में प्रयुक्त उपपद (Initial articles) अथवा आदरसूचक शब्दों को शीर्षक में प्रयुक्त करने से पूर्व हटाते हुये किया जायेगा। शीर्षक अनुच्छेद का निर्माण सी सी सी अध्याय ME के अनुच्छेदों के अनुसार किया जायेगा।

सार रूप में निम्नलिखित छह प्रकार के ग्रन्थों के आख्यान्तर्गत शीर्षक निर्माण किये जाते हैं -

1. सामान्य जीवन चरितकोश

2. सामान्य ज्ञान का विश्वकोश

3. सामान्य विज्ञान का विश्वकोश

4. उपयोगी कलाओं का विश्वकोश

5. समाज विज्ञान का विश्व कोश

6. अनामक लेखकों के ग्रन्थ।

उपर्युक्त नियमों के आधार पर चेम्बर्स बायोग्राफिकल डिक्शनरी, नेशनल बायोग्राफिकल डिक्शनरी, न्यू एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, एनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल सांइसेज, मेकग्राहिल एनसाइक्लोपीडिया ऑफ सांइस एण्ड टेक्नोलोजी आदि ग्रन्थ तथा अनामक लेखकों के ग्रन्थों (ऐसे ग्रन्थ जिनके लेखकों का नाम ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर न दिया गया हो) का आख्यान्तर्गत शीर्षक बनाया जायेगा। यहां यह बात विशेष रूप से ध्यान में रखनी चाहिए कि यदि किसी विशेष विषय का जीवनचरित कोश, जैसे-हू इज हू इन केमिस्ट्री, विज्ञान की किसी विशेष शाखा का विश्वकोश, जैसे-एनसाइक्लोपीडिया ऑफ फिजिक्स, समाज विज्ञान की किसी विशेष शाखा का विश्वकोश, जैसे एनसाइक्लोपीडिया ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन आदि हों तो उस अवस्था में आख्यान्तर्गत शीर्षक का निर्माण नहीं होगा बल्कि ग्रन्थ के सम्पादक अथवा संकलनकर्ता के नाम से शीर्षक बनाया जायेगा।

3. शीर्षक का उपकल्पन (Rendering of Heading)

शीर्षक के उपकल्पन से सम्बन्धित नियमांक निम्नलिखित हैं -

नियमांक ME1* : प्रथम वाक्यांश (Sentence) अर्थात् आख्या का उपकल्पन सी सी सी के अध्याय JF के अनुच्छेदों के अनुसार किया जायेगा।

नियमांक JF3 : आख्या को मुख्य प्रविष्टि के आख्या अनुच्छेद में अथवा शीर्षक अनुच्छेद में उपकल्पित करते समय उसके पूर्व लगे प्रारम्भिक उपपद (Initial articles) व आदरसूचक शब्दों को हटा दिया जायेगा तथा शेष शब्दों को मुखपृष्ठ पर अंकित क्रम में लिखा जायेगा।

उदाहरण 1:

The Untold Story एवं An autobiography or My Experiments with Truth नामक ग्रन्थों के प्रारम्भ में प्रयुक्त प्रारम्भिक उपपद The व An हटा दिये जायेंगे।

उदाहरण 2:

Shrimad Bhagvadgita, Holy Koran एवं Guru Granth Sahib नाम आख्याओं के प्रारम्भ में में प्रयुक्त आदरसूचक शब्द Shrimad, Holy एवं Guru को हटा दिया जायेगा।

नियमांक JF41* : जब आख्या का प्रयोग शीर्षक हेतु किया जाता है, तो उसके प्रथम दो शब्दों को प्रविष्टि पद के रूप में प्रयुक्त किया जायेगा।

नियमांक ED51 : शीर्षक में सहायक शब्दों के अतिरिक्त प्रविष्टि पद के शब्द बड़े अक्षरों (Block letters) में होंगे।

उपर्युक्त नियमों के अनुसार शीर्षक बनाते समय (चाहे मुख्य प्रविष्टि अथवा आख्या ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि) आख्या के प्रथम दो शब्दों को बड़े अक्षरों (Block letters) में तथा शेष शब्दों को सामान्य अक्षरों में लिखा जायेगा।

उदाहरणार्थ -

SCIENCE AND technology (Mc Graw –Hill encyclopedia of-)

नियमांक JF5 : आख्या को मुख्य प्रविष्टि के आख्या अनुच्छेद अथवा शीर्षक अनुच्छेद में उपकल्पित करते समय यदि उसके मध्य या अन्त में अनावश्यक शब्द लगे हों, तो उन्हें मध्य से तीन बिन्दुओं (... Three dots) द्वारा तथा अन्त से 'etc' शब्द द्वारा हटाया जाना चाहिए।

उदाहरणार्थ -

Cornwallis in Bengal : The administrative and judicial reforms of Lord Cornwallis in Bengal together with accounts of commercial expansion of the East India Company. 1786-1793, and of the foundation of Penang, 1786-1793 by Aspinall.

इस आख्या के अनावश्यक रूप से लम्बी होने के कारण आख्या अनुच्छेद में मात्र Cornwallis in Bengal etc. लिखा जायेगा।

यदि अनामक ग्रन्थ के लेखक का नाम ग्रन्थ के मुखपृष्ठ के अतिरिक्त किसी अन्य भाग अथवा बाह्य स्रोत से प्राप्त हो तो उसके नाम को निम्नलिखित नियमों के अनुसार आख्या के बाद अंकित किया जायेगा। सी सी सी में इसके लिये निम्नलिखित नियमों का प्रावधान किया गया -

नियमांक MD621 : यदि लेखक का नाम ग्रन्थ के किसी भी भाग से उपलब्ध हो तो उसे आख्या के बाद वृत्ताकार कोष्ठक में जोड़ा जायेगा तथा उसके पूर्व 'by' शब्द लिखा जायेगा।

उदाहरणार्थ -

LIFE OF Johnson (by CD Broad).

ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर लेखक का नाम नहीं दिया गया है। ग्रन्थ के अन्त में यह नाम उपलब्ध है।

नियमांक MD622 : यदि लेखक का नाम बाह्य स्रोतों से उपलब्ध हो तो उसे आख्या के बाद बड़े कोष्ठक में जोड़ा जायेगा तथा उसके पूर्व by शब्द लिखा जायेगा।

उदाहरणार्थ -

LIZZIE LEIGH [by E C Gaskell].

ग्रन्थ में लेखक का नाम न तो मुखपृष्ठ पर दिया गया है और न ही ग्रन्थ के किसी अन्य भाग में उपलब्ध है बल्कि बाह्य स्रोत से लिया गया है। इसलिए इसे बड़े कोष्ठक में by शब्द जोड़कर लिखा गया है।

4. सूचीकृत मुखपृष्ठ (Catalogued Title Pages)

मुखपृष्ठ 1

(सामान्य जीवन चरित्र कोश)

NEWNES BIOGRAPHICAL DICTIONARY

Compiled by

Robert Collison

Newnes : London

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनाएँ **:**

First published 1962 Second revised edition 1966

Call No. w1'N66 K6

Acc. No. 51121

Pages vii, 418

H.T.P. : Newnes Reference series. Edited by Robert Phillips. No. VI.

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	w1'N66	K6
	Comp by 6). 51121	BIOGRAPHICAL (Newnes-dictionary). Ed 2. Robert Collison. (Newnes reference series. Ed by Robert Phillips.

शृंखला प्रक्रिया

w1' N6

w Biography

w1 World, Biography

संकेत

(Tracing)

World, Biography. Biography. Collins (Robert), Comp. Biographical (Newnes-dictionary). Ed 2. Newnes reference series Phillips (Robert), Ed.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1

(Class Index Entry - 1)

	WORLD, BIOGRAPHY.	
	see the Number	For documents in this Class and its Subdivisions, Classified Part of the catalogue under the Class w1

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2

(Class Index Entry - 2)

	BIOGRAPHY.	
	Class Number	For documents ..... w

सहकारक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Collaborator – Book Index Entry)

	COLLINS (ROBERT), Comp.	
		Biographical (Newnes-dictionary). Ed 2. w1'N66 K6

आख्या - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Title– Book Index Entry)

	BIOGRAPHICAL (Newnes-dictionary). Ed 2.	
		w1'N66 K6

ग्रन्थमाला - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Series – Book Index Entry)

	NEWNES REFERENCE SERIES.	
	6	Biographical (Newnes-dictionary). Ed 2. w1'N66 K6

ग्रन्थमाला सम्पादक - नामान्तर निर्देशी प्रविष्टि
(Editor of Series – Cross Reference Index Entry)

	PHILLIPS (Robert), Ed.	
		See NEWNES REFERENCE SERIES.

टिप्पणी :

1. ग्रन्थ के सामान्य जीवन चरितकोश होने के कारण नियमानुसार आख्यान्तर्गत शीर्षक बनाया गया है तथा आख्या को नियमांक MD61* के अनुसार पुनः स्मरणमान के उपसूत्र (Canon of Recall Value) के अनुसार उपकल्पित करते हुये उसके प्रथम दो शब्द नियमांक JE4 के अनुसार बड़े अक्षरों (Block letters) में लिखे गये हैं।
2. अन्य सभी सहायक प्रविष्टियां, जैसे-वर्ग निर्देशी प्रविष्टियाँ, सहकारक निर्देशी प्रविष्टि, ग्रन्थमाला निर्देशी प्रविष्टि तथा ग्रन्थमाला सम्पादक निर्देशी प्रविष्टि पूर्व वर्णित नियमानुसार बनाई गई हैं। आख्या निर्देशी प्रविष्टि के द्वितीय अनुच्छेद में, 'By" शब्द के बाद मुख्य प्रविष्टि के शीर्षक में प्रयुक्त लेखक के नाम का प्रविष्टि पद लिखा जाता है, जो इस प्रविष्टि में लिखने की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार इस प्रविष्टि के मात्र दो ही भाग होंगे।

मुखपृष्ठ 2

(सामान्य विश्वकोश)

THE NEW COLUMBIA ENCYCLOPEDIA

Fourth Edition

Edited by : **William H. Harris** and **Judith S. Levey**

New York. London

Columbia University Press, 1975

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनाएँ :

Call No.	k1, N36	N75	Acc. No.	25613
Pages	1297		Size	27.8 cm.

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	k1, N36	N75
	William H	NEW COLUMBIA encyclopedia. Ed 4. Ed by Harris and Judith S Levey.
	25613	

शृंखला प्रक्रिया

k = Encyclopedia

k1 = World, Encyclopedia

k1, N36 = New Columbia encyclopedia

संकेत

(Tracing)

New Columbia encyclopedia. World, Encyclopedia. Encyclopedia, Generalia. Harris (William H) and Leavey (Judith S), Ed. Levey (Judith S) and Harris (Silliam H), Ed.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1

(Class Index Entry - 1)

	NEW COLOUMBIA encyclopedia.	
	see the Number	For documents in this Class and its Subdivisions, Classified Part of the catalogue under the Class k1, N36

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2

(Class Index Entry - 2)

	WORLD, ENCYCLOPEDIA.	
	Class Number	For documents k1

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-3

(Class Index Entry - 3)

	ENCYCLOPEDIA, GENERALIA.	
	Class Number	For documents ..... k

सहकारक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - 1

(Collaborator – Book Index Entry - 1)

	HARRIS (William H) and LEVEY (Judith H), Ed.	
		New Columbia encylopedia. Ed 4. k1,N36 N75

सहकारक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि - 2

(Collaborator – Book Index Entry - 2)

	LEVEY (Judith S) and HARRIS (William H), Ed.	
		New Columbia encylopedia. Ed 4. k1,N36 N75

टिप्पणी :

1. ग्रन्थ के सामान्य विश्वकोश होने के कारण नियमांक MD61* के अनुसार आख्यान्तर्गत शीर्षक बनाया गया है तथा नियमांक JF4 के अनुसार आख्या के प्रथम दो शब्द बड़े अक्षरों मे लिखें गये हैं।
2. अन्य सभी सहायक प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमानुसार बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ 3

(सामान्य विज्ञान विश्वकोश)

Van Nostrand's Scientific Encyclopedia

5th Edition

Edited by

Douglas M. Considine

New York

VanNostrand Reinhold, 1976

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनाएँ :

Call No.	Ak1,N3	N76	Acc. No.	996783	
Size	28.1 cm.		Pages	viii,	717

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	Ak1,N3	N76
	Ed 5. Ed 996783	SCIENTIFIC (Van Nostrand's-encyclopedia). by Douglas M Considine.

शृंखला प्रक्रिया

A = Natural Sciences

Ak = Encyclopedia, Natural Sciences

संकेत
(Tracing)

Encyclopedia, Natural sciences.
Natural sciences.

Considine (Douglas M), Ed.
Scientific (Van Nostrand's- encyclopedia).
Ed 5.

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1
(Class Index Entry - 1)

	ENCYCLOPEDIA, NATURAL SCIENCES.	
		For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number Ak

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2
(Class Index Entry - 2)

	NATURAL SCIENCES.	
		For documents ..... Class Number A

सहकारक - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Collaborator – Book Index Entry)

	CONSIDINE (Douglas M), Ed.	
		Scientific (Van Nostrand's – encyclopedia). Ed 5. Ak1,N3 N76

आख्या - ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Title – Book Index Entry)

	SCIENTIFIC (Van Nostrand's-encyclopedia). Ed 5.	
		Ak1,N3 N76

टिप्पणी :

1. ग्रन्थ के सामान्य विश्वकोश होने के कारण नियमांक MD61* के अनुसार शीर्षक बनाया गया है।
2. अन्य सभी सहायक प्रविष्टियां पूर्व वर्णित नियमानुसार बनाई गई हैं।

मुखपृष्ठ 4

(अनामक लेखक का ग्रन्थ)

ENGLISH – HINDI DICTIONARY

The most up to date and authoritative dictionary

Comprising full range of words and phrases

with their adequate and elaborate

meaning in Hindi

(Thoroughly revised and enlarge third edition)

HINDI PRACHARAK SANGH

VARANASI, 1983

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनाये :

Call No.	P111: 4k	152N83	Acc. No.	88133
Pages	1012 p.		Size	26.3 cm

मुख्य प्रविष्टि
(Main Entry)

	P111 : 4k	152N83
	88133	ENGLISH HINDI dictionary etc. Ed 3.

<u>शृंखला प्रक्रिया</u>

P111:4k	152N83
P	Linguistics.
P111	English, Linguistics.
P111:4	Meaning, English.
P111:4k	Dictionary, English.
P111:4k 152	Hindi, Dictionary, English

संकेत
(Tracing)

Hindi, Dictionary, English.
Dictionary, English.
Meaning, English.
English, Linguistics.
Linguistics.

English Hindi dictionary etc. <u>Ed 3.</u>

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1
(Class Index Entry - 1)

	HINDI, DICTIONARY, ENGLISH.	
		For English-Hindi Dictionary of this kind, see the Classified Part of the catalogue under the Call Number begning with P111:4k 152

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-2
(Class Index Entry - 2)

	DICTIONARY, ENGLISH.	
	Class Number	For documents P111:4k

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-3
(Class Index Entry - 3)

	MEANING, ENGLISH.	
	Class Number	For documents P111:4

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-4
(Class Index Entry – 4)

	ENGLISH, LINGUISTICS.	
	Class Number	For documents P111

वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-5
(Class Index Entry - 5)

	LINGUISTICS.	
	Class Number	For documents ..... P

आख्या-ग्रन्थ निर्देशी प्रविष्टि
(Title – Book Index Entry)

	ENGLISH HINDI dictionary etc. Ed 3.	
		P111:4k 152N83

टिप्पणी :

1. अनामक ग्रन्थ होने के कारण नियमांक MD61* के अनुसार शीर्षक बनाया गया है तथा नियमांक JF4 के अनुसार आख्या के प्रथम दो शब्द बड़े अक्षरों (Capital Letters) में लिखे गये हैं।
2. वर्ग निर्देशी प्रविष्टि-1 के द्वितीय अनुच्छेद में निर्देशक शब्द नियमांक KF25* के अनुसार लिखें गये हैं।

टिप्पणी : इस इकाई में वर्णित तारांकित (*) नियम रंगनाथन कृत केटालागिंग प्रेक्टिस से लिये गये हैं।

5. अभ्यासार्थ मुखपृष्ठ (Title Pages for Practice)

मुखपृष्ठ 1

(सामान्य जीवन चरित कोश)

Chamber's Biographical Dictionary

Edited by

J.O. Thorne, M.A.

Revised Edition

W & R Chambers Ltd.

11, Thistle Street, Edinburgh

6, Dean Street, London, W. 1

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनाएँ :

Call No.	w1 K8	Acc. No.	54451
Pages	XII, 717 p.	Size	28.7 cm.

मुखपृष्ठ 2

(सामान्य जीवन चरित कोश)

CONCISE DICTIONARY OF AMERICAN BIOGRAPHY

Edited by

J.C.E. Hopkins

NEW YORK

CHARLES SCRIBNER'S,

1984

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें :

Call No.	w73'N84	N84	Acc. No.	99191
Pages	xii, 793		Size	23.9 cm.

मुखपृष्ठ 3

(सामान्य ज्ञान कोश)

THE NEW ENCYCLOPAEDIA BRITANNICA

Philip W. Goetz

Editor-in-Chief

Fifteenth Edition

CHICAGO,

ENCYCLOPAEDIA BRITANNICA,

1974

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें :

Call No.	k1,L	N74
Acc. No.	552233	
Size	28 cm.	

मुखपृष्ठ 4

(सामान्य विज्ञान विश्वकोश)

MCGRAW-HILL CONCISE ENCYCLOPEDIA OF

SCIENCE AND TECHNOLOGY

Sybil P. Parker

New York,

McGraw-Hill, 1984

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनाएँ :

Call No.	Ak	N84	Acc. No.	15211
Pages	2065		Size	26.7 cm.

मुखपृष्ठ 5

(सामान्य समाज विज्ञान विश्वकोश)

INTERNATIONAL ENCYCLOPEDIA OF THE SOCIAL SCIENCES

Editor : David L. Sills

New York,
The McMillan Co.
& The Free Press,
1972

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनाएँ :

Call No. SZk N72

Acc. No. 15001

Size 25.8 cm.

मुखपृष्ठ 6

(सामान्य ज्ञान का विश्वकोश)

THE LEZION ENCYCLOPEDIA OF SCIENCE

Edited by
Barry Thomes

LEXICON PUBLICATIONS, INC.

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें :

Call No. Ak73, N82 M4

Acc. No. 889122

Pages 888 p.

Size 28.3 cm.

मुखपृष्ठ 7

(अनामक लेखक का ग्रन्थ)

SCIENTIFIC AND LEARNED SOCIETIES OF GREAT BRITIAN

(15th Edition)

LONDON,

GEORGE ALLEN AND UNWIN Ltd.

2014

ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सूचनायें :

Call No.	A.56, d	P14
Acc. No.	883281	
Pages	225 p.	
Size	21 x 14 cm.	

6. विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची (Bibliography)

1. गौतम (जे एन) एवं निरजंन सिंह: एडवान्सड केटालागिंग. आगरा, वाई के पब्लिशर्स, 1998.
2. सूद (एस पी): क्रियात्मक सूचीकरण-सी सी सी. जयपुर, राज पब्लिशिंग हाउस, 2016.
3. वर्मा (ए के): क्रियात्मक अनुवर्ग सूचीकरण. रायपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1999.
4. Krishan Kumar : An introduction to cataloguing practice. New Delhi, Vikas, 1996.
5. Ranganathan (S R) : Classified catalogue code etc. Ed 5. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.
6. Ranganathan (S R) : Cataloguing practice. Ed 2. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.